सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 216, नई दिल्ली, सोमवार 13 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आपकी कल्पना आपके पंख हैं, जिनके सहारे आप असंभव को भी पार कर सकते हैं।

03 सफदरजंग अस्पताल में विश्व धर्मशाला एवं उपशामक देखभाल दिवस 2025 मनाया

06 आजकल की विवाह -शादियाँ में दिखावा...?

08 राउरकेला की अनदेखी पर फूटा जनाक्रोश: शहर के खोए गौरव को पुनः स्थापित करने की जोरदार मांग

दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग क्यों दिल्ली की जनता से सुरक्षित समयानुसार सार्वजनिक सवारी बस सेवा छिनने का घिनौना कृत्य कर रहे हैं ?

संजय बाटला

- क्या दिल्ली की सड़को पर चलने वाले नागरिकों की सुरक्षा और सुखद विश्वसनीय सवारी सेवा उपलब्ध करवाने से ज्यादा जरूरी है खर्चों में कटौती और निगम की बेशकिमती जगह (संपत्ति) पर कब्जा

- सरकार और सरकारी विभाग स्वयं जब निगम की जमीन/ संपति को अवैध रूप से कब्जाने का काम कर रहे हैं तो जनता को सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करने से कैसे रोक सकते हैं ? कही जनता से भी सरकारी जमीन/ संपत्ति पर कब्जे में छुपे रूप में सरकार और सरकारी विभाग तो शामिल नहीं ?

दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग की गलत नीतियां बनी दिल्ली वालों की खून की प्यासी

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन निगम में कार्य कर रहे कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी पिछले 15 सालों से परेशान है और अपनी परेशानी की मुक्ति पाने के लिए लगातार 5 दिन से दिल्ली में जीते सभी विधायकों को पत्र व्यवहार कर रहे हैं। दिल्ली में आज की तारीख़ में दिल्ली परिवहन निगम की नाम पर अपनी खुद की ऐक भी सरकारी बस उपलब्ध नहीं है, कारण दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग ने गलत नीति का प्रयोग करने दिल्ली परिवहन निगम का ना तो बसे खरीदने दी और ना ही खरीद कर दी।

आज दिल्ली परिवहन निगम की स्थिति दयनीय हो चुकी है को की स्वयं पूर्व में रही आम आदमी पार्टी की सरकार और परिवहन विभाग की मिली भगत का नतीजा है। दिल्ली की पूर्व में रहे सरकार और परिवहन विभाग दिल्ली परिवहन निगम कि बेशकीमती संपत्ति को हथियाने की फिराक मे थे और उसने ऐसी नीतियां बनाई की जनता भी असुरक्षित, सरकारी खर्चों में भी कमी ओर निगम को घाटे में दिखाने का कृत्य।

आज दिल्ली परिवहन निगम जिसको बनाया ही सिर्फ जनता को सुरक्षित समयानुसार सुखद विश्वसनीय सार्वजनिक सवारी बस सेवा उपलब्ध करवाने के लिए गया था के पास अपनी एक भी बास उपलब्ध नहीं है।

जनता, उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय को गुमराह करने के उद्देश्य से प्राइवेट कंपनियों के नाम पर पंजीकृत बसों पर दिल्ली परिवहन निगम के नाम और लोगो लगाकर दिखाया जा रहा है। अगर इस बात पर किसी को भी शक/ भ्रम हो तो आरटीआई लगाकर परिवहन विभाग के मुख्य कार्यालय में स्थित डीटीओ कार्यालय जहां भरी वाहन पंजीकृत किए जाते हैं से जब चाहे प्राप्त कर सकते हैं।

दिल्ली परिवहन निगम के पास जब अपनी

निजी बस ही उपलब्ध नही है तो वह किस आधार पर दिल्ली कि सड़को पर चलने वाली जनता को सुखद, सुरक्षित, विश्वसनीय सार्वजनिक सवारी बस सेवा उपलब्ध करवा सकता हैं ?

मामले को जल्द से जल्द संज्ञान में लेकर इस समस्या का समाधान करें कि अंबेडकर नगर डिपो में कार्यरत चालक जिसका टोकन नंबर 115816 है ने बताया की इस डिपो में जितनी भी बसे पीएमआई कम्पनी की है और जनता को सेवा देने के लिए उपलब्ध करवाई जा रही है उन के प्रति बसों को चलाने वाले चालकों ने बताया है की इन इलेक्ट्रिक व्हीकल में काफी कमियां है जिनमें से प्रमुख हैं की जिसमें ब्रेक लगाने पर भी ब्रेक समयानुसार नहीं लगते हैं जिस कारण से कभी भी हादसे का शिकार हो जाती है। साथ ही चालकों ने अपने परेशानी बताई की अगर इस हालत में हम इन बसों को चलाने से मना करते हैं तो कम्पनी के अधिकारी उनको घर वापसी या डिपो बदलने की धमकी देते है, उन्होंने अपने बाट रखते हुए बताया जबकि दिल्ली परिवहन निगम की तरफ से ऐसा कोई भी नोटिस जारी नहीं किया गया जिसमें चालक को घर वापसी भेज दिया जाए।

चालकों ने जो एक प्रमुख बात बताई वह यह की निजी कंपनी के अधिकारी अपने निजी कॉन्टैक्ट कर्मचारी रखकर इन बसों को सड़को पर उतार / चलवा रहे हैं। उन्होंने बताया कि डीटीसी के चालक अनुभवी ड्राइवर है वह इन गाड़ियों को रोड पर नहीं उतारना चाहते लेकिन वहां उपलब्ध कम्पनी के अधिकारी की तरफ से दबाव बनाया जाता है और नौकरी से टर्मिनेट करने तक की धमकी दी जा रही है। और उनका खुला आरोप है की इनके साथ डिपो प्रबंधक अंबेडकर नगर भी मिले हुए हैं।

चालक टोकन नंबर 115816 ने कहा मेरा नंद नगरी डिपो से यहां ट्रांसफर किया गया है और मैं यहां अंबेडकर नगर डिपो में ड्यूटी नहीं कर पा रहा हूं क्योंकि मेरे द्वारा बस की कमियां बताने पर वहां उपलब्ध अधिकारी मेरे को ड्यूटी हो देना पसंद नहीं कर रहे। चालक 115816 ने बताया कि उसके घर में दो छोटे-छोटे बच्चे हैं और 862 रुपए प्रतिदिन की मिलने वाली सैलरी के हिसाब से गुजरा नहीं कर पा रहे हैं फिर भी वह ड्यूटी करने की कोशिश करते हैं तो उन्हें परेशान किया जाता है यह सब डीटीसी डिपो प्रबंधक अंबेडकर नगर की मिली जुली भगत से हो रहा है पिछली सरकार के कार्यकाल में हम जैसे तैसे अपनी डबल ड्यूटी कर के गुजारा कर रहे थे अब 862 रुपए में गुजारा करना बड़ा मुश्किल हो रहा है दिल्ली सरकार शायद भूल गई है कि चालक भी एक भारतीय सिपाही है जो बसों को उन सड़कों पर जो चलने के लायक भी नहीं है पर सुरक्षित ढंग से चला कर जनता को सेवा दे रहा है।

ट्रैक्टर ट्रॉलियों के व्यावसायिक दुरुपयोग के खिलाफ राष्ट्रव्यापी आंदोलन: हनुमानगढ़, टिब्बी और करनाल की हड़तालें परिवहन उद्योग की पीड़ा का प्रतीक – डॉ. राजकुमार यादव

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली, उफ्तत्सा "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा" (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने आज एक जोरदार अपील जारी कर कहा कि ट्रैक्टर ट्रॉलियों के अनियमित व्यावसायिक उपयोग के खिलाफ चल रही लड़ाई अब राष्ट्रव्यापी रूप ले रही है। हनुमानगढ़ और टिब्बी (राजस्थान) में हाल ही में ट्रक ऑपरेटरों और ट्रैक्टर यूनियनों के बीच चले विवाद तथा धरने, साथ ही करनाल, केथल, जींद (हरियाणा) जैसे क्षेत्रों में परिवहन व्यवसायियों की बढ़ती असंतोष, इस मुद्दे की गंभीरता को उजागर करते हैं। ये घटनाएं न केवल राजस्व हानि का सबूत हैं, बल्कि लाखों ट्रक ड्राइवरों और ऑपरेटरों की आजीविका पर पड़ रहे संकट को सीधे तौर पर दर्शाती हैं। डॉ. यादव ने सरकार से मांग की कि इस समस्या पर तत्काल राष्ट्रीय स्तर पर नीति बनाई जाए, अन्यथा और बड़े आंदोलन की तैयारी से इनकार नहीं किया जा सकता1

डॉ. यादव ने बयान में कहा, "हनुमानगढ़, टिब्बी (राजस्थान) करनाल, कैथल और जींद (हरियाणा) में चल रही या हाल ही में समाप्त हुई हड़तालें और धरने ट्रैक्टर ट्रॉलियों के दुरुपयोग का सीधा परिणाम हैं। ये ट्रॉलियां सस्ती दरों पर माल ढुलाई कर ट्रक व्यवसाय को बर्बाद कर रही हैं, जिससे परिवहन व्यवसायी सड़कों पर उतरने को मजबूर हैं। यह काल बन चुका है – सरकारी राजस्व पर चोट और लाखों परिवारों की रोजी-रोटी पर संकट।"

प्रभावशाली तथ्य और घटनाक्रम की व्याख्या के तहत सरकारी सब्सिडी में लिए गए ट्रैक्टर ट्रॉलियों को बिना टोल टैक्स, परमिट, पी यु सी, कम रोड़ टैक्स सहित अन्य कई लाभ के साथ व्यावसायिक उपयोग मोटर व्हीकल एक्ट का खुले तौर पर उल्लंघन है, जो ट्रक ट्रांसपोर्टर्स को अनुचित प्रतिस्पर्धा का शिकार बना रहा है। निम्नलिखित तथ्यों से इन क्षेत्रों की हड़तालों को जोड़कर समस्या की गहराई समझी जा सकती है:

हनुमानगढ़ और टिब्बी में विवाद और धरना: हाल ही में टिब्बी (हनुमानगढ़ जिला) में ट्रक ऑपरेटरों और ट्रैक्टर ट्रॉली यूनियनों के बीच तीव्र विवाद उभरा, जहां दोनों पक्ष अपनी मांगों को लेकर धान मंडी में धरने पर बैठे। ट्रक ऑपरेटरों का आरोप था कि ट्रैक्टर ट्रॉलियां

अवैध रूप से माल ढुलाई कर उनके कारोबार को नुकसान पहुंचा रही हैं। प्रशासन की मध्यस्थता में और अन्य अधिकारियों की मौजूदगी में देर रात वार्ता हुई, जिससे समझौता हुआ और विवाद समाप्त हुआ। यह घटना ट्रैक्टर ट्रॉलियों के दुरुपयोग से उत्पन्न तनाव का स्पष्ट उदाहरण है, जिसने स्थानीय परिवहन को ठप कर दिया और किसानों को भी प्रभावित किया। अनुमानित रूप से, ऐसे विवादों से प्रतिदिन लाखों रुपए का कारोबार प्रभावित होता है, और ट्रक ऑपरेटरों का 30-40% व्यवसाय घट जाता है।

करनाल में परिवहन असंतोष का उभार हुआ जिसमे करनाल क्षेत्र, जो हरियाणा का प्रमुख परिवहन हब है, में ट्रक ड्राइवरों और ट्रांसपोर्टर्स के बीच बढ़ते असंतोष को देखते हुए, यह हड़तालें एक चेन रिएक्शन का हिस्सा बन सकती हैं। हालांकि हालिया रिपोर्ट्स में करनाल में कोई सक्रिय हड़ताल नहीं दिखी, लेकिन 2024 की पुरानी ट्रकर्स स्ट्राइक (नए हिट-एंड-रन कानून के खिलाफ) जैसी घटनाएं दर्शाती हैं कि ट्रैक्टर ट्रॉलियों का मुद्दा यहां भी गहरा है। करनाल में ट्रक ड्राइवरों की संख्या हजारों में है, और ट्रैक्टर ट्रॉलियों से अनुचित प्रतिस्पर्धा से उनका कारोबार 30-40% तक प्रभावित हो रहा है, जो राजस्व हानि में योगदान देता है। यदि यह मुद्दा नहीं सुलझा, तो करनाल हनुमानगढ़-टिब्बी जैसे आंदोलनों का केंद्र बन सकता है।

राष्ट्रीय प्रभाव और आर्थिक नुकसान के तहत इन क्षेत्रों की घटनाओं को जोड़कर देखें तो ट्रैक्टर ट्रॉलियों का दुरुपयोग सरकारी राजस्व को प्रति वर्ष प्रत्यक्ष रूप से हजारों करोड़ का नुकसान पहुंचा रहा है। हनुमानगढ़-टिब्बी विवाद में धरने से स्थानीय अर्थव्यवस्था ठप हुई, जबकि करनाल जैसे क्षेत्रों में संभावित हड़तालें हाईवे ट्रैफिक को प्रभावित कर सकती हैं। कुल मिलाकर, ट्रक उद्योग में 40-50% कारोबार घटा है, और दुर्घटनाओं का खतरा दोगुना हो गया है। हाल की रिपोर्ट्स में, ऐसे विवादों से जुड़े लाखों ड्राइवर बेरोजगारी की कगार पर हैं, और सात करोड़ परिवार प्रभावित हो रहे हैं।

घटनाक्रम की क्रमबद्ध व्याख्या

सितंबर-अक्टूबर 2025 मे हनुमानगढ़ और टिब्बी में ट्रक-ट्रैक्टर विवाद शुरू, धान मंडी में धरना।

11 अक्टूबर 2025 को प्रशासनिक वार्ता से समझौता, लेकिन मुद्दा जड़ से नहीं सुलझा।

करनाल संदर्भ मे पुरानी स्ट्राइक (2024) से सीखते हुए, 2025 में असंतोष बढ़ा, जो ट्रैक्टर मुद्दे से जुड़ा।

राष्ट्रीय स्तर: पर ये घटनाएं ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी के आंदोलन को मजबूती दे रही हैं, जहां सरकार से ट्रैक्टर ट्रॉलियों पर पूर्ण प्रतिबंध की मांग है।

डॉ. यादव ने कहा, "हनुमानगढ़, टिब्बी और करनाल की ये हड़तालें एक संकेत हैं – यदि सरकार नहीं जागी, तो पूरे देश में ट्रक बंद होंगे। हम राहत पैकेज और सख्त नियमों की मांग करते हैं।"

उफ्तत्सा "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा" (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के बारे में: ट्रक ऑपरेटरों और परिवहन व्यवसायियों के हितों की रक्षा करने वाला राष्ट्रव्यापी संगठन, लाखों सदस्यों का प्रतिनिधित्व करता है।

"DTC बचाओ अभियान" सातवा दिन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली:- पंकज शर्मा

"DTC बचाओ अभियान" के सातवें दिन रविवार होने के कारण कर्मचारी विधायकों तक नहीं पहुंच सके, इस संबंध में दिल्ली परिवहन निगम से जुड़ी डी टी सी इंप्लाईज कांग्रेस (इंटक) यूनियन के अध्यक्ष एवं पदाधिकारीयों को लेकर दिल्ली परिवहन निगम के MD से पिछले हफ्ते मुलाकात की तथा कर्मचारियों की समस्याओं से अवगत कराया, DTC employee Congress (intuc) के अध्यक्ष मनोज कुमार यादव ने DTC के MD के सामने कर्मचारियों की समस्याएं रखी जिनमें-

1. DTC कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को यूनियन और आधिकारियों के द्वारा बनाई गई पॉलिसी के अनुसार पक्का किया जाए।

2. जब तक स्थाई ना हो तब तक समान काम समान वेतन दिया जाए,

3. 14-15 सालों से कार्यरत मृतक आश्रितों को पक्का किया जाए,

4. दिल्ली परिवहन निगम के बेड़े में 2010 से आज तक कोई भी बसें नहीं लाई गई, अपनी खुद की 8000 बसें लाई जाए,

5. सभी कर्मचारियों को मेडिकल स्कीम की सुविधा का लाभ दिया जाए,

6. इंटर स्टेट बसों की पुनः शुरुआत की जाए,

7. सफाई कर्मचारियों को 4 घंटे की बजाय 8 घंटे की नौकरी दी जाए तथा उन्हें दिल्ली परिवहन निगम द्वारा परिचय पत्र भी दिया जाए, आदि 15

सूत्रीय मांगों को लेकर सकारात्मक मुलाकात हुई

सरकार बनने के लगभग 9 महीने बाद भी DTC के कर्मचारियों की समस्या का समाधान ना होने पर 14–15 सालों से कार्य कर रहे सभी कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों में काफ़ी रोष है,

यूनियन के पदाधिकारी मनोज कुमार यादव ने यह कहा कि बड़े दुर्भाग्य की बात है सरकार कांटेक्ट कर्मचारियों को समान काम का समान वेतन नहीं दे पा रही है, दिल्ली जैसे शहर में आज मात्र 862 रुपए में कर्मचारी अपना घर नहीं चला पा रहे है, इसलिए उन्हें समान काम समान वेतन व जॉब सिक्योरिटी अवश्य मिलना चाहिए, ऐसे में अगर दिल्ली को चलाने वाली DTC, इलेक्ट्रिक व क्लस्टर बसों में कार्य कर रहे कर्मचारी : डी० टी० सी० इंप्लॉईज कांग्रेस (इंटक), और अन्य बड़े संगठन सभी एक साथ अपनी मांगों को लेकर धरने पर बैठ जाएंगे तो दिल्ली की अर्थव्यवस्था को चलाने वाली मुख्य बिंदु दिल्ली परिवहन निगम एकदम से ठप हो जाएगी, और दिल्ली के लाखो लोगों पर इसका प्रभाव पड़ेगा।

DTC employee Congress (intuc)

1. अध्यक्ष: मनोज कुमार यादव

दिल्ली सरकार आटो वालों एवं सभी श्रमिकों को आवास, शिक्षा, इलाज योजना आगामी एक वर्ष में सुनिश्चित करेगी : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल एक राजनीतिक नटवरलाल हैं जो समय अनुसार रंग बदलने एवं शब्दों की बाज़ीगरी के माहिर हैं। सचदेवा ने कहा है कि सत्ता के दस साल अरविंद केजरीवाल ने आटो रिक्शा चालक हों या अन्य दिहाड़ी मजदूरी करने वाले लोग हों किसी को भी बेहतर जीवन देने के लिए कुछ नहीं किया और आज जब सत्ता से बाहर हैं तो उनके आगे घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है कि भाजपा की रेखा गुप्ता सरकार दिल्ली के आटो रिक्शा चालक हों अन्य दिहाड़ी मजदूर सभी का जीवन

स्तर सुधारने के साथ ही उनकी कार्य परिस्थितियां सुधारने को कटिबद्ध है।

भाजपा की रेखा गुप्ता सरकार आटो चालकों को ही नहीं समाज के सभी वर्गों से किए चुनाव वादे पूरे करने की योजनाएं बना रही है और हम आटो वालों एवं सभी श्रमिकों को बेहतर आवास, बेहतर शिक्षा, बेहतर इलाज योजना आगामी एक वर्ष में सुनिश्चित करेगी।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063

कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

मृत्यु, एकमात्र वास्तविकता

यह संसार एक मरघट, एक शमशान घाट है। यहाँ हर मनुष्य अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा है और हर मनुष्य, एक ना एक दिन इस मरघट में चैन कि नींद सोयेगा। और चाहे अनचाहे आनंद से सोयेगा। अभी उसकी बारी आयी है तो कुछ क्षण बाद हमारी बारी भी आयेगी।

जो मनुष्य इस संसार में जन्मा है उसका एक दिन अन्त निश्चित है। यहाँ मृत्यु के अतिरिक्त और कुछ भी नही घटता है। यहाँ इस संसार में प्रतिदिन मृत्यु घटती है। इस संसार में बाकी सभी चीज झूठ है। केवल मृत्यु ही एक वास्तविक घटना है। एक सत्यता है।

यहाँ इस संसार में और किसी चीज का मूल्य नही है। सारी घटनाओं का कोई महत्व नही है। क्योकि मृत्यु सारी घटनाओं को धो डालती है। और अंत में मृत्यु की ही लकीर बचती है। बाकी तो सब मिट जाती है।

मृत्यु हमें सिखाती है कि समय सीमित है, और इस सीमित समय में हमें प्रेम, करुणा, और सत्य के साथ जीना है। क्योंकि जब अंत आएगा, केवल यही सत्य हमारे साथ रहेगा—मृत्यु, जो संसार की एकमात्र वास्तविकता है।

!!!Sleep is the Mortal Enemy of Success, Wake Up Before Death Embraces Us !!!

आत्मरक्षा में धर्मयुद्ध करना मनुष्य का परम धर्म है

अहोई अष्टमी व्रत आज

अहोई अष्टमी का व्रत कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि पर रखा जाता है। इस दिन महिलाएं संतान की दीर्घायु के लिए निर्जला उपवास रखती हैं। साथ ही बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हुए महिलाएं द्वारा अहोई माता का पूजन किया जाता है, जिसके प्रभाव से संतान सुख और उसके उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद मिलता है। इसके अलावा व्रत में तारों का विशेष महत्व है। मान्यता है कि जब आसमान में तारे दिखाई देने लगते हैं, तब उन्हें अर्घ्य दिया जाता है। फिर महिलाएं अपने व्रत का पारण करती हैं। ऐसा करने पर अहोई माता प्रसन्न होती हैं और सभी मनोकामनाएं पूरी करती हैं।

अहोई अष्टमी तिथि

==========

पंचांग के मुताबिक अहोई अष्टमी कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को पड़ रही है। इस बार यह तिथि 13 अक्तूबर 2025 को देर रात्रि 12:24 मिनट से प्रारंभ होगी। इसका समापन 14 अक्तूबर 2025 को सुबह 11:09 मिनट पर है। ऐसे में अहोई अष्टमी का व्रत 13 अक्तूबर को रखा जाएगा।

पूजा शुभ मुहूर्त

==========

* अहोई अष्टमी के दिन पूजा का शुभ समय शाम 5:53 मिनट से प्रारंभ होगा और शाम 7 बजकर 8 मिनट तक बना रहेगा।
* अहोई अष्टमी पर तारों को अर्घ्य देने का समय शाम 6 बजकर 17 मिनट तक है।

पूजा विधि

==========

* अहोई के दिन सुबह ही स्नान कर लें और माताएं कोरे वस्त्रों को धारण करें।
* इसके बाद घर में गंगाजल का छिड़काव करें और दीवार पर कुमकुम से अहोई माता की तस्वीर बना लें।
* फिर आप अहोई माता के समक्ष दीपक जलाकर थाली में कुछ फूल, फल और मिठाई रख लें।
* इस दौरान आप दान की चीजें और पूजन की सामग्री को भी रख लें।
* अब माता के सामने घी का दीपक जलाएं और बच्चों की लंबी उम्र और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करें।
* इसके बाद शाम को तारे निकलने के बाद उन्हें अर्घ्य दें।
* फिर घर में बने पकवानों का भोग माता को अर्पित करें।
* अंत में बड़ो का आशीर्वाद लेकर व्रत का पारण करें।

अहोई अष्टमी व्रत का क्या महत्व है?

==========

अहोई अष्टमी का व्रत मातृत्व प्रेम और संतान की मंगल कामना का प्रतीक है। अहोई अष्टमी के दिन माताएं अपनी संतान की सुख-समृद्धि, अच्छी सेहत, उज्ज्वल भविष्य और लंबी उम्र के लिए पूरे दिन निर्जला व्रत रखती हैं। इस व्रत में जल तक ग्रहण नहीं किया जाता है, जिससे इसकी तपस्या और भी विशेष मानी जाती है।

अहोई अष्टमी का व्रत कैसे तोड़ा जाता है?

==========

अहोई अष्टमी व्रत का पारण तारोदय होने पर तारों का दर्शन करके होता है। संध्या काल में व्रती माताएं अहोई अष्टमी माता की पूजा कर तारों का दर्शन करके उन्हें जल का अर्घ्य देती हैं, तभी व्रत का महत्व पूरा माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, अहोई अष्टमी व्रत पारण में तारों को करवे से अर्घ्य दिया जाता है।

पित्त बढ़ने पर क्या औषधि ले सकते हैं कि दो-तीन दिनों में राहत लगे?

पित्त दोष का असंतुलन अक्सर हमारे तेज़, तैलीय और मसालेदार खानपान की वजह से होता है। पाचन बिगड़ता है, जलन, खट्टी डकारें और चिड़चिड़ापन जैसी समस्याएं शुरू हो जाती हैं। यदि सही समय पर पित्त दोष को संतुलित न किया जाए, तो यह आगे चलकर अल्सर, लिवर की बीमारी और मानसिक अशांति तक बढ़ सकता है।

पित्त बढ़ने के लक्षण

1. सीने या पेट में जलन
2. खट्टी डकारें
3. अत्यधिक पसीना
4. मुँह का स्वाद कड़वा
5. चिड़चिड़ापन व गुस्सा
6. आँखों में जलन
7. बार-बार प्यास लगना
8. पतले दस्त या गर्म मल

दो-तीन दिन में पित्त शांत करने वाली असरकारी आयुर्वेदिक औषधियां

1. अविपत्तिकर चूर्ण (Avipattikar Churna) डोज़ 3–5 ग्राम चूर्ण, भोजन के बाद गुनगुने पानी से

लाभ एसिडिटी, जलन, कब्ज और पाचन दोष में तुरंत राहत

2. कामदुधा रस (Kamdudha Ras) – मुक्तायुक्त डोज़ 125–250 mg दिन में दो बार ठंडे पानी या गुलाब जल से

लाभ जलन, दस्त, पेशाब की जलन और मानसिक अशांति में लाभकारी

3. सूतशेखर रस (Sutshekhar Ras) डोज़ 125–250 mg दिन में 2 बार, शीतल जल के साथ

लाभ वमन, अम्लपित्त, घबराहट में तुरंत राहत

4. शंख भस्म (Shankh Bhasma) डोज़ 250 mg मधु या घी के साथ दिन में दो बार

लाभ गैस, जलन और अम्लपित्त के लिए कारगर

5. चंदनादि वटी (Chandanadi Vati) डोज़ 1–1 गोली दिन में दो बार ठंडे पानी के साथ

लाभ पित्तजन्य जलन, पेशाब की दिक्कत और शरीर की गर्मी में राहत

6. गिलोय सत्व (Giloy Satva) डोज़ 250 mg शहद के साथ

लाभ प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाए, पाचन सुधारे और पित्त को शांत करे

कुछ घरेलू उपाय (Quick Home Remedies)

1. धनिया पानी रातभर 1 चम्मच धनिया 1 गिलास पानी में भिगोकर सुबह छानकर पी जाएं

2. सौंफ-गुड़ मिश्रण खाना खाने के बाद 1 चुटकी सौंफ + थोड़ा गुड़

3. आंवला जूस सुबह खाली पेट 15 ml आंवला रस, थोड़ा पानी मिलाकर

4. गुलकंदः सुबह-शाम 1 चम्मच ठंडे दूध के साथ

किन चीजों से बचें?

1. मिर्च, मसालेदार और तला हुआ खाना
2. चाय, कॉफी, शराब
3. अत्यधिक देर रात तक जागना
4. दिन में सोना
5. मानसिक तनाव

कितने दिनों में असर दिखेगा? लक्षण राहत का अनुमानित समयः-

1. हल्का पित्त असंतुलन 1–2 दिन
2. मध्यम लक्षण 3–5 दिन
3. पुराना पित्त दोष 7–10 दिन या अधिक

नियमित औषधि, उचित आहार और तनावमुक्त जीवनशैली से ही स्थायी लाभ संभव है।

आँखें - ईश्वर का सबसे अनमोल तोहफ़ा!

"दृष्टि है, तो सृष्टि है!" आँखों के बिना दुनिया की कल्पना करना नामुमकिन है। इसलिए अपनी अनमोल आँखों का ध्यान रखना बेहद ज़रूरी है। आज लगातार मोबाइल फ़ोन, लैपटॉप और टीवी के सामने समय बिताने से आँखों पर बहुत ज़्यादा दबाव पड़ता है। नतीजतन —

1. लाल आँखें
2. सूखापन
3. आँखों में जलन या पानी आना
4. कमज़ोर दृष्टि और अंत में,
5. चश्मे पर निर्भरता बढ़ जाना!

लेकिन चिंता न करें, थोड़ी सी मेहनत और कुछ आसान घरेलू उपाय आपकी आँखों को फिर से चमकदार बना सकते हैं

1. गुलाब जल - प्राकृतिक ठंडक और आराम! गुलाब जल आँखों के लिए अमृत के समान है। हफ़्ते में 2-3 बार आँखों में गुलाब जल की 2 बूँदें डालें। इससे आँखों की थकान, काले घेरे और जलन कम होती है। दृष्टि साफ़ रहती है और आँखें तरोताज़ा महसूस होती हैं।

2. सरसों का तेल - पैरों से दृष्टि सुधारें! रोज़ाना सोने से पहले अपने पैरों की सरसों के तेल से 10 मिनट तक मालिश करें। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि यह उपाय आँखों में रक्त प्रवाह को बेहतर बनाता है और दृष्टि को मज़बूत बनाता है।

3. नियमित व्यायाम और वज़न नियंत्रण व्यायाम शरीर में ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाता है। यह रेटिना को पोषण देता है और आँखों को मधुमेह जैसी बीमारियों से बचाता है।

4. बादाम और दूध - विटामिन 'ए' का पावर कॉम्बो! रोज़ाना दूध में 4-5 बादाम पाउडर मिलाएँ। यह आँखों की मांसपेशियों को मज़बूत बनाता है और दृष्टि में सुधार करता है।

5. आंवला, गाजर, अखरोट, ब्रोकली और पालक यह सभी खाद्य पदार्थ एंटीऑक्सीडेंट और विटामिन 'ए' से भरपूर हैं। इन्हें अपने दैनिक आहार में शामिल करें और अपनी आँखों को प्राकृतिक चमक दें!

सारांशः अपनी आँखों की देखभाल करने का मतलब है खुद को और अपने जीवन को एक नया नज़रिया देना। आँखें सिर्फ़ देखने के लिए नहीं, बल्कि जीवन के आनंद का अनुभव करने के लिए होती हैं।

आज ही संकल्प करें — "मेरी आँखें मेरी ज़िम्मेदारी हैं!"

स्वास्थ्य ही असली धन है! अपनी आँखों का ख्याल रखें, आइए एक उज्ज्वल जीवन जिएँ!

आह्वान

======

यह महाप्रलय की बेला है,
भूखण्ड वलय की बेला है।
साहस की अग्नि परीक्षा है,
लय और विलय की बेला है।।

बन मृत्यु द्वार आ धमकी है,
तलवार धार धर चमकी है।
दुश्मन गुर्राया है फिर से,
परमाणु बमों की धमकी है।।

पल-पल वह जहर उगलता है,
सुन कर धक धैर्य उछलता है।
किसतरह हृदय को करूँ शान्त,
नस-नस में खून उबलता है।।

यह समय नहीं आरोपों का,
गलती पर उठते कोपों का।
उत्तर देने दो हिन्द-पुत्र,
दुश्मन की शातिर तोपों का।।

मतभेद त्याग स्वर में स्वर दो,
सीमा के प्रहरी को वर दो।
आहुति की वेदी पर हैं जो,
उनको निश्चिन्त निडर कर दो।।

आ गया समय हुंकारों का,
बस आग और अंगारों का।
तू-तू, मैं-मैं का समय नहीं,
है समय बमों - टंकारों का।।

अन्तरतम तक में सुलग आग,
जब धधक रही हो जाग जाग।
सुन ध्वंस राग खट राग त्याग,
उस समय छोड़ कर वीतराग।।

जल्लादों को जल्लाद कहो,
फौलादों को फौलाद कहो।
दुश्मन को मुर्दाबाद कहो,
भारत को जिन्दाबाद कहो।।

यों तो तुम शान्ति मसीहा हो,
गीतों के मधुर पपीहा हो।
लेकिन कोई दुश्मनी करे,
उस रिपु के लिए मलीहा हो।।

इसलिए देश उन वीरों का,
मानवता रक्षक हीरों का।
आवाहन करता है खुलकर,
योद्धाओं का रणधीरों का।।

हे तरुण! तनिक हुंकार भरो,
रणचण्डी का उच्चार करो।
भारत माता की जय बोलो,
अरि की छाती पर वार करो।।

सुनकर विवाद डर जाते हैं,
कायर डरकर घर जाते हैं।
उनसे क्या आशा की जाए,
जो बिना मरे मर जाते हैं।।

लेकिन तुम! तुम हो शूर वीर,
भारत माँ के लाड़ले वीर।
ललकारों का उत्तर देने,
चल पड़ो तमस आँधियाँ चीर।।

हे धीर-वीर! तुम निर्विवाद,
इस तरह करो कुछ सिंहनाद।
भीषण निनाद हो शंखनाद,
अरि को आ जाए छठी याद।।

हे वीर! हाथ से जला दिखा,
उस शौर्य शक्ति कीअग्निशिखा।
जिस पर रण जयी शहीदों का,
अजरत्व लिखा अमरत्व लिखा।।

डगमग-डगमग धरती डोले,
विकराल काल मुँह को खोले।
नक्षत्र टूटने लग जाएँ,
बस कर-बस कर बैरी बोले।।

इस तरह धूम्र तूफान उठा,
छा उठे हृदय में कुपित छटा।
जो भी आतंक समर्थक हैं,
उनकी संख्या हर प्रहर घटा।।

दुश्मनी कफ़न को नाप उठे,
अथ फिर आया इति भाँप उठे।
फिर एक देश की क्या बिसात,
ब्रह्माण्ड समूचा काँप उठे।।

करुणा से दूर कहर बनकर,
क्रूरता कसाई सी भरकर।
दुश्मन पर टूट पड़ो जैसे,
फूटे झरनों से जल हर-हर।।

कर उठे दुश्मनी चीत्कार,
बस त्राहि-त्राहि की हो पुकार।
हा - हा खाए गिड़गिड़ा उठे,
हर बैरी मुँह से बार - बार।।

ऐसी भीषण ज्वाला बरसा,
बम तोप बाण भाला फरसा।
इस तरह चला कर अस्त्र शस्त्र,
दुश्मन को कुछ ऐसा तरसा।।

बलबला रहे बिलबिला उठें,
कुलबुला रहे किलबिला उठें।
खिलखिला रहे खलबला उठें,
तिल मिला रहे तिलमिला उठें।।

बड़बड़ा रहे भड़भड़ा उठें,
तड़तड़ा रहे तड़फड़ा उठें।
फड़फड़ा रहे हड़बड़ा उठें,
गड़गड़ा रहे गिड़गिड़ा उठें।।

विप्लव को कविता सत्य करे,
ज्वाला में ज्वाला गत्य करे।
षोणित की सरिताएँ फूटें,
हर मृत्यु ताण्डव नृत्य करे।।

रण बीच निकलना ही होगा,
अरि दर्प कुचलना ही होगा।
इस बार क्षमा को त्याग मूल,
इतिहास बदलना ही होगा।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'

खसखस का ऐसे करें इस्तेमाल मिलेंगे अनगिनत फायदे

खसखस को भिगोकर या उसका चूर्ण बनाकर भी खाली पेट लेना अच्छा रहता है. खसखस में मैग्नीशियम, फास्फोरस, पोटैशियम, प्रोटीन, आयरन, जिंक, कैल्शियम, फाइबर, कॉपर, सेलेनियम और विटामिन जैसे यौगिक होते हैं, जो इसे पौष्टिक बनाने का काम करते हैं.

सूखे मेवे स्वाद के साथ-साथ बहुत सारे गुणों से भरपूर होते हैं. बादाम, काजू, अंजीर और अखरोट का सेवन तो सभी करते हैं, लेकिन दूध से 10 गुना ज्यादा कैल्शियम खसखस में मिलता है, जो शरीर में कैल्शियम की कमी की पूर्ति करता है. खसखस सिर्फ मेवा ही नहीं, बल्कि एक औषधि के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है. खसखस अफीम के पौधे से निकाला जाता है और इसको निकालने का तरीका बहुत जैंटल होता है. इसी वजह से बाकी मेवों की तुलना में खसखस ज्यादा महंगा आता है. इसकी खेती करने के लिए सरकार से परमिशन भी लेनी पड़ती है.

आयुर्वेद में खसखस को औषधि के तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता है, जो कई रोगों को कम करने में सहायक है. इसका सेवन करने से मानसिक थकान में राहत मिलती है, दिमाग मजबूत होता है और पेट से संबंधित रोगों से निपटने में सहायक होता है. इसके अलावा खसखस त्वचा की देखभाल और अच्छी नींद लाने में भी सहायक है.

खसखस की तासीर कैसे होती है

खसखस की तासीर ठंडी होती है और ये पेट को शीतल करने का काम करता है. ऐसे में इसके सेवन के तरीके पर भी ध्यान देना चाहिए. अगर नींद संबंधी समस्या है तो रात के समय खसखस को दो चम्मच दूध में उबालकर पीना चाहिए. इससे नींद अच्छी आती है और मस्तिष्क की थकान भी दूर होती है.

कैसे खाएं खसखस

खसखस को भिगोकर या उसका चूर्ण बनाकर भी खाली पेट लेना अच्छा रहता है. खसखस में मैग्नीशियम, फास्फोरस, पोटैशियम, प्रोटीन, आयरन, जिंक, कैल्शियम, फाइबर, कॉपर, सेलेनियम और विटामिन जैसे यौगिक होते हैं, जो इसे पौष्टिक बनाने का काम करते हैं.

अगर खसखस को बाकी जड़ी-बूटियों के साथ लिया जाए तो यह और प्रभावी तरीके से काम करती है. खसखस को हल्दी के साथ लिया जा सकता है. इसके लिए खसखस के साथ चुटकीभर हल्दी मिलाकर दूध के साथ लेने से दर्द में राहत मिलती है और शरीर थका हुआ महसूस नहीं करता है. हल्दी शरीर की आंतरिक सूजन को भी कम करने का काम करती है. इसे रात के समय ले सकते हैं.

खसखस को इलायची के साथ लिया जा सकता है. इन दोनों का मिश्रण पेट को ठंडा रखने का काम करेगा और कब्ज को ठीक करेगा. इससे पाचन की क्रिया भी तेज होगी. खसखस को बादाम के साथ दूध में मिलाकर लिया जा सकता है. इसके लिए 1 चम्मच खसखस और 5 बादामों को भिगोकर छील लें और पीसकर दूध में उबालें. इसका सेवन करने से मानसिक और शारीरिक दोनों तरह की थकान से राहत मिलेगी.

हरसिंगार ...साइटिका के दर्द का आयुर्वेद में सफल उपचार

एक पैर में कमर से लेकर पंजे तक दर्द होना सायटिका का दर्द हो सकता है या बाई का दर्द हो सकता है मुख्य लक्षण यह है कि दर्द एक पैर में ही होता है जो रोगी को रात भर सोने भी नहीं देता

उपाय हरसिंगार 10 से 12 कोमल पत्ते ले इसमें दो-तीन तुलसी के पत्ते और हरसिंगार के दो फूल भी डाल ले और इन सब का पेस्ट बना ले। पेस्ट बनाने के बाद एक गिलास पानी में धीमी आंच पर उबाले और जब तक उबले जब तक पानी आधा न रह जाए। फिर इसको छलनी द्वारा किसी कप में छाने और चाय की तरह गरम-गरम धीरे-धीरे पिए (काढ़ा) पी ले।

पहली बार मे ही 10% फायदा होगा।

प्रतिदिन 2 बार पिए... यदि आप ऑफिस जाते हैं तो दोगुना पानी उबाले। थर्मस मे भरकर ले जाएँ। इस हरसिंगार के पत्तों के काढ़े से 15 मिनट पहले और बाद तक ठंडा पानी न पीए... दही लस्सी और आचार न खाएं।।

साइटिका के तेज दर्द का समाधान निम्नलिखित हो सकते हैं:

घरेलू उपचार

1. गर्म पानी से स्नानः गर्म पानी से स्नान करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।
2. बर्फ की सिकाईः बर्फ की सिकाई करने से दर्द और सूजन कम होती है।
3. व्यायामः नियमित व्यायाम करने से मांसपेशियों में मजबूती आती है और दर्द कम होता है।
4. योगः योग करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।
5. आरामः पर्याप्त आराम करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।

आयुर्वेदिक उपचार

1. अश्वगंधाः अश्वगंधा का उपयोग करने से मांसपेशियों में मजबूती आती है और दर्द कम होता है।
2. तुलसीः तुलसी का उपयोग करने से दर्द और सूजन कम होती है।
3. गिलोयः गिलोय का उपयोग करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।
4. नारियल तेलः नारियल तेल का उपयोग करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।

एलोपैथिक उपचार

1. पेनकिलरः पेनकिलर का उपयोग करने से दर्द कम होता है।
2. मांसपेशी रिलैक्सेंटः मांसपेशी रिलैक्सेंट का उपयोग करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।
3. फिजियोथेरेपीः फिजियोथेरेपी का उपयोग करने से मांसपेशियों में मजबूती आती है और दर्द कम होता है।

जब डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए

1. लंबे समय तक दर्दः अगर आपको लंबे समय तक दर्द हो रहा है, तो डॉक्टर से संपर्क करें।
2. अगर आप चाहे दर्द मे जल्दी आराम मिल जाएँ तो एलोपेथी दवा आपके पीसी मे भेज सकता हूँ उसके लिए पेसेंट की उम्र मेल है या फीमेल ओर उनका लगभग वजन कितना होगा यह भी लिखें!

कमर में गेप आने की समस्या को स्लिप डिस्क या हेर्निएटेड डिस्क कहा जाता है। यह समस्या तब होती है जब रीढ़ की हड्डी के बीच का डिस्क अपने स्थान से खिसक जाता है और नसों पर दबाव डालता है, जिससे दर्द और कमजोरी होती है।

यहाँ कुछ घरेलू और आयुर्वेदिक उपचार दिए गए हैं जो बिना ऑपरेशन के कमर में गेप आने की समस्या को दूर करने में मदद कर सकते हैं:

घरेलू उपचार

1. गर्म पानी से स्नानः गर्म पानी से स्नान करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।
2. बर्फ की सिकाईः बर्फ की सिकाई करने से दर्द और सूजन कम होती है।
3. व्यायामः नियमित व्यायाम करने से मांसपेशियों में मजबूती आती है और दर्द कम होता है।
4. योगः योग करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।
5. आरामः पर्याप्त आराम करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।

आयुर्वेदिक उपचार

1. अश्वगंधाः अश्वगंधा का उपयोग करने से मांसपेशियों में मजबूती आती है और दर्द कम होता है।
2. तुलसीः तुलसी का उपयोग करने से दर्द और सूजन कम होती है।
3. गिलोयः गिलोय का उपयोग करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।
4. नारियल तेलः नारियल तेल का उपयोग करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।

अन्य उपचार

1. फिजियोथेरेपीः फिजियोथेरेपी का उपयोग करने से मांसपेशियों में मजबूती आती है और दर्द कम होता है।
2. एक्यूपंक्चरः एक्यूपंक्चर का उपयोग करने से दर्द और सूजन कम होती है।
3. योग थेरेपीः योग थेरेपी का उपयोग करने से मांसपेशियों में आराम मिलता है और दर्द कम होता है।

अगर आपको कोई गंभीर समस्या है, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

मासिक धर्म अवकाश नीति को पूरे देश में लागू किया जाए

"हर राज्य में लागू हो मासिक धर्म अवकाश — महिला सम्मान का नया अध्याय"

कर्नाटक सरकार द्वारा मासिक धर्म अवकाश नीति लागू करना एक सराहनीय और संवेदनशील पहल है। यह निर्णय महिलाओं के स्वास्थ्य, सम्मान और कार्यस्थल की समानता को नई दिशा देता है। मासिक धर्म के दौरान एक दिन का सवेतन अवकाश उन्हें शारीरिक राहत के साथ आत्मसम्मान की अनुभूति भी कराता है। अब आवश्यकता है कि यह नीति केवल कर्नाटक तक सीमित न रहे, बल्कि पूरे भारत में लागू की जाए ताकि हर कार्यरत महिला को समान अधिकार और सम्मान मिल सके। यह कदम महिला सशक्तिकरण और मानवीय संवेदनशीलता का सशक्त प्रतीक है।

- डॉ प्रियंका सौरभ

आज जब महिलाएँ हर क्षेत्र में बराबरी से काम कर रही हैं, तब यह जरूरी है कि नीतियाँ भी उनके अनुभवों और जरूरतों के अनुसार बनें। कर्नाटक सरकार ने मासिक धर्म अवकाश की जो पहल की है, वह न केवल महिला स्वास्थ्य की दृष्टि से ऐतिहासिक है, बल्कि यह सामाजिक सोच में बदलाव का प्रतीक भी है।

राज्य सरकार ने यह व्यवस्था लागू की है कि सभी सरकारी दफ्तरों, आईटी कंपनियों और फैक्ट्रियों में कामकाजी महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान हर माह एक दिन का सवेतन अवकाश (Paid Leave) मिलेगा। यह कदम उस संवेदनशीलता का परिचायक है जिसकी महिलाओं को लंबे समय से प्रतीक्षा थी।

महिलाएँ समाज और अर्थव्यवस्था का अभिन्न हिस्सा हैं। मासिक धर्म उनके शरीर की प्राकृतिक प्रक्रिया है, परंतु सदियों से इसे सामाजिक असहजता और मौन के घेरे में रखा गया। इस अवधि में शारीरिक दर्द, असुविधा और मानसिक थकान का अनुभव आम है, लेकिन कार्यस्थलों पर उनसे सामान्य दिनों जैसी कार्यक्षमता की अपेक्षा की जाती रही है। अब जब सरकारें इस जैविक प्रक्रिया को नीति निर्माण में शामिल कर रही हैं, तो यह समाज के परिपक्व होने की निशानी है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मत है कि मासिक धर्म के शुरुआती दिनों में विश्राम और मानसिक स्थिरता अत्यंत आवश्यक होती है। इस अवधि में अत्यधिक काम करने या तनाव लेने से महिलाओं में कई स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए यह नीति सिर्फ सुविधा नहीं बल्कि महिला स्वास्थ्य के संरक्षण का साधन भी है।

यह नीति नारी-सशक्तिकरण की परिभाषा को और गहराई देती है। सशक्तिकरण का अर्थ केवल अधिकारों की बात करना नहीं, बल्कि परिस्थितियों के अनुरूप सम्मान देना है। जब राज्य स्वयं यह स्वीकार करता है कि महिला शरीर की आवश्यकताएँ विशेष हैं, तो यह समानता की दिशा में उठाया गया वास्तविक कदम है।

कर्नाटक का यह निर्णय समाज में एक बड़ा संदेश देता है — कि महिलाओं की जैविक प्रक्रिया को अब छिपाने या शर्म की दृष्टि से देखने की बजाय सामान्य जीवन का हिस्सा समझा जाना चाहिए। यह नीति मासिक धर्म के विषय को सार्वजनिक विमर्श में लाकर इसे सामान्य और सम्मानजनक बनाती है।

इस निर्णय से यह उम्मीद भी बढ़ी है कि अन्य राज्य सरकारें और निजी कंपनियाँ भी इस दिशा में कदम उठाएँगी। कुछ वर्ष पहले केरल और ओडिशा जैसे राज्यों में इस विषय पर चर्चा तो हुई, पर नीति नहीं बनी। अब कर्नाटक ने जो उदाहरण पेश किया है, वह अन्य राज्यों के लिए प्रेरणा बनेगा।

वास्तव में, यह समय की माँग है कि भारत सरकार भी राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी नीति बनाए, जिससे हर क्षेत्र की कामकाजी महिलाओं — सरकारी कर्मचारी, शिक्षिका, नर्स, बैंक अधिकारी, फैक्ट्री वर्कर या निजी क्षेत्र की कर्मचारी — सभी को समान रूप से यह अधिकार प्राप्त हो।

यह नीति केवल छुट्टी देने का मामला नहीं है, बल्कि यह महिलाओं की गरिमा, स्वास्थ्य और आत्मसम्मान से जुड़ा प्रश्न है। इससे वे बिना अपराधबोध या झिझक के अपने शरीर की जरूरतों को प्राथमिकता दे सकेंगी।

कुछ आलोचक इस नीति को अतिरिक्त विशेषाधिकार बताकर इसे कमजोर करने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि समानता का अर्थ एक जैसी परिस्थितियाँ नहीं बल्कि न्यायपूर्ण व्यवहार है। पुरुषों को मासिक धर्म की शारीरिक पीड़ा नहीं झेलनी पड़ती, इसलिए महिलाओं को इस समय विश्राम का अधिकार देना किसी प्रकार का पक्षपात नहीं बल्कि संवेदनशील न्याय है।

भारत में महिला जनसंख्या लगभग आधी है। यदि यह नीति पूरे देश में लागू की जाती है, तो न केवल महिलाओं का स्वास्थ्य सुधरेगा बल्कि कार्यस्थलों की उत्पादकता, वातावरण और लैंगिक समानता भी मजबूत होगी।

यह भी आवश्यक है कि कार्यस्थलों पर इस नीति के अनुपालन के साथ-साथ संवेदनशील माहौल बनाया जाए ताकि महिलाएँ इस अवकाश का उपयोग बिना झिझक कर सकें। यह शिक्षा, कॉरपोरेट जगत और मीडिया सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है कि मासिक धर्म के विषय को अब सामान्य संवाद का हिस्सा बनाया जाए।

कर्नाटक की यह पहल दर्शाती है कि सरकारें जब संवेदनशील दृष्टि से सोचती हैं, तो नीतियाँ सिर्फ प्रशासनिक दस्तावेज नहीं रहतीं — वे समाज के चरित्र को बदलने का माध्यम बन जाती हैं।

इसलिए अब आवश्यकता है कि भारत के सभी राज्यों और केंद्र सरकार को इस नीति को अपनाकर पूरे देश में लागू करना चाहिए। इससे भारत दुनिया के उन देशों की श्रेणी में शामिल होगा, जिन्होंने महिलाओं के प्रति वास्तविक समानता का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

यह नीति भारत को केवल आर्थिक रूप से नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक रूप से भी आगे ले जाएगी। यही वह सोच है जो एक संवेदनशील, समानतापूर्ण और आधुनिक भारत के निर्माण की दिशा दिखाती है।

कर्नाटक ने रास्ता दिखा दिया है — अब बारी पूरे भारत की है। कर्नाटक की मासिक धर्म अवकाश नीति न केवल एक प्रशासनिक सुधार है, बल्कि यह भारतीय समाज के विचार और संवेदनशीलता में गहरे बदलाव का प्रतीक है। यह कदम बताता है कि जब सरकारें नीतियाँ बनाते समय महिलाओं के अनुभवों, स्वास्थ्य और गरिमा को प्राथमिकता देती हैं, तो समाज अधिक संतुलित और न्यायपूर्ण बनता है। यह नीति महिलाओं को अपने शरीर के प्रति अपराधबोध से मुक्त कर आत्म-सम्मान की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर देती है।

आज आवश्यकता है कि इस पहल को केवल कर्नाटक तक सीमित न रखा जाए। भारत के हर राज्य और केंद्र सरकार को इसे राष्ट्रीय स्तर पर लागू कर, सभी कार्यरत महिलाओं के लिए समान अधिकार सुनिश्चित करने चाहिए। इससे कार्यस्थलों पर समानता, स्वास्थ्य और उत्पादकता तीनों का संतुलन स्थापित होगा।

महिला सशक्तिकरण की असली कसौटी वही है, जहाँ नीतियाँ संवेदना के साथ न्याय भी करें। कर्नाटक का यह कदम उसी दिशा में एक सुनहरी शुरुआत है। यदि यह नीति पूरे भारत में लागू होती है, तो यह न केवल महिलाओं के लिए राहत का प्रतीक होगी, बल्कि एक संवेदनशील, आधुनिक और सम्मानजनक भारत की नींव भी रखेगी।

सफदरजंग अस्पताल में विश्व धर्मशाला एवं उपशामक देखभाल दिवस 2025 मनाया गया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

नई दिल्ली: सफदरजंग अस्पताल के एनेस्थीसिया एवं गहन चिकित्सा विभाग ने बीते शनिवार, 11 अक्टूबर 2025 को वैश्विक थीम ध्वादा पूरा करना: उपशामक देखभाल तक सार्वभौमिक पहुँचध्र के अनुरूप विश्व धर्मशाला एवं उपशामक देखभाल दिवस 2025 मनाया। इस कार्यक्रम का आयोजन दर्द एवं उपशामक देखभाल टीम द्वारा किया गया था, जिसमें जीवन को सीमित करने वाली बीमारियों से ग्रस्त रोगियों के लिए करुणामय देखभाल की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में एक प्रसिद्ध कानूनी विशेषज्ञ द्वारा "लिविंग विल" पर एक सार्वजनिक व्याख्यान दिया गया, जिसके बाद एक नाटक और सांस्कृतिक प्रदर्शन के माध्यम से जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने और अंत तक सम्मान बनाए रखने में उपशामक देखभाल के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाई गई। इस अवसर पर चिकित्सा अधीक्षक डॉ. चारु बांबा, जीजीएसआईपी विश्वविद्यालय की डीन डॉ. वंदना तलवार, डॉ. अमिता गुप्ता, डॉ. अमिता साहनी, डॉ. मधु दयाल, डॉ. तिलक राज एएमएस और डॉ. सवीना रहेजा के साथ-साथ संकाय सदस्य, छात्र, नर्सिंग स्टाफ और मरीज मौजूद थे। कार्यक्रम में बोलते हुए, डॉ. तलवार ने सहानुभूति और समग्र देखभाल के संदेश को बढ़ावा देने में टीम के प्रयासों की सराहना की और इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक मरीज आराम और सम्मान का हकदार है। डॉ. चारु एम.एस. ने समर्पित उपशामक देखभाल टीम की सराहना की और जरूरतमंद सभी लोगों के लिए उपशामक देखभाल को सुलभ बनाने के लिए विभाग की प्रतिबद्धता दोहराई। डॉ. अमिता साहनी, डॉ. अमिता गुप्ता और डॉ. मधु दयाल ने भी चिकित्सा विशेषज्ञताओं में व्यापक रोगी प्रबंधन में उपशामक देखभाल को एकीकृत करने पर अपने विचार साझा किए। रोगियों का मनोबल बढ़ाने के लिए उन्हें उपयोगी उपहार भी दिए गए। कार्यक्रम का समापन उपशामक देखभाल सेवाओं के बारे में जागरूकता, पहुँच और गुणवत्ता को मज़बूत करने तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए सम्मानजनक और करुणामय जीवन-पर्यंत देखभाल सुनिश्चित करने के सामूहिक संकल्प की पुनः पुष्टि के साथ संपन्न हुआ।

"क्या आप जानते किस बंधन को क्या नाम दिया गया है, जाने"

1. वर को बुलाकर वस्त्र और आभूषणों से अलंकृत हुई अपनी कन्या दी जाती है, वह ब्राह्म-विवाह है।
2. यज्ञ में वरण किये हुए ऋत्विज के लिये जो कन्यादान किया जाता है, वह दैव-विवाह है।
3. वर से एक गाय और एक बैल लेकर जो उसको कन्या दी जाती है, वह आर्ष विवाह है।
4. वर और कन्या को यह कहकर कि तुम दोनों साथ-साथ रहकर धर्म का पालन करो, विवाह बन्धन में आबद्ध किया जाता है, वह प्राजापत्य-विवाह कहा गया है।
5. एक-दूसरे से मैत्री होने के कारण वर और वधू में स्वेच्छा से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, वह गान्धर्व विवाह कहलाता है।

जीव को दो शक्तियाँ प्राप्त हैं—(1) प्राणशक्ति, जिससे श्वासों का आवागमन होता है और (2) इच्छाशक्ति, जिससे भोगों को पाने की इच्छा करता है।

प्राण शक्ति हरदम क्षीण होती रहती है। प्राणशक्ति का समाप्त होना ही मृत्यु कहलाती है। जड़ का संग करने से कुछ करने और पाने की इच्छा बनी रहती है। प्राणशक्ति के रहते हुए इच्छा शक्ति अर्थात् कुछ करने और पाने की इच्छा मिट जाये, तो मनुष्य जीवन्मुक्त हो जाता है। प्राणशक्ति नष्ट हो जाये और इच्छाएँ बनी रहें, तो दूसरा जन्म लेना ही पड़ता है। नया शरीर मिलने पर इच्छा शक्ति तो वही (पूर्वजन्म की) रहती है, प्राण शक्ति नयी मिल जाती है।

प्राण शक्ति का व्यय इच्छाओं को मिटाने में होना चाहिये। निःस्वार्थ भाव से सम्पूर्ण प्राणियों के हित में रत रहने से इच्छाएँ सुगमता पूर्वक मिट जाती हैं।

विचार और आचरण

जब तक तुम्हारा विवेक जाग्रत है, तभी तक तुम्हें अपने अच्छे-बुरे विचार और आचरण का पता लगेगा। मनुष्य का विवेक जब लुप्त हो जाता है, तब उसकी अच्छा-बुरा देखने—परखने की दृष्टि नष्ट हो जाती है और बुरे वातावरण तथा चिन्तन से यदि बुराई में अच्छाई दिखने लगती है, तब तो उसका अनायास ही पतन हो जाता है; क्योंकि तब उसकी धारणा में पाप करने पर 'मैं पुण्य करता हूँ' ऐसी मिथ्या अनुभूति होती है और वह पाप में सफलता प्राप्त करने पर अपने को गौरवशाली तथा सफल-जीवन मानता है। इसलिये जहाँ तक बने विशुद्ध सत्संग तथा शुद्ध स्वाध्याय से विवेक को जाग्रत रखो।

इस वर्तमान देह की स्थिरता को लोग जीवन कहते हैं और इस शरीर के परित्याग को मरण कहते हैं।

हम तो इन दोनों ही जन्म-मरण रूपों से रहित हैं। वस्तुतः इस लोक में हमारा न कभी जन्म हुआ है और न ही मरण। न तो कभी जन्मते हैं और न ही कभी मृत्यु ही होती है। चुंकि हम मात्र यह देह नहीं हैं, हम देह में रहते हैं, इसलिए हम विदेह हैं। जब परमात्मा के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान हो जाता है, तब एक परमात्मा ही रह जाता है। परमात्मा के सिवा इस संसार में दूसरा कुछ/कोई है ही नहीं, तब कैसा जन्म? और कैसी मृत्यु? परमात्मा अनादि है और हम उसी के अंश हैं, इसलिए हमारी न मृत्यु है और न ही जन्म है। जैसे हम सांसारिक मकान/घर में रहते हुए, हम मकान नहीं हो जाते उसी प्रकार इस देह रूपी मकान में रहने पर हम ही देह नहीं हो जाते। तथापि इसका यह अर्थ नहीं है कि इस शरीर को जब कोई पीड़ा/तकलीफ आयें तो हम उसका उपहास करें कि यदि हम देह नहीं हैं तो हम तुम्हें जितना मर्जी सता सकतें हैं। हमें अज्ञानतावश अपनी चीजों/संबंधों/दीवारों से भी चिपकाव हो जाता है तो जब तक हमने अपने आप को शरीर से अलग अनुभव नहीं कर लिया तब तक हम शरीर को ही 'मैं' माने बैठे रहेंगे। भला प्रबुद्ध लोगों का इस शरीर से क्या सम्बन्ध? ध्यान रहे कि शरीर की प्रकृति आदि-अंत वाली है और हमारे आत्म-तत्व की प्रकृति अनादि है। इसलिए अपने वास्तविक स्वरूप को जान लेना ही मुक्ति है।

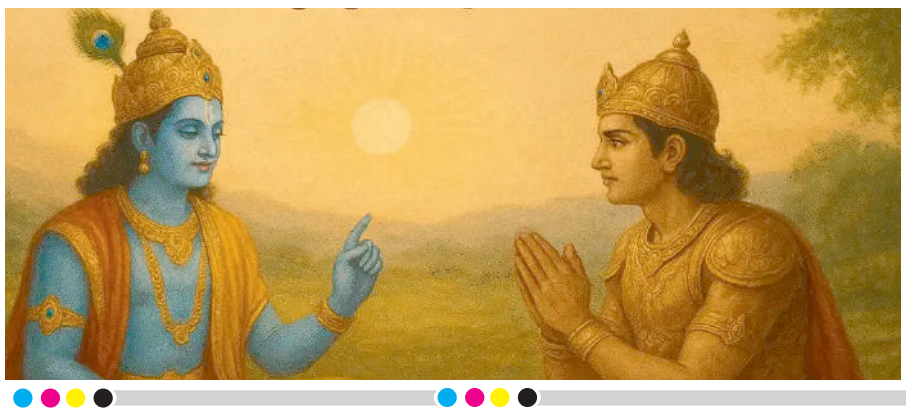

राजनैतिक व्यंग्य-समागम

1. शांति का नोबेल : गुरु गुड़ रह गए, चेली शक्कर होए! -- राजेंद्र शर्मा

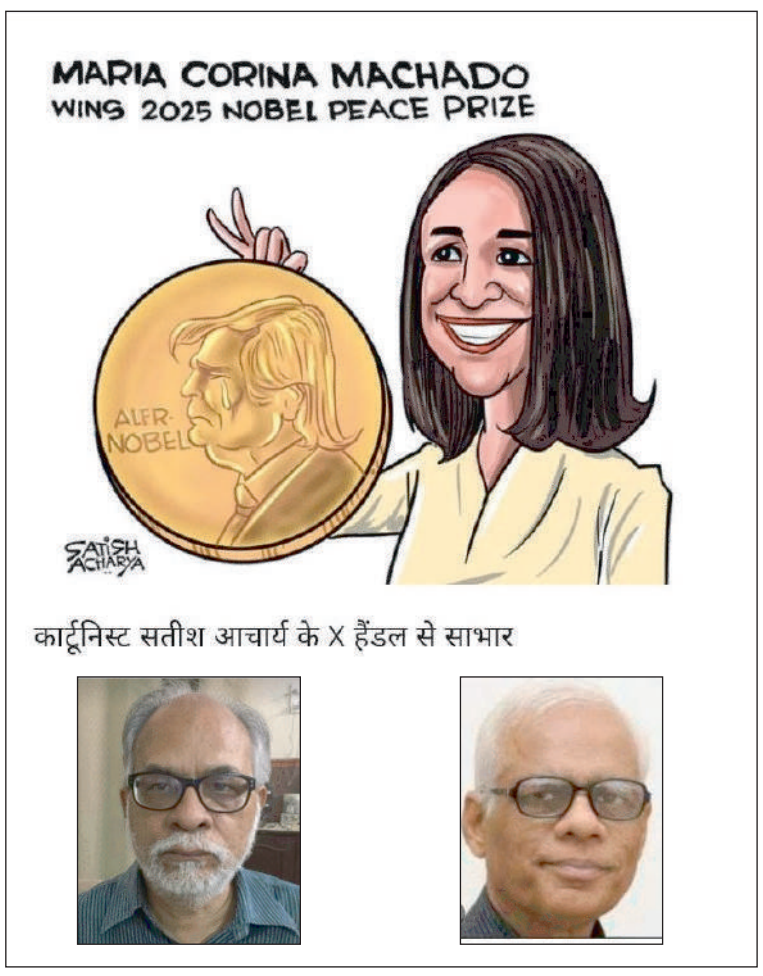

कार्टूनिस्ट सतीश आचार्य के X हैंडल से साभार

गुरु गुड़ का गुड़ रहा, चेली शक्कर होए! डोनाल्ड ट्रंप साहब के साथ वाकई बुरा हुआ है। बेचारे की वह वाली गत बन रही है, जिसे दुहेली गति कहते हैं। नोबेल कमेटी वालों ने बेचारे की ऐसी गत बनायी है कि बंदे से न हंसते बन रहा है, न रोते। अगला हंसे तो हंसे कैसे? आखिरकार, हाथ में आया-अवाया शांति का नोबेल, आखिरी वक्त में हाथ से निकल गया, जैसे मुट्ठी से रेत फिसल जाए। और यह तब था, जबकि नोबेल पुरस्कार अपनी अंटी में करने के लिए, अगले ने इस बार जितनी मेहनत की थी, उतनी मेहनत तो न इससे पहले कभी किसी ने की होगी और न आगे कोई कर पाएगा।

पहले लोग समझते थे कि मेहनत तो विज्ञान वगैरह के नोबेल पुरस्कार के लिए करनी पड़ती है। बेशक, थोड़ी-बहुत मेहनत अर्थशास्त्र वगैरह के नोबेल पुरस्कार के लिए भी करनी पड़ती होगी। और हां, कुछ न कुछ मेहनत तो साहित्य के नोबल के लिए भी करनी ही पड़ती होगी। लेकिन, शांति का नोबेल, वह तो यूं ही बैठे-बिठाए मिल जाता है। जिसको मिलना होता है, उसकी झोली में खुद ब खुद आ पड़ता है। इसके लिए किसी को कम से कम ऐसी मेहनत नहीं करनी पड़ती होगी, जो करने वाले के करने से भी ज्यादा, देखने वालों को और यहां तक कि नहीं देखने वालों तक को दिखाई पड़े। पर यह तब की बात है, जब तक व्हाइट हाउस के धराधाम पर ट्रंप का आगमन नहीं हुआ था और आगमन से भी बढ़कर, ट्रंप जी की वापसी नहीं हुई थी।

दूसरी पारी में तो ट्रंप जी ने जैसे आते ही एलान कर दिया था, इस बार शांति का नोबेल मेरा। नोबेल के लिए अपुन कुछ भी करेगा। अगले की इच्छा भी गलत नहीं थी। व्हाइट हाउस में वापसी के बाद, क्या था, जो अगले के पास नहीं था। सब कुछ तो अगले के पास था। अगले के पास न्यूक्लियर बटन था। अगले के पास दुनिया की सबसे बड़ी सैन्य ताकत थी और आर्थिक ताकत भी। अगले के पास दुनिया में कहीं भी तबाही मचाने की ताकत थी। और तो और, बाद में पता चला कि अगले के पास टैरिफ की तलवार भी थी। मोदी जी की तरह, सारा मीडिया भले ही अगले की गोदी में नहीं था, फिर भी अगले की गोदी में भी काफी मीडिया था। फिर भी ओबामा मिलता था, तो नजरें नीची रखकर निकलना तो दूर रहा, अगला अकड़ के साथ गर्दन तानकर निकलता था। और अकड़ किस बात की? ट्रंप के ध्मेरे पास बंगला है, गाड़ी है, पैसा है, पावर वगैरह सब हैध् के जवाब में, अगला बस अपने मैडल की ओर इशारा करता था -- मेरे पास नोबेल है और वह भी शांति का! पहले नोबेल लेकर आओ, तब करना मुझ से मुकाबला!

नोबेल और वह भी शांति का, यही डबल ट्रबल वाली बात थी। और किसी नोबेल की बात होती, तब तो ट्रंप जी को इतनी प्रॉब्लम का सामना नहीं करना पड़ता। रसायन या भौतिकी का नोबेल हासिल करना तो ट्रंप जी के लिए बाएं हाथ का खेल था। वैज्ञानिकों को ही तो अपना काम, ट्रंप जी के नाम करने के लिए पटाने की जरूरत होती। कुछ ले-देकर, ट्रंप साहब सौदा पटा ही लेते। बल्कि हमें तो पक्का है कि सौदा भी सस्ते में ही पटा लेते। यूं ही थोड़े ही पूरा जमाना उनकी सौदागरी का कायल है। ट्रंप साहब तो डील की गाजर दिखाकर, बाकायदा युद्ध तक रुकवाने का दावा करते हैं, जैसे भारत-पाकिस्तान का पिछला युद्ध, हालांकि मोदी है कि मानता नहीं है। तब सौदे की गाजर दिखाकर क्या ट्रंप जी किसी वैज्ञानिक का नोबेल लायक काम भी अपने नाम नहीं लिखवा सकते थे? साहित्य को छोड़कर, कोई भी नोबेल ट्रंप जी चुटकियों में अपना बना सकते थे।

क्या है कि लेखक-वेखक किसी और ही अकड़ में रहते हैं। रस्सी जली रहती है, पर इनकी अकड़ नहीं जाती। और अर्थशास्त्र के नोबेल पर तो ट्रंप जी कभी भी डायरेक्ट दावा कर सकते थे। अर्थशास्त्र के जानकार नहीं होते, तो क्या धंधे में इतने कामयाब होते। पर शांति का नोबेल? ओबामा ने यही फंसा दिया। काश, नोबेल वालों ने युद्ध का नोबेल रख दिया होता। ओटोमैटिकली हर बार अमरीकी राष्ट्रपति को मिल जाता। हर साल नहीं, तो भी कम से कम एक कार्यकाल में एक बार तो खुद ब खुद मिल ही जाता। पर नोबेल और वह भी शांति का। वैसे भी नोबेल की कंपनी तो हथियार बनाने की थी, उसे शांति के नोबेल की क्या सूझी? हथियार बनाने वाले भी शांति को प्रमोट करेंगे, तो युद्ध के चाहने वालों की कद्र कौन करेगा?

खैर! ट्रंप जी भी दूसरी पारी में पहले दिन से ही भिड़ गए। चेलेंज शांति के नोबल का था, सो बेचारे को युद्ध रुकवाने के काम में जुटना पड़ा। और अगले ने खोज-खोज कर युद्ध रुकवाए। अफ्रीका तक में छोटे-छोटे युद्ध रुकवाए और बड़ी शान से गिनवाए। बस रूस-यूक्रेन वाला युद्ध ही बार-बार हाथ से फिसलता रहा और रुकते-रुकते, रह गया। इसीलिए तो ट्रंप जी जेलेंस्की और पुतिन, दोनों से बहुत खफा हैं। बस उनसे पक्की वाली कुट्टी नहीं की है, वर्ना बोल-चाल बंद सी ही कर दी है। और ग़ज़ा पर इस्राइल का युद्ध भी। वैसे वह तो शुरू से ट्रंप जी के काबू में था। जिस दिन दिल करता, वार रुकवा देते। बस दो साल दिल ही नहीं किया। सोचा नेतन्याहू को भी अपने मन की कर लेने दें। पर अब और नहीं। दो साल के बाद फिलहाल और नहीं। नोबेल के फैसले के हिसाब से ऐन वक्त पर नेतन्याहू से कह दिया स्टॉप और सारी दुनिया देख रही है कि इस्राइल ने वार रोक दी है। पर क्या फायदा, इतने युद्ध रुकवाने का? दुनिया में इतनी शांति कराने का? नॉर्वे वालों ने नोबेल तो किसी और को दे दिया।

कभी-कभी ट्रंप जी को ऐसा लगता है कि अगर फ्रैंड मोदी ने खेल नहीं बिगाड़ा होता, तो शांति का नोबेल उनके ही हाथ होता। पर अगला तो फ्रैंड होकर भी खेल बिगाड़ने पर अड़ गया। जरा सा एक बार युद्ध रुकवाने के लिए थैंक यू कहने में, अगले का क्या जाता था? पर थैंक यू नहीं बोला तो नहीं ही बोला। थैंक यू बोलना छोड़ो, खुद अपने मुंह से तो कुछ नहीं कहा, पर इशारे से अपने अलग-अलग लेवल के अफसरों को लगा दिया, यह कहने पर कि वॉर रोकी, तो हमने खुद रोकी, उसमें किसी तीसरे का कोई काम नहीं था। यानी ट्रंप की वॉर रुकवाने की कहानी झूठी थी।

बात सिर्फ इतनी नहीं है कि ट्रंप की रुकवायी वॉर छह से घटकर पांच रह गयीं। पांच भी क्या छोटी गिनती है? पर माहौल बिगड़ गया। विरोधियों ने कहना शुरू कर दिया कि पांच की गिनती में झोल-झाल लगता है। ठीक से जांच हो। नोबेल कमेटी वाले घोटाले के आरोपों से डर गए। हाय! दुश्मन भी न करे, दोस्त ने वो काम किया है, दोस्ती का नाम बदनाम किया है!

पर ट्रंप जी रोयें भी तो रोयें कैसे? शांति का नोबेल मिला तो उनकी चेली, मरिया कोरिना मचाडो को ही है। वेनेजुएला के वाममार्गी निजाम का तख्तापलट करने का, उनके उस अमेरिका का ही तो हथियार है मचाडो, जिसे उन्हें अगेन ग्रेट बनाना है। अगेन ग्रेट, माने अगेन दुनिया भर में, जो निजाम पसंद नहीं आए, उनका तख्तापलट! मचाडो की जीत में भी तो, उनकी ही जीत है। उसने भी नोबल मिलते ही सबसे पहले, ट्रंप का ही थैंक यू किया है। बड़ी चालू रकम है! क्या कीजिए, गुरु गुड़ ही रह जाए और चेला/ चेली शक्कर हो जाए, यह तो हमेशा से होते ही आया है। नोबेल न सही, नोबेल हासिल करने वाली के गुरु का दर्जा सही! दिल को खुश रखने को ट्रंप जी, ये ख्याल अच्छा है!

(व्यंग्यकार वरिष्ठ पत्रकार और 'लोक लहर' के संपादक हैं।)

2. समझ क्या रखा है इन नोबेल शांति पुरस्कार वालों ने! -- विष्णु नागर

भारत- पाकिस्तान समेतa सात युद्ध रुकवाने का दावा करनेवाले डोनाल्ड ट्रंप जी मात खा गए। कितनी ही बेचारे ने लाबिइंग की थी, नेतन्याहू टाइप कितने ही विश्व नेताओं से उसने सिफारिशें करवाई थीं, मगर उस गरीब को नोबेल शांति पुरस्कार नहीं मिला, तो नहीं ही मिला। सुबह उठकर उसे जो झटका लगा होगा, उसकी कल्पना ही की जा सकती है! हे राम, ये क्या हो गया, टाइप गम हुआ होगा!

अभी उसने झटपट गाजा पट्टी के लिए बीस सूत्रीय शांति योजना संपन्न करवाई थी कि इसके बाद तो कोई ताकत उसे रोक नहीं पाएगी। मोदी जी ने इस सफलता के लिए अपने 'दोस्त' ट्रंप को बधाई भी दी थी, मगर सब व्यर्थ गया। दिन-रात की 'मेहनत' भैंस की तरह पानी में गई और यह पुरस्कार ले गईं वेनेजुएला की मारिया कोरिना मकाओ! कोई बात है भला!

ये क्या हो रहा है दोस्तो। दिल्ली के लोक कल्याण मार्ग में भी इससे मायूसी छा गई होगी। बधाई पत्र का ड्राफ्ट बेकार चला गया वरना अपने 'मित्र' ट्रंप को बधाई देने वालों में मोदी जी सबसे आगे होते!

वैसे क्या भारत तथा ब्राजील पर पचास प्रतिशत टैरिफ लगाने के लिए कोई विश्व पुरस्कार देने की व्यवस्था नहीं है? अगर नहीं है, तो ट्रंप अपने अलग सोशल मीडिया एकाउंट की तरह नेतन्याहू स्पांसर्ड शांति पुरस्कार शुरु करके उसे ले लेगा! समझ क्या रखा है इन नोबेल शांति पुरस्कार वालों ने!

(कई पुरस्कारों से सम्मानित विष्णु नागर साहित्यकार और स्वतंत्र पत्रकार हैं। जनवादी लेखक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं।)

धूमधाम से सम्पन्न हुआ भागवत मूर्ति डॉ. शिव करण पाण्डेय महाराज का आराधन महामहोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। आनंद वाटिका स्थित कल्पतरु कृपा आश्रम में भागवत मूर्ति गोलोकवासी डॉ. शिवकरण पाण्डेय ₹गुरुजी₹ का चतुर्थ आराधान महामहोत्सव अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ।सर्वप्रथम आचार्य नेत्रपाल शास्त्री व राजेंद्र शास्त्री एवं समस्त शिष्य परिकर के द्वारा गोलोकवासी डॉ. शिवकरण पाण्डेय ₹गुरुजी₹ के चित्रपट का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन करके दीप प्रज्वलित किया गया।तत्पश्चात मंगलाचरण के साथ सन्त-विद्वत संगोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ।जिसमें अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी चंचलाचार्य महाराज एवं श्रीकृष्ण प्रपन्नाचार्य महाराज ने कहा कि गोलोकवासी डॉ. शिवकरण पाण्डेय ज्ञान, भक्ति तथा प्रेम के मूर्तिमान स्वरूप थे।उन्हें अनेकों ग्रंथ कंठस्थ थे।

पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री एवं ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि गोलोकवासी डॉ. शिवकरण पाण्डेय की सादगी, सहजता, सरलता और उनके मृदुल व्यवहार की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है।वो अत्यंत मृदुभाषी और प्रसन्न चित्त थे।

महोत्सव के संयोजक भागवत मनीषी आचार्य नेत्रपाल शास्त्री व मुरली निकुंज निष्काम सेवा संस्थान के अध्यक्ष आचार्य राजेंद्र महाराज ने कहा कि हमारे सद्गुरदेव गोलोकवासी डॉ. शिवकरण पाण्डेय को रामानुज संप्रदाय के होते हुए भी सभी संप्रदायों का ज्ञान था।नाम, रूप, लीला, धाम में उनकी पूर्ण निष्ठा थी।साथ ही ब्रज से उनका अपार प्रेम था।

भागवताचार्य डॉ. अशोक शास्त्री एवं आचार्य विपिन बापू महाराज ने कहा कि गोलोकवासी डॉ. शिवकरण पाण्डेय के त्याग, परिश्रम, भागवत की शिक्षा, व ज्ञान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। उनके विषय में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

सन्त-विद्वत सम्मेलन में श्रीरंगलक्ष्मी महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. रामसुदर्शन मिश्र, स्वामी अनंताचार्य महाराज, डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज, आचार्य करुणा शंकर त्रिवेदी, डॉ. नन्द कुमार शास्त्री, स्वामी गोपालाचार्य महाराज, वैष्णवाचार्य देवांशु गोस्वामी, रासाचार्य स्वामी रामशरण शर्मा, डॉ. रामदत्त मिश्र, आशीष कृष्ण शास्त्री, नमामि पांडे, भरतराज चतुर्वेदी, गणेश उपाध्याय, कृपा शंकराचार्य, सनत्कुमाराचार्य, चंद्रमौली पांडे, चंद्रशेखर पांडेय, धर्मेंद्र त्रिवेदी, राजेंद्र त्रिवेदी, श्याम नारायण पांडे, राकेश, वेदबिहारी, रामविलास मिश्र, डॉ. राधाकांत शर्मा, ईश्वरचंद्र रावत, डॉ. भुवनेश भारद्वाज, अनुज मिश्र, कुलदीप कुमार, अरविंद कुमार, जगदीश चतुर्वेदी, करन कृष्ण गोस्वामी, कु. कल्पना, सुनयना, कु. अंजन, ब्रजेश, कुं. राधिका, संतोष आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन आचार्य नेत्रपाल शास्त्री ने किया।

महोत्सव का समापन संत, महंत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।जिसमें असंख्य व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

बेटियों से मत छीनों

बेटियों से मत छीनों तुम उनका स्वतंत्र अधिकार,
बहने दो उनमें भी निर्बाध अमृत "आनंद" रसधार ।

बिटिया संस्कारों को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढाती,
तुम्हारे आँगन को अपनी चहल-पहल से सजाती,
तुम्हारे मौन भावों को वो बिना कहे समझ जाती,
समय से पहले ही जिम्मेदारियों में रच बस जाती,
निभाती है वो कई रूपों में बख़ूबी अपना किरदार,
बहने दो उनमें भी निर्बाध अमृत "आनंद" रसधार ।

आज तुम्हारे आँगन में एक नन्ही कली है मुस्कराई,
कल समाजिक रीति-रिवाजों में बँध करोगे विदाई,
क्यों तुमने छिना हक उनका हिस्से में दी रुसवाई,
क्या जानते हो सीने में अनकही इच्छाएं उसने छुपाई,
मत बनाओ उनको खोखली रूढ़िवादिता का शिकार,
बहने दो उनमें भी निर्बाध अमृत "आनंद" रसधार ।

पुरानी कुरीतियों, प्रथाओं का बोझ उन पर हो डालते,
क्यों उनकी प्रतिभा को दूसरों से सदा कम हो आंकते,
बिटिया को भी दो पंख तुम फलक में उड़ने के वास्ते,
अपनी सशक्त पहचान बनाने के लिए खोल दो रास्ते,
बेटे हैं कलेजा तो बिटिया को भी करो तुम स्वीकार,
बहने दो उनमें भी निर्बाध अमृत "आनंद" रसधार ।

बेटियों से मत छीनों तुम उनका स्वतंत्र अधिकार,
बहने दो उनमें भी निर्बाध अमृत "आनंद" रसधार ।

- मोनिका डागा 'आनंद', चेन्नई, तमिलनाडु

नानी और दादी की कहानियों में तजुर्बे का शहद था

डॉ मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़

ज़माना बदल गया है, लेकिन दिल के किसी कोने में दादा-दादी और नाना-नानी का वो आँगन, वो पुरानी चौखट, आज भी वैसे ही महकती है जैसे कभी दोपहर की धूप में नीम की छाँव में बच्चों की किलकारियाँ, दादी के लबों से फ़िसलती कहानियों का जादू, नाना की गोदी में छुपकर सुनी लोरियों का सुकून और रसोई से आती देसी घी के परांठों की ख़ुशबू, लेकिन क्या हमने सच में उस दुनिया को खो दिया है या हमारे भीतर उसकी कोई परछाईं अब भी बाक़ी है, हम शहरों की रफ़्तार में बहुत आगे बढ़ गए हैं मगर जब-जब गर्मियों की छुट्टियाँ आती हैं तो दिल का कोई कोना फ़िर उन्हीं पलों की तलाश में उन गाँव की गलियों, मिट्टी की सोंधी महक, आँगन की चौपाल और तुलसी के पौधों तक लौट जाता है जहाँ समय की रफ़्तार सुस्त पड़ जाती थी और रिश्तों की गर्माहट तेज़ हो जाती थी, वो कहानियाँ महज़ कल्पना नहीं थीं, संस्कारों की सीढ़ियाँ थीं, दादी के अल्फ़ाज़ में तजुर्बे का शहद था, नाना की नज़र में मोहब्बत की छाँव, वो थपकियाँ जिनमें नींद उतरती थी और वो दुआएँ जिनमें हर रुसवाई और परेशानियों का हल था, अब नए दौर में हमारे पास तरक्क़ी है, मोबाइल स्क्रीन पर चमकती दुनिया है मगर उसमें पहचान की वो गहराई, अपनायत की वह सच्चाई और पुरखों की बसी हुई मोहब्बत का जादू नहीं, बच्चों के पास आज खिलौने हैं, गेम्स हैं, मगर वो मिट्टी नहीं जिसमें पेड़ से आम तोड़कर खाना या नानी के साथ कुएं से पानी भरना, अब घरों में ए सी हैं मगर कभी वो ठंडी हवाएँ जो चौखट पर बैठकर मिलती थीं, अब कहाँ से आएँ, क्या नई पीढ़ी जानती है कि तिरछी धूप में भागते हुए मैदान की कोई क्रिकेट की पिच, शाम को चौपाल पर बुज़ुर्गों के हाथों की बनी बीनुरी, नानी के तेल वाले बाल और दादी की आग़ोश, ये सब हमारी संस्कृति की जान थे, वो रिश्ता जो ज़िंदा रखता था घर की दीवारों को, संस्कार जिनमें तहज़ीब की बुनियाद थी, शायद अब वक़्त है कि हम फ़िर से लौटें, अपने बच्चों को उन पुरानी कहानियों से मिलाएँ जिनमें खुद्दारी भी है, मोहब्बत भी और वफ़ादारी भी, आज जब रिश्ते मोबाइल की घंटियों में बँध कर रह गए हैं, उस वक़्त हम सबको घर के बुज़ुर्गों से, उनकी नज़रों से, उनकी दुआओं से फ़िर से जुड़ जाना चाहिए ताकि अगली नस्ल केवल तरक्क़ी ही नहीं, तहज़ीब और संस्कार भी सीखे, क्योंकि असल हिंदुस्तान तो उन बुज़ुर्गों की झुर्रियों, दादी के तरन्नुम और नाना-नानी के अल्फ़ाज़ में ही बसता है, वही हमारे वजूद की पहचान है, और वही वो कहानी है जो हर पीढ़ी को फ़िर से सुनाई जानी चाहिए।

स्क्रीन के साए में खोता बचपन: परिवार की भूमिका

आज का युग तकनीक का युग है, जिसने बच्चों के जीवन को अभूतपूर्व गति और संभावनाओं से भर दिया है। स्मार्टफोन की चमक, टैबलेट की सहजता और इंटरनेट की असीम दुनिया ने ज्ञान के नए द्वार खोले हैं, लेकिन साथ ही एक ऐसी छाया भी डाली है, जो बच्चों के बचपन को धीरे-धीरे लील रही है। तकनीकी लत अब महज आदत नहीं, बल्कि एक गंभीर चुनौती बन चुकी है, जो बच्चों के मानसिक, शारीरिक और सामाजिक विकास को गहराई से प्रभावित कर रही है। यह लत उन्हें स्क्रीन की आभासी दुनिया में कैद कर रही है, जहाँ वास्तविक जीवन की रंगत, रिश्तों की गर्माहट और प्रकृति का स्पर्श धीरे-धीरे विलुप्त हो रहा है। माता-पिता और समाज के लिए यह समझना अनिवार्य है कि यह लत क्यों गहरा रही है और इसे नियंत्रित करने के लिए प्रभावी कदम कैसे उठाए जाएँ।

तकनीकी लत का सबसे गहरा असर बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। लगातार स्क्रीन टाइम से चिंता, अवसाद और अकेलेपन की भावना बढ़ रही है। मनोवैज्ञानिक शोध बताते हैं कि डिजिटल उपकरणों पर अत्यधिक निर्भरता बच्चों की एकाग्रता, रचनात्मकता और आत्म-नियंत्रण को क्षीण करती है। सोशल मीडिया और गेमिंग ऐप्स डोपामाइन के स्तर को प्रभावित करते हैं, जिससे बच्चों में त्वरित संतुष्टि की लालसा बढ़ती है, जो धीरे-धीरे उनके धैर्य और संयम को कमजोर करती है। शारीरिक स्वास्थ्य पर भी इसका प्रभाव गंभीर है। लंबे समय तक स्क्रीन के सामने बैठने से दृष्टि दोष, नींद की अनियमितता और मोटापा जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। एक अध्ययन के अनुसार, 8 से 18 वर्ष के बच्चे औसतन 7-8 घंटे प्रतिदिन स्क्रीन पर बिताते हैं, जिससे उनकी शारीरिक गतिविधियाँ और स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हो रहा है।

सामाजिक स्तर पर, तकनीक बच्चों को उनके परिवार और दोस्तों से काट रही है। पहले जहाँ बच्चे खेल के मैदानों में हँसी-खेल के साथ सामाजिक बंधन बनाते थे, अब वे अपने कमरों में स्क्रीन के साथ अकेले कैद हैं। यह सामाजिक अलगाव उनकी सहानुभूति, संवाद कौशल और भावनात्मक जुड़ाव को कमजोर कर रहा है। सोशल मीडिया पर प्रदर्शित अवास्तविक छवियाँ और तुलनात्मक संस्कृति बच्चों में आत्मविश्वास की कमी और हीनभावना को जन्म दे रही है, खासकर किशोरावस्था में, जब वे अपनी पहचान तलाश रहे होते हैं। यह दबाव उनके मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डालता है, जिसे अनदेखा करना खतरनाक हो सकता है।

इस चुनौती का समाधान परिवार और समाज के सहयोग से ही संभव है। तकनीक को पूरी तरह नकारना या बच्चों से छीन लेना व्यावहारिक नहीं है। इसके बजाय, माता-पिता को तकनीक के सकारात्मक और रचनात्मक उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। उदाहरण के लिए, डुओलिंगो, खान अकादमी या कोडिंग गेम्स जैसे वैज्ञानिक और शैक्षिक टूल बच्चों की रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ा सकते हैं। माता-पिता को बच्चों के डिजिटल व्यवहार की निगरानी से ज्यादा, उन्हें तकनीक का जिम्मेदार और संतुलित उपयोग सिखाने पर ध्यान देना चाहिए। परिवार के साथ गुणवत्तापूर्ण समय, बाहरी गतिविधियों को प्रोत्साहन और खुला संवाद इस लत को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। तकनीक को बच्चों का शत्रु नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली साधन बनाया जा सकता है, जो उनकी शिक्षा, रचनात्मकता और विकास को नई ऊँचाइयों तक ले जाए, बशर्ते इसका उपयोग संतुलित और जागरूक तरीके से हो।

आज के डिजिटल युग में तकनीकी लत से निपटने के लिए पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर सजग और रचनात्मक प्रयासों की आवश्यकता है। परिवार बच्चों को इस लत से बचाने में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। माता-पिता को बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण, तकनीक-मुक्त समय बिताने की आदत विकसित करनी चाहिए। यह समय खेलकूद, कहानी साझा करने, बागवानी, खाना पकाने या बोर्ड गेम्स जैसे रचनात्मक कार्यों में व्यतीत हो सकता है। उदाहरण के लिए, सप्ताह में एक "टेक-फ्री डे" निर्धारित करना, जहाँ परिवार एकजुट होकर प्रकृति या सामूहिक गतिविधियों का आनंद ले, बच्चों की स्क्रीन पर निर्भरता को स्वाभाविक रूप से कम कर सकता है। शोध दर्शाते हैं कि भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ परिवार बच्चों में डिजिटल उपकरणों की लत को कम करता है, क्योंकि वे परिवार के साथ समय को अधिक मूल्यवान समझने लगते हैं। इसके साथ ही, सामुदायिक गतिविधियाँ जैसे खेल क्लब, नाट्य मंडलियाँ, या पर्यावरण संरक्षण से जुड़े कार्यक्रम बच्चों को सामाजिक और रचनात्मक रूप से सक्रिय रखते हैं, जिससे तकनीक की ओर उनका झुकाव कम होता है।

तकनीकी लत से निपटने का एक अनिवार्य पहलू है बच्चों में आत्म-नियंत्रण और समय प्रबंधन की कला सिखाना। माता-पिता को बच्चों को प्राथमिकताएँ तय करने और डिजिटल उपकरणों का सीमित, उद्देश्यपूर्ण उपयोग सिखाना चाहिए। छोटे-छोटे कदम, जैसे रात के खाने के समय फोन बंद रखना या सोने से पहले एक स्क्रीन-फ्री घंटा, बच्चों में संतुलित आदतें विकसित कर सकते हैं। लेकिन यह तभी प्रभावी होगा, जब माता-पिता स्वयं अनुशासित व्यवहार का उदाहरण पेश करें। यदि माता-पिता दिनभर स्क्रीन से चिपके रहते हैं, तो बच्चे भी वही आदत अपनाएँगे। इसलिए, परिवार में स्पष्ट डिजिटल अनुशासन नियम लागू करना आवश्यक है, जैसे भोजन के समय उपकरणों का उपयोग निषेध करना या रात में सभी डिवाइस एक जगह रखना। यह न केवल बच्चों, बल्कि पूरे परिवार के लिए एक स्वस्थ डिजिटल संस्कृति को बढ़ावा देता है। एक और महत्वपूर्ण, पर अक्सर अनदेखा पहलू, है बच्चों की भावनात्मक जरूरतों को समझना। तकनीकी लत कई बार भावनात्मक रिक्तता, तनाव या अकेलेपन का परिणाम होती है। माता-पिता को बच्चों से खुला संवाद करना चाहिए, उनकी चिंताओं को सुनना चाहिए और उन्हें यह विश्वास दिलाना चाहिए कि वे सुरक्षित और समर्थित हैं। यह भावनात्मक जुड़ाव बच्चों को स्क्रीन की आभासी दुनिया से बाहर निकालकर वास्तविक रिश्तों की गर्माहट की ओर ले जाता है। स्कूलों की भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका है। डिजिटल साक्षरता, समय प्रबंधन और तकनीक के जिम्मेदार उपयोग पर कार्यशालाएँ बच्चों को शिक्षित कर सकती हैं। शिक्षक और स्कूल सामुदायिक गतिविधियों को प्रोत्साहित कर बच्चों को रचनात्मक और सामाजिक रूप से जोड़ सकते हैं।

तकनीकी लत का समाधान केवल बच्चों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज का दायित्व है। परिवार मिलकर ऐसी संस्कृति विकसित कर सकता है, जो तकनीक के लाभों को अपनाए, पर उसकी लत से बचे। यह चुनौती धैर्य, समझदारी और सामूहिक प्रयास माँगती है। तकनीक को बच्चों के जीवन का हिस्सा बनने देना चाहिए, लेकिन उसे उनके जीवन का केंद्र नहीं बनने देना चाहिए। परिवार का साथ, मार्गदर्शन और रचनात्मक गतिविधियों में सहभागिता बच्चों को तकनीकी लत से मुक्त करने की कुंजी है।

यह समझना जरूरी है कि तकनीक एक शक्तिशाली उपकरण है, न कि जीवन का आधार। बच्चों को यह सिखाया जाना चाहिए कि वे तकनीक का उपयोग अपनी रचनात्मकता, शिक्षा और सपनों को साकार करने के लिए करें। जब परिवार और समाज एकजुट होकर इस दिशा में काम करते हैं, तो बच्चे न केवल तकनीकी लत से मुक्त हो सकते हैं, बल्कि एक स्वस्थ, संतुलित और प्रेरणादायक जीवन की ओर भी अग्रसर हो सकते हैं। यह यात्रा चुनौतीपूर्ण हो सकती है, लेकिन परिवार के प्यार, समर्थन और सही मार्गदर्शन के साथ, यह निश्चित रूप से संभव है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

नौहझील क्षेत्र के गांव हसनपुर में भगवान श्री राम की भव्य बारात बड़ी धूमधाम धूमधाम से निकाली गई

परिवहन विशेष न्यूज

नौहझील। क्षेत्र के गांव हसनपुर में भगवान श्री राम की भव्य बारात धूमधाम से निकाली गई। बारात में भगवान गणेश, राम, लक्ष्मण, भरत और अन्य देवताओं की झांकियां पर लोगो ने जगह जगह पूजन कर बारात का स्वागत कर पुष्प वर्षा की।

गांव की मुख्य सड़कों पर बैंड और डीजे की धुनों पर लोग झूमते दिखाई दिए।

नौहझील के गांव हसनपुर में हर वर्ष की भांति बैंड बाजे व डीजों के साथ बड़ी धूमधाम से राम बारात निकाली गई गांव में मिठाई व फल वितरण किए गए। भगवान राम की बारात देखने के लिए गांव सहित आस पास के गांव के राहगीर लोगों की भीड़ से घरों की छत व गलियां भरी पड़ी थी। इस मौके पर पुष्पेंद्र फौजदार दिनेश चौधरी ,कुल्ला चौधरी बब्बू चौधरी गोविंदा फौजदार,विजय डागुर,छोटू डीलर, मनोज कृष्णप्रेमी,संजय शर्मा जी फकीरा डागुर,हेमंत फौजदार,एवं समस्त ग्रामवासी मौजूद रहे।

भारत-ब्रिटेन नई आर्थिक साझेदारी की दास्तान -प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर की ऐतिहासिक सफ़ल भारत यात्रा 2025- व्यापार निवेश ,तकनीक और विश्वास की नई परिभाषा

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर ब्रिटिश प्रधानमंत्री सर कीर स्टार्मर की 9-10 अक्टूबर 2025 की भारत यात्रा ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति और वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। यह यात्रा केवल दो दिनों की औपचारिक मुलाक़ात नहीं, बल्कि 21वीं सदी के वैश्विक व्यापारिक समीकरणों में भारत की निर्णायक भूमिका को स्वीकार करने की ठोस अभिव्यक्ति है।भारतीय पीएम के निमंत्रण पर भारत पहुंचे स्टार्मर का मुंबई एयरपोर्ट पर भव्य स्वागत हुआ, जहां से इस यात्रा की शुरुआत ने एक ऐसा संदेश दिया ₹भारत अब वैश्विक शक्ति संतुलन का निर्णायक केंद्र है₹ ।पीएम ने ब्रिटेन पीएम के साथ मुलाकात की एक तस्वीर साझा करते हुए कहा कि भारत और ब्रिटेन के रिश्ते तेजी से आगे बढ़ रहे हैं और₹नई ऊर्जा से भरे हुए हैं₹एक तस्वीर में पीएम मोदी ब्रिटिश पीएम के साथ एक ही कार में नजर आए मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यहमानता हूं कि अमेरिका द्वारा भारत को डेड इकोनामी कहे जाने व 100 प्रतिशत तक टैरिफ लगाने के बाद भारत-यूके रिश्तों का नया दौर शुरू हो गया है,व्यापार, निवेश और प्रौद्योगिकी पर केंद्रित कूटनीति ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत डेट इकोनामी नहीं है,आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी क़े सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत-ब्रिटेन नई आर्थिक साझेदारी की दास्तान,प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर की ऐतिहासिक सफ़ल भारत यात्रा 2025- व्यापार,निवेश, तकनीक और विश्वास की नई परिभाषा।

साथियों बात अगर हम ब्रिटेन पीएम की दो दिवसीय यात्रा की करें तो,यह ऐसे समय में हो रही है जब भारत और ब्रिटेन दोनों ही अपने-अपने आर्थिक और रणनीतिक भविष्य के पुनर्संरचना के दौर से गुजर रहे हैं। यात्रा का प्रमुख उद्देश्य व्यापार, निवेश और प्रौद्योगिकी सहयोग को सुदृढ़ करना है। ब्रिटिश पीएम के साथ आए उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल में 125 से अधिक शीर्ष सीईओ, अग्रणी उद्यमी, विश्वविद्यालयों के कुलपति और सांस्कृतिक संस्थानों के प्रमुख शामिल हैं, यह अपने आप में इस यात्रा के महत्व को रेखांकित करता है।यह केवल एक राजनयिक यात्रा नहीं, बल्कि ब्रिटिश व्यापारिक समुदाय का भारत के प्रति बदलता नजरिया दर्शाने वाली ऐतिहासिक घटना है। ब्रिटेन के कई औद्योगिक घराने अब भारत को मैन्युफैक्चरिंग और टेक्नोलॉजी हब के रूप में देख रहे हैं, न कि केवल एक उपभोक्ता बाज़ार के रूप में। "डेड इकोनॉमी" कहने वालों को करारा जवाब हैं।

साथियों बात अगर हम अमेरिकी राष्ट्रपति द्वाराकुछ समय पहले भारत की अर्थव्यवस्था को "डेड इकोनामी" कहकर प्रश्न उठाए गए थे। वहीं भारत पर 100 प्रतिशत टैरिफ लगाने के बाद, वैश्विक व्यापार जगत में भारत की नीतियों को लेकर बहस तेज़ हो गई थी।लेकिन ब्रिटिश प्रधानमंत्री की यह यात्रा उस सोच को सीधा जवाब देती है। ब्रिटिश पीएम ने मुंबई में उतरते ही कहा कि "भारत 2028 तक दुनियाँ की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है, और ब्रिटेन उस यात्रा का मजबूत भागीदार बनेगा।"यह बयान न केवल आर्थिक विश्वास का प्रतीक है, बल्कि यह उन तमाम संशयवादियों के लिए एक संदेश है जो भारत की विकास गाथा पर सवाल उठाते रहे हैं।

साथियों बातें कर हम ब्रिटेन के जेम्बो डेलिगेशन की करें तो यह विश्वास की कूटनीतिक मिसाल हैं, इतिहास में शायद ही ऐसा हुआ हो जब ब्रिटेन का इतना बड़ा प्रतिनिधिमंडल किसी देश की यात्रा पर आया हो। यह "जेम्बो डेलिगेशन"भारत-ब्रिटेन संबंधों की गहराई और गंभीरता दोनों को दर्शाता है। 125 से अधिक शीर्ष सीईओ और शिक्षाविदों के साथ प्रधानमंत्री स्टार्मर का आना इस बात की पुष्टि करता है कि ब्रिटेन भारत को एक ऐसे रणनीतिक सहयोगी के रूप में देख रहा है, जो उसके पोस्ट-ब्रेक्सिट युग में वैश्विक प्रभाव को बनाए रख सकता है।इस प्रतिनिधिमंडल में ऑक्सफोर्ड कैम्ब्रिज और लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के कुलपति शामिल हैं, जो शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में भारत के साथ साझेदारी की नई संभावनाओं पर विचार करेंगे। वहीं, तकनीकी कंपनियों के प्रमुख भारत में एआई, ग्रीन एनर्जी, साइबर सिक्योरिटी और डिजिटल इनोवेशन जैसे क्षेत्रों में निवेश की नई संभावनाओं को तलाश रहे हैं।

साथियों बात अगर हम मोदी- स्टार्मर शिखर वार्ता साझेदारी की नई परिभाषा की करें तो नई दिल्ली में मोदी और कीर स्टार्मर के बीच हुई शिखर बैठक में व्यापार, प्रौद्योगिकी, सुरक्षा और संस्कृति को केंद्र में रखकर गहन चर्चा हुई। दोनों नेताओं ने यह स्पष्ट किया कि भारत-यूके फ्री ट्रेड एग्रीमेंट को शीघ्र अंतिम रूप दिया जाएगा।बैठक में भारत ने ब्रिटेन को रक्षा उत्पादन, अंतरिक्ष तकनीक और ग्रीन एनर्जी मिशनों में साझेदारी के लिए आमंत्रित किया। वहीं ब्रिटेन ने भारत में अपने निवेश को तीन गुना बढ़ाने का आश्वासन दिया। "इनोवेशन पार्टनरशिप"के तहत दोनों देशों के बीच स्टार्टअप्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्रों में संयुक्त रिसर्च पर सहमति बनी।

साथियों बात अगर हम भारत की ओर झुकता ब्रिटेन, वैश्विक शक्ति समीकरण में बदलाव कोसमझने की करें तो, ब्रिटेन पीएम की यात्रा ब्रिटिश विदेश नीति में एक मौलिक परिवर्तन का प्रतीक है। यह वही ब्रिटेन है जिसने दशकों तक भारत को ₹डेवलपिंग नेशन₹ की दृष्टि से देखा था। लेकिन अब यह मान्यता बदल चुकी है। भारत को ब्रिटेन अब एक इक्वल पार्टनर, एक टेक्नोलॉजिकल पॉवरहाउस और एक वैश्विक निवेश गंतव्य के रूप में स्वीकार कर रहा है।ब्रेक्सिट के बाद ब्रिटेन को यूरोपीय संघ के बाहर नए आर्थिक साझेदारों की तलाश थी। ऐसे में भारत उसकी पहली प्राथमिकता बनकर उभरा है। ब्रिटिश मीडिया इसे "यूकेस पीवोट टू इंडिया "कह रहा है।

साथियों बात अगर हम भारत के लिए अवसर और जिम्मेदारी दोनों को समझने की करें तो,यह यात्रा भारत के लिए एक बड़ा अवसर लेकर आई है, लेकिन इसके साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी है। भारत को अब यह साबित करना होगा कि वह केवल निवेश आकर्षित करने वाला देश नहीं, बल्कि विनिर्माण, नवाचार और नीति स्थिरता के लिहाज से विश्वसनीय साझेदार भी है।भारत के लिए यह समय है कि वह अपने मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, और स्टार्टअप इंडिया जैसे कार्यक्रमों को ब्रिटिश सहयोग के साथ वैश्विक स्तर पर पहुंचाए। विशेष रूप से एआई, सेमीकंडक्टर, और क्लाइमेट टेक्नोलॉजी में भारत की भूमिका निर्णायक बन सकती है।

साथियों बात अगर हम संस्कृति और शिक्षा,साझेदारी के मानवीय आयाम को समझने की करें तो,भारत-ब्रिटेन संबंध केवल अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं हैं। दोनों देशों के बीच संस्कृति, शिक्षा और सामाजिक मूल्य का भी गहरा जुड़ाव है। इस यात्रा में "कल्चरल एक्सचेंज मिशन" पर भी सहमति बनी, जिसके तहत ब्रिटेन और भारत के बीच कलाकारों, फिल्म निर्माताओं और विद्यार्थियों के आदान-प्रदान को बढ़ावा मिलेगा।ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में भारतीय छात्रों की संख्या पहले ही रिकॉर्ड स्तर पर है। अब ब्रिटेन ने भारत को "प्राथमिक शिक्षा भागीदार" के रूप में मान्यता देने का निर्णय लिया है। इसके तहत उच्च शिक्षा में द्विपक्षीय डिग्री कार्यक्रम, स्कॉलरशिप्स और कोर्स एक्सचेंज की शुरुआत होगी।

साथियों बात अगर हम यात्रा का ऐतिहासिक महत्व भविष्य के वैश्विक समीकरणों की झलक, यह यात्रा केवल भारत और ब्रिटेन के संबंधों की मजबूती का प्रतीक नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति समीकरणों में एशिया की केंद्रीय भूमिका को भी स्थापित करती है।जब दुनियाँ अमेरिका- चीन प्रतिस्पर्धा में उलझी हुई है, तब ब्रिटेन का भारत की ओर झुकाव इस बात का संकेत है कि 21वीं सदी का आर्थिक केंद्र अबएशिया की धरती पर स्थित है।भारत इस साझेदारी से न केवल व्यापारिक लाभ प्राप्त करेगा, बल्कि वह पश्चिमी देशों के साथ अपने कूटनीतिक संतुलन को भी और मजबूत करेगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्वास, साझेदारी और भविष्य की एक नई कहानी,ब्रिटिश पीएम की भारत यात्रा 2025 इतिहास में "इकोनॉमिक डिप्लोमेसी के पुनर्जागरण" के रूप में दर्ज होगी। इस यात्रा ने दिखा दिया कि भारत अब किसी के समर्थन का आकांक्षी नहीं, बल्कि साझेदारी का निर्णायक केंद्र बन चुका है।ब्रिटेन के लिए यह यात्रा भारत के प्रति विश्वास की पुनर्स्थापना है, वहीं भारत के लिए यह अपनी वैश्विक स्थिति को और ऊंचा उठाने का अवसर। व्यापार, शिक्षा, तकनीक और संस्कृति,इन चारों स्तंभों पर खड़ी यह नई साझेदारी आने वाले दशक में विश्व की आर्थिक दिशा तय कर सकती है।भारत और ब्रिटेन अब केवल साझेदार नहीं, बल्कि वैश्विक पुनरुत्थान के सह-निर्माता हैं, एक ऐसा अध्याय जो आने वाली पीढ़ियाँ "न्यू ऐज ऑफ़ इंडो - ब्रिटिश पार्टनरशिप " के नाम से याद करेंगी।

क़र विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यमा सीए(एटीसी)

सूचना का अधिकार अधिनियम- 2005 के 20 साल पूरे, पारदर्शिता पर सवाल, सूचना का अधिकार हुआ कमजोर ।

नरेश गुणपाल

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 को आज 20 वर्ष पूरे हो गए है। इस कानून से कई पीड़ितों को न्याय मिला। भ्रष्टाचार के कई मामले उजागर हुए तथा शासन-प्रशासन के कार्यो में पारदर्शिता आई। इस कानून की वजह से अधिकारी जवाबदेह बने रहे , लेकिन अब आरटीआई कानून पहले जितना प्रभावशाली नहीं रहा है ।

जन सूचना अधिकार अधिनियम का सफर

12 अक्टूबर 2005, यही वह तारीख है जब भारत में सूचना का अधिकार अधिनियम लागू हुआ था। यह कानून नागरिकों को शासन और प्रशासन से जुड़ी सूचनाएं प्राप्त करने का संवैधानिक अधिकार देता है। इस कानून के ज़रिए सरकारी कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया गया, सूचना के अधिकार को कमजोर करने की साजिश चल रही है। कई महत्वपूर्ण सार्वजनिक सूचनाओं को अब निजी जानकारी बताकर रोका जा रहा है।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 केवल कानून ही नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा है। सूचना का अधिकार अधिनियम जनता की ताकत है। लेकिन आज इसे खोखला किया जा रहा है। इसे कमजोर करने का मतलब है जनता की आवाज़ को दबाना । पहले आम नागरिकों को मंत्रालयों, योजनाओं, नियुक्तियों और खर्चों से जुड़ी सूचनाएं आसानी से मिलती जाति थीं, लेकिन अब कई विभागों ने इन्हें गोपनीय कर दिया है।

जन सूचना अधिकार अधिनियम-2005 व्यवस्था की खामियां:

हाल ही में एक अध्ययन में पाया गया कि देशभर में जन सूचना अधिकार अधिनियम के सैकड़ो आवेदन लंबित हैं और सूचना आयोगों की जवाबदेही घटती जा रही है। कई आयोगों में पद खाली हैं, जिससे अपीलकर्ताओं को महीनों तक जवाब नहीं मिल पा रहा। यह स्थिति दर्शाती है कि पारदर्शिता प्रणाली पर गहरा दबाव है। यही चिंता आज 20वीं वर्षगांठ पर और गहरी हो गई है ।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 ने दो दशकों में देश के लाखों नागरिकों को सरकारी सिस्टम से सीधे संवाद का अवसर दिया। फाइलों में छिपे सच को उजागर करने से लेकर भ्रष्टाचार पर रोक लगाने तक, यह कानून लोकतंत्र की पारदर्शी आत्मा बना रहा है ।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 का प्रयोग करना बेहद आसान है। सादे कागज पर आवेदन के साथ 10 रुपए का आईपीओ आवेदन शुल्क देकर किसी भी सरकारी महकमों से सूचनाएं मांगी जा सकती हैं और 30 दिनों के अंदर सूचनाएं मुहैया कराना विभाग के अधिकारी के लिए कानूनी रूप बाधित हैं।

नरेश गुणपाल आरटीआई एक्टिविस्ट

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : नए भारत के सतत उत्थान के लिए अपरिहार्य

डॉ.बालमुकुंद पांडे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व का सबसे बड़ा सामाजिक- सांस्कृतिक संगठन है। वह भारत की उन्नति सुनिश्चित करने और संस्कृति के निर्माण को बल देने के साथ - साथ भारतीय समाज में राष्ट्रीयता का बोध जगाने को लेकर प्रतिबद्ध है। अपने गठन के बाद से ही संघ राष्ट्र - निर्माण का विराट उद्देश्य लेकर चला। इस पुनीत उद्देश्य की पूर्ति के लिए संघ ने व्यक्ति - निर्माण से राष्ट्र - निर्माण का मार्ग चुना और इसके लिए जो कार्यपद्धति चुनी ,वो थी नित्य नियमित चलने वाली शाखाएं। संघ की शाखाएं व्यक्ति निर्माण की यज्ञवेदी हैं। राष्ट्र - निर्माण का महान उद्देश्य,व्यक्ति निर्माण का स्पष्ट पथ और शाखा जैसी सरल,जीवंत कार्यपद्धति - यही कालांतर में संघ की नींव बना।

संघ के विभिन्न आनुषांगिक संगठन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक क्षेत्रों में सक्रिय हैं। वे समाज - सेवा व राष्ट्र- सेवा के साथ-साथ देश की एकता और अखंडता के लिए समर्पित हैं ।चिंतकों, विचारकों, प्रचारकों ,संतो, मनीषियों एवं बुद्धिजीवियों के भारतीयता के प्रति समर्पित होने के पीछे विवेकी शक्ति के रूप में संघ एवं उसके विभिन्न संगठन हैं। संघ अपने प्रारंभिक वर्षों से प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय संस्कृति, एवं सभ्यता को सुरक्षित करने में प्रयासरत था जिसको अंग्रेजों के 200 वर्षों के शासनकाल में चोटिल किया गया था एवं मुगलों के लंबे शासनकाल में इन मूल्यों एवं आदर्शों को प्रताड़ित किया गया। संघ ने इन धरोहरों की सुरक्षा के लिए बहुत ज्यादा संघर्ष किया। संघ वर्तमान में भारतीय समाज के समक्ष जो चुनौतियां हैं, उनका सामना करने के लिए हर - संभव प्रयत्न कर रहा है.

संघ ने ₹पंच परिवर्तन ₹ को अपना संकल्प बनाया हैं ,स्व - बोध (औपनिवेशिक मानसिकता त्यागकर स्वदेशी अपनाना), सामाजिक समरसता(वंचित वर्गों के लिए समानता, स्वतंत्रता, एवं न्याय को सुनिश्चित करना), कुटुंब - प्रबोधन (पारिवारिक मूल्यों को सशक्त करना), नागरिक शिष्टाचार(नागरिक कर्तव्यों का पालन), एवं पर्यावरण संरक्षण(प्रकृति की रक्षा) ।संघ का उद्देश्य भारतीय समाज का निर्माण करते हुए राष्ट्र का निर्माण करना है।

संघ ने देश के प्रत्येक क्षेत्र व समाज के प्रत्येक आयाम को उत्प्रेरित किया है। संघ के ' अनुषांगिक संगठन' जीवन के हर पक्ष से जुड़कर राष्ट्र की सेवा करते हैं। इतिहास ,शिक्षण, श्रमिक समाज कल्याण ,आदिवासी कल्याण, महिला सशक्तिकरण, समाज- जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में संघ निरंतर कार्य करता रहा है। विविध क्षेत्र में काम करने वाले हर संगठन का उद्देश्य एक ही है - राष्ट्र प्रथम।

संघ अपने अस्तित्व में आया ,उसी समय से उसकी प्राथमिकता देश सेवा रही । स्वतंत्रता संग्राम के समय डॉ.हेडगेवार समेत अनेक कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में हिस्सा लिया। कई बार जेल गए और बहुत कष्ट सहे। स्वतंत्रता की लड़ाई में कितने ही स्वतंत्रता सेनानियों को संघ संरक्षण देता रहा। उनके साथ कंधा से कंधा मिलाकर काम करता रहा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महान योगदान है।

संघ ने राष्ट्र के नैतिक और सांस्कृतिक पथ को नवीन आयाम एवं दिशा प्रदान की है। अपने असाधारण कार्य क्षमता, विवेकी कौशल एवं रचनात्मक कार्यक्रमों से राष्ट्र की सेवा की है और भारत माता के प्रति सच्ची समर्पण भावना, व्यक्तिगत त्याग एवं उद्देश्य की स्पष्टता से भारतमाता को परम वैभवशाली बनाने में समर्पित रहा है। संघ के स्वयंसेवक शाखाओं के माध्यम से एवं अपने विवेकी कौशल से निरंतर कार्यकर्ताओं से संपर्क एवं संवाद करके राष्ट्र के लिए समर्पित रहते हैं। श्रेष्ठ कार्य पद्धति और बदलते समय के प्रति खुले दिमाग एवं मन से काम करना स्वयंसेवकों की ऊर्जा है। उनके विचारों में स्पष्टता ,कार्यों में भरपूर ऊर्जा, एवं लक्ष्य के प्रति मजबूत संकल्प संघ की विशिष्ट विशेषता है।

विभाजन- विभीषिका की पीड़ा ने लाखों परिवारों को बेघर कर दिया। तत्कालीन दुरूह परिस्थितियों में भी स्वयंसेवकों ने शरणार्थियों की सेवा की। स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों के कष्ट को हरना ,यही स्वयंसेवक की पहचान है। आज भी प्राकृतिक आपदा में हर जगह स्वयंसेवक सबसे पहले पहुंचने वाले में से एक रहते हैं।

मायावती ने रैली से क्या संदेश दिया

राजेश कुमार पासी

बहुजन समाज पार्टी सुप्रीमो मायावती की 9 अक्टूबर रैली में जबरदस्त भीड़ जुटी, पूरा मैदान भर गया। उनके समर्थक और कार्यकर्ता रात को ही रैली स्थल पर जुटने शुरू हो गए थे। दूसरी पार्टियों की रैली में लोगों को लेकर आना पड़ता है लेकिन बसपा की विशेषता यह है कि उसकी रैली में लोग खुद आते हैं । इस रैली में इतने लोग आएंगे, इसकी उम्मीद शायद मायावती को भी नहीं रही होगी । इसकी वजह यह भी हो सकती है कि बसपा के समर्थक और कार्यकर्ता वर्षों से ऐसी रैली का इंतजार कर रहे थे। वो बहुत परेशान हैं कि मायावती इतनी ज्यादा निष्क्रिय क्यों हो गई है। उनकी निष्क्रियता की वजह से समर्थक और कार्यकर्ता समझ नहीं पा रहे हैं कि पार्टी का भविष्य क्या होने वाला है । इस रैली ने दिखा दिया कि बसपा के समर्थक आज भी पार्टी के साथ खड़े हुए हैं ।

सवाल यह है कि क्या इस विशाल रैली से बसपा की चुनावी संभावनाओं पर कोई असर होने वाला है । बसपा का जनाधार लगातार कम होता जा रहा है । गैर-जाटव दलितों के ज्यादातर वोट भाजपा के खाते में जा चुके हैं । 2024 के लोकसभा चुनाव में उनके जाटव वोट बैंक में भी सेंध लग गई है । आज यूपी की राजनीति में भाजपा और समाजवादी पार्टी के बीच ही मुख्य मुकाबला है । बसपा की कमजोरी की बड़ी वजह यह है कि मुस्लिम समाज उससे टूटकर पूरी तरह से समाजवादी पार्टी से जुड़ चुका है । मुस्लिम समाज का राजनीतिक समर्थन हमेशा उस पार्टी के साथ रहता है जो भाजपा को हराने की काबिलियत रखती हो । 2007 में मुस्लिम समाज ने मायावती का साथ दिया था लेकिन 2012 में वो समाजवादी पार्टी के साथ चला गया । इसकी बड़ी वजह यह थी कि मायावती मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति नहीं करती हैं ।

उनकी राजनीति की एक विशेषता उन्हें दूसरे विपक्षी दलों से अलग करती है जिसके कारण भी मुस्लिम समाज बसपा से दूर जा चुका है । मायावती पूरी तरह से सेकुलर हैं और उन्होंने अपनी पार्टी में मुस्लिम समाज को समुचित प्रतिनिधित्व दिया है । समस्या यह है कि वो सेक्युलर होने के बावजूद दूसरे विपक्षी दलों की तरह राष्ट्र विरोध और हिन्दू विरोध की राजनीति नहीं करती है । समाजवादी पार्टी अपना हिन्दू विरोधी स्वभाव बार-बार प्रकट करती रहती है जिससे मुस्लिम समाज खुश रहता है ।

वर्तमान राजनीतिक हालातों में बसपा का पुनरुत्थान होना मुश्किल लगता है । अब सवाल उठता है कि 9 साल बाद मायावती ने अपना शक्ति प्रदर्शन क्यों किया है । वो जानती हैं कि पार्टी को दोबारा खड़ा करना आसान नहीं है. इसके बावजूद उन्होंने इतनी बड़ी रैली का आयोजन किया है । ये महत्वपूर्ण नहीं है कि नेता क्या कहता है. ये ज्यादा महत्वपूर्ण है कि नेता क्या कहना चाहता है । उन्होंने अपने उत्साहित समर्थकों को खुश करने के लिए कहा कि वो अब उनको ज्यादा समय देंगी और ज्यादा कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगी । उन्होंने कहा कि आप लोग भ्रमित न हों, 2027 में हमें 5वीं बार बसपा की सरकार बनानी है । इसके लिए सपा, भाजपा और कांग्रेस जैसी जातिवादी पार्टियों के षडयंत्रों से सजग रहना होगा । दूसरी तरफ उन्होंने समाजवादी पार्टी और कांग्रेस की जबरदस्त आलोचना की और यूपी की भाजपा सरकार का आभार जताया ।

बिहार चुनाव : छोटे राजनीतिक दलों की रहेगी "बड़ी" भूमिका

प्रदीप कुमार वर्मा

प्राचीन मगध के नाम से देश और दुनिया मे चर्चित बिहार के विधानसभा चुनाव के लिए रणभेरी बज चुकी है। चुनावी समर के लिए रणनीति के योद्धाओं ने भी अपनी तलवार निकल ली हैं। बिहार चुनाव में जनता दल यूनाइटेड एक बार फिर से भाजपा के साथ एनडीए गठबंधन में रहकर चुनावी तैयारी में जुटी है। वहीं, बिहार के मुख्य विपक्षी दल के रूप में राष्ट्रीय जनता दल अपनी सहयोगी कांग्रेस तथा अन्य पार्टियों के साथ महा गठबंधन के तले चुनावी समर की तैयारी में है। बिहार विधानसभा चुनाव में ₹सीएम फेस₹ के नाम पर इन दिनों सबसे बड़ा घमासान है। एनडीए के प्रमुख घटक भाजपा ने जहां एक बार फिर से नीतीश कुमार की कमान में ही चुनाव लड़ने का निर्णय करते हुए उन्हें ही सीएम फेस बनाने का एलान किया है जबकि इसके उलट महागठबंधन में अभी भी सीएम फेस के नाम पर सहमति नहीं होने से कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल में चर्चाओं का दौरा चल रहा है।

बिहार विधानसभा चुनाव में वैसे तो मुख्य मुकाबला सत्तारूढ़ एनडीए और विपक्षी महागठबंधन के बीच होना है लेकिन बिहार चुनाव में नए राजनीतिक दलों की ₹एंट्री₹ से इस बार का बिहार चुनाव काफी रोचक होने जा रहा है। बिहार चुनाव में दोनों मुख्य गठबंधनों के अलावा भी कई राजनीतिक दल मैदान में ताल ठोक रहे हैं। ऐसा माना जा रहा है कि करीब आधा दर्जन नए राजनीतिक दल अपने ताकत से बिहार चुनाव को न केवल प्रचार के दौरान बल्कि मतगणना के बाद सरकार के गठन को लेकर ₹रोचक₹ बना सकते हैं। नई राजनीतिक दलों में सबसे अधिक चर्चा कॉरपोरेटर से रणनीतिकार और फिर राजनेता बने प्रशांत किशोर उर्फ पीके को लेकर है। पाटलिपुत्र के सिंहासन पर आसीन होने के लिए नवंबर महीने में हो रहे बिहार चुनाव में तीसरी ताकत के रूप में ₹जन सुराज पार्टी भी अपना पैर जमाने की जुगत में है।

जन सुराज पार्टी के मुखिया प्रशांत किशोर उर्फ पीके बिहार में पदयात्रा कर लोगों की नब्ज टटोल चुके हैं। पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ने जा रही जन सुराज पार्टी राज्य के सभी 243 विधानसभा क्षेत्रों में चुनाव लड़ेगी। पार्टी द्वारा किए जा रहे चुनाव प्रचार के दौरान पीके के निशाने पर महागठबंधन एवं एनडीए दोनों ही है। पीके समेत पार्टी के अन्य नेता टीवी डिबेट के साथ-साथ लोगों के साथ संवाद कार्यक्रम में एक ही बात बार-बार दोहराते हैं कि बीते 40 सालों एनडीए एवं महागठबंधन से जुड़े दलों का ही राज रहा है। ऐसे में बिहार के पिछड़ेपन, युवाओं के बिहार से पलायन तथा अपराध सहित बिहार की अन्य दुर्दशा के लिए कांग्रेस, बीजेपी, राजद और जदयू ही जिम्मेदार हैं। पीके बिहार के मतदाताओं को यह भरोसा भी दिलाने में लगे हैं कि जन सुराज पार्टी के नुमाइंदे बिहार की दशा और दिशा को बदलने का माद्दा रखते हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव में इस बार चर्चा में एक ₹राजनीतिक हनुमान₹ भी है। हम बात कर रहे हैं खुद को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हनुमान बताने वाले चिराग पासवान की। वैसे तो बिहार की राजनीति में समाजवादी आंदोलन से निकले कद्दावर नेता रामविलास पासवान साल 2019 में लोकसभा चुनाव के दौरान ही अपने पुत्र चिराग पासवान को सियासत में उतार चुके थे। इस दौरान पार्टी के सारे फैसले चिराग ही लेते रहे। पिता रामविलास पासवान की मौत के बाद उनके चाचा पशुपति पारस ने धोखा दिया और चिराग अकेले पड़ गए। इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। चिराग ने अपनी ताकत का एहसास 2020 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार को करा दिया। अब बदले हालात में अपने दम पर चिराग पासवान दो भागों में अब बंट चुकी लोजपा के एक धड़े लोजपा (राम विलास) का नेतृत्व कर रहे हैं।

बिहार के दंगल में चिराग पासवान की एंट्री से विधानसभा चुनाव में बिहार में खुद की अगुवाई में अपनी पार्टी के विस्तार के साथ-साथ अपनी प्रभावी मौजूदगी दर्ज करने की कोशिश चिराग की रहेगी। बिहार विधानसभा चुनाव के मैदान में इस बार इंडियन इंकलाब पार्टी भी जोर लगाएगी। इंडियन इंकलाब पार्टी गठन इंजीनियर आईपी गुप्ता ने किया है जो पहले कांग्रेस में थे। उन्होंने इस साल अप्रैल में कांग्रेस छोड़ दी थी। चुनावी समर में उतरने से पहले ही अप्रैल में आईपी गुप्ता ने पटना के गांधी मैदान में महारैली का आयोजन किया था। इसमें बड़ी संख्या में लोग आए थे। गुप्ता का आधार तांती और ततवा जाति में है जो इन दिनों अनुसूचित जाति में शामिल होने की लड़ाई लड़ रहा है। इंडियन इंकलाब पार्टी महागठबंधन में शामिल होने की कोशिश कर रही है तथा सीटों को लेकर बातचीत भी चल रही है।

इसके साथ ही इंडियन इंकलाब पार्टी बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए और महागठबंधन के अलावा तीसरे मोर्चे के निर्माण की कवायद में जुटे असदुद्दीन ओवैसी की एआईएमआईएम के संपर्क में भी हैं। भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी शिवदीप वामनराव लांडे ने आईपीएस की नौकरी छोड़कर राजनीति में एंट्री लेने के लिए जय हिंद सेना के नाम से अपनी राजनीतिक पार्टी बनाई है। उन्होंने 2024 में आईपीएस की नौकरी छोड़ दी थी। महाराष्ट्र के रहने वाले लांडे ने घोषणा की है कि वो प्रदेश की सभी 243 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारेंगे। लांडे का कहना है कि वे सिर्फ विकास की राजनीति करेंगे तथा जाति या अगड़े-पिछड़े की राजनीति से दूर रहेंगे।

बिहार के दंगल में चिराग पासवान की एंट्री से विधानसभा चुनाव में बिहार में खुद की अगुवाई में अपनी पार्टी के विस्तार के साथ-साथ अपनी प्रभावी मौजूदगी दर्ज करने की कोशिश चिराग की रहेगी। बिहार विधानसभा चुनाव के मैदान में इस बार इंडियन इंकलाब पार्टी भी जोर लगाएगी। इंडियन इंकलाब पार्टी गठन इंजीनियर आईपी गुप्ता ने किया है जो पहले कांग्रेस में थे। उन्होंने इस साल अप्रैल में कांग्रेस छोड़ दी थी। चुनावी समर में उतरने से पहले ही अप्रैल में आईपी गुप्ता ने पटना के गांधी मैदान में महारैली का आयोजन किया था˘...

नागपुर में सनातन जाप और संविधान पर उछलता जूता!!

(आलेख : बादल सरोज)

मजमून के मुकाबले जूते के चलने को अपने शेर में "बूट डासन ने बनाया, मैंने एक मजमूँ लिखा / मेरा मजमून रह गया डासन का जूता चल गया" में दर्ज करने वाले, पेशे से वकील रहे शायर अकबर इलाहाबादी को भी अंदाजा नहीं रहा होगा कि एक दिन उनका कहा मुल्क की सबसे बड़ी अदालत में अमल में लाया जाएगा। मगर ऐसा हो गया, संविधान का मजमून धरा रह जाएगा और डासन की जगह सनातन का जूता चल जाएगा।
'सनातन का अपमान नहीं सहा जाएगा' कहते हुए एक वकील ने ही आला अदालत के सबसे आला जज पर जूता उछाल दिया। वह कोई सरफिरा नहीं था, जैसा कि उसने बाद में कहा, वह अपने किये के कारणों के बारे में पूरी तरह आश्वस्त और स्पष्ट सनातनी था।
यह सचमुच में एक अत्यत गंभीर और चिंतित करने वाली बात है, किन्तु इसे संदर्भ से काटकर अलग-थलग करके देखने से इसकी जड़ तक नहीं पहुंचा जा सकता। यह जिस निरंतरता में है, उससे जोड़कर ही इसकी समग्रता में ही इसे समझा जा सकता है। इसलिए शुरुआत पिछले सप्ताह उजागर हुई खबरों से : ऐसी ख़बरें अनेक हैं, मगर यहाँ बानगी के लिए इनमे से सिर्फ चार पर नजर डालना काफी होगा :

रोहडू, हिमाचल प्रदेश : एक 12 साल का दलित बच्चा सिकंदर एक दुकान से कुछ खाने की चीज खरीदने जाता है। दुकान में कोई व्यक्ति नहीं था, दुकान खाली थी। वह दुकानदार की तलाश में उसके घर के अंदर जाकर सामान मांगता है। दुकान मालकिन उस 12 साल के दलित बच्चे को अपने घर में देखकर गुस्से में फट पड़ती है, उसे दुत्कार कर भगा देती है। उसके बाद उस बच्चे के घर एक संदेश भेजा जाता है, तुम्हारे लड़के ने हमारे घर में घुसने का पाप किया है। इसका पश्चाताप करने के लिए एक बकरी भेंट करो। दलित बच्चे के मां-बाप बकरी देने से मना कर देते हैं। दुकान मालकिन उस बच्चे को ही बकरी बांधने की जगह बाँध कर बकरी न आने तक बंधक बना लेती है, उसे पीटा भी जाता है। जैसे-तैसे भागकर सिकंदर बाहर निकलता है और इस अपमान से आहत होकर आत्महत्या कर लेता है।

फ़तेहगंज, उत्तरप्रदेश : फतेहगंज थाना क्षेत्र के जबरापुर गांव में दो दलित बुजुर्गों, भगत वर्मा (60) और कल्लू श्रीवास (70), पर कथित ऊंची जाति के लोगों का हमला होता है। इन बुजुर्गों का कसूर यह है कि अपने खेतों में काम करते-करते वे उधर से गुजरने वाले इन 'बड़े लोगों' को देख नहीं पाए और उनसे "राम-राम" नहीं कहा। हमलावर उन्हें लाठी-डंडों से पीटते है, चाकू से गोदते हैं, जातिसूचक गालियां देते है और जाते-जाते दक्षिणा के रूप में इनसे 500 रुपये छीनकर ले जाते है।

रायबरेली, उत्तरप्रदेश : 30 साल के एक दलित हरिओम वाल्मीकि की पीट-पीटकर कर हत्या कर दी जाती है और उसकी लाश ऊंचाहार गांव में रेलवे ट्रैक के पास फेंक दी जाती है। घटना सोशल मीडिया पर उस व्यक्ति की बेरहमी से पिटाई का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद सामने आती है। हरिओम फतेहपुर जिले के तारावती इलाके के पुरवा गांव के रहने वाले थे। यह अपनी पत्नी से मिलने जा रहे थे। मानसिक रूप से अस्वस्थ थे, इसलिए सही तरीके से बात नहीं कर पाते थे। ऐसे निरीह व्यक्ति को ड्रोन से चोरी करने लायक मानकर पुलिस की मौजूदगी में तब तक पीटा गया, जब तक उसकी मौत नहीं हो गयी। ख़बरों के मुताबिक़ पिटाई के दौरान बेहोशी की स्थिति में जब हरीओम ने राहुल गांधी का नाम लिया तो हमलावरों ने कहा कि 'हम भी बाबा — योगी आदित्यनाथ के लोग हैं।'

महिसागर, गुजरात : गांधीनगर के सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज की चौथे साल की छात्रा दलित युवती रिंकू वानकर वीरपुर तालुका के अपने कस्बे में अपनी एक दोस्त के साथ गरबा कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जाती है। उसे कथित रूप से खुद को ऊंचा मानने वाली युवतियां जातिसूचक गालियां देती हैं। "ये लोग हमारे बराबर नहीं हैं और हमारे साथ गरबा नहीं खेल सकते," कहते हुए उसके बाल पकड़कर घसीटते हुए गरबा स्थल से बाहर निकाल देती हैं।

6 अक्टूबर को सर्वोच्च न्यायालय में उसके मुख्य न्यायाधीश बी आर गवई की ओर उछाला गया जूता इन्हीं घटनाओं की निरंतरता में देखा जाना चाहिए था। पहले की खबरों में इसे जूता फेंकने वाले वकील की धार्मिक भावनाओं से जुड़ा और स्वयं ईश्वर के कहने पर किया गया काम बताया गया। कहा गया है कि हमलावर मध्य प्रदेश के खजुराहो के एक धरोहर स्थल में भगवान विष्णु की जीर्ण-शीर्ण मूर्ति की पुनर्स्थापना की मांग करने वाली याचिका को 'पब्लिसिटी इंटरेस्ट लिटिगेशन' बताते हुए जस्टिस गवई ने इसे पुरातत्व विभाग और राष्ट्रीय धरोहरों के संरक्षण से जुड़े नियमों का मामला मानते हुए खारिज करते समय कही गयी बात से दुखी था। सुनवाई के दौरान चलते-चलाते जस्टिस गवई ने टिप्पणी की थी कि 'अगर आप कह रहे हैं कि आप भगवान विष्णु के प्रबल भक्त हैं, तो आप उन्ही की प्रार्थना और ध्यान क्यों नही करते।' खुद को धर्मप्रेमी और विष्णु अनुरागी भक्त बताने वाले जिस वकील को सीजेआई की यह बात 'सनातन का अपमान' लगी, उसने पुराणों में लिखे विष्णु के किस्से पढ़े होंगे, रहीम का वह दोहा तो सुना ही होगा जिसमें वे 'का रहीम हरि को घट्यो जो भृगु मारी लात' की बात करते है। जाहिर है कि बंदे ने भृगु महाराज की लात और गवई की कही बात पर कम, उनकी जाति पर ज्यादा ध्यान दिया होगा।
हालांकि बाद में दिए गए इस वकील के बयानों से यह बात भी सामने आई है कि मसला विष्णु भर का नहीं था : वह विष्णु के आदित्यनाथ और नुपुर शर्मा जैसे आधुनिक अवतारों की अवहेलना किये जाने के न्यायालयीन दुस्साहस से भी नाराज था। उसे इस बात पर आपत्ति थी कि जस्टिस गवई ने योगी (आदित्यनाथ) जी द्वारा की जा रही बुलडोजर कार्यवाही का विरोध करने की हिम्मत दिखाई।
प्रसंग यह है कि इस महीने की शुरुआत में मॉरीशस में 'सबसे बड़े लोकतंत्र में कानून का शासन' विषय पर सर मौरिस रॉल्ट मेमोरियल लेक्चर 2025 में बोलते हुए जस्टिस बीआर गवई ने कहा था कि भारत की न्याय व्यवस्था कानून के शासन से निर्देशित होती है, न कि 'बुलडोजर के शासन' से। ऐसा कहते हुए गवई ने अपने ही फैसले का हवाला दिया था, जिसमें 'बुलडोजर न्याय' की निंदा की गई थी। इस वकील की 'धार्मिक भावनाएं' सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नुपुर शर्मा के बयानों को "माहौल बिगाड़ने वाला" बताने और हल्द्वानी में रेलवे की ज़मीन पर एक ख़ास समुदाय द्वारा किये गए अतिक्रमण को हटाने की कोशिश पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा तीन साल पहले रोक लगा देने से भी आहत थीं। उसे जल्लीकट्टू और दही हांडी प्रकरणों में सुप्रीम कोर्ट के रुख से भी शिकायत है और उसका मानना है 'जब भी हमारे सनातन धर्म से जुड़ा कोई मुद्दा आता है, तो यह सुप्रीम कोर्ट उस पर कोई न कोई आदेश जारी कर देता है। उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए।'
यह सब उस वक़्त उसी सनातन के नाम पर हो रहा था — हरीओम वाल्मीकि की लाश तो ठीक उसी दिन 2 अक्टूबर को बरामद हो रही थी — जब राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ के 100वें वर्ष के दशहरा आयोजन में नागपुर में बोलते हुए सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत सनातन की दुहाई देते हुए दावा कर रहे थे कि : "हमारी सनातन, आध्यात्मिक, समग्र व एकात्म दृष्टि में मनुष्य के भौतिक विकास के साथ-साथ मन, बुद्धि तथा आध्यात्मिकता का विकास, व्यक्ति के साथ-साथ मानव समूह व सृष्टि का विकास, मनुष्य की आवश्यकताओं-इच्छाओं के अनुरूप आर्थिक स्थिति के साथ-साथ ही, उसके समूह और सृष्टि को लेकर कर्तव्य बुद्धि का तथा सब में अपनेपन के साक्षात्कार को अनुभव करने के स्वभाव का विकास करने की शक्ति है, क्योंकि हमारे पास सबको जोड़ने वाले तत्त्व का साक्षात्कार है।" (कृपया ध्यान दें, यह हिंदी उन्हीं के द्वारा बोली गयी हिंदी है।)
यह भी बता रहे थे कि "हिंदू समाज इस देश के लिए उत्तरदायी समाज है, कि हिंदू समाज सर्व-समावेशी है। ऊपर के अनेकविध नाम और रूपों को देखकर, अपने को अलग मानकर, मनुष्यों में बंटवारा व अलगाव खड़ा करने वाली 'हम और वे' इस मानसिकता से मुक्त है और मुक्त रहेगा।"
वह कितना समावेशी है और कितना मन, बुद्धि का विकास करता है, इसके प्रमाण देते हुए वही सनातन रोहडू से फतेहगंज, रायबरेली, महिसार की वारदातों को अंजाम दे रहा था। देश के संविधान के सबसे बड़े केंद्र सर्वोच्च न्यायालय में जूता उछाल रहा था। ठीक यही वजह है कि इन घटनाओं को अलग-अलग नहीं, निरंतरता में — सनातन के अमल की निरंतरता में -- देखे जाने से ही समझा जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट में उछले जूते पर घंटों तक इन्तजार के बाद आई प्रधानमंत्री की लिजलिजी प्रतिक्रिया और बाकी मंत्रियों सहित पूरे कुनबे की खामोशी, इनके नियंत्रण वाले गोदी मीडिया — जो अब लश्करे नोएडा के नये नाम से मशहूर हो गया है — द्वारा जूता उछालने वाले वकील का महिमामंडन और उसके एजेंडे का अनुमोदन करते हुए अविरल प्रसारण कथनी और करनी के फर्क और जो कहते है, उसके ठीक उलट करने की संघ और भाजपा की आजमाई विधा का आचरण है।
जिस सनातन की दुहाई देते हुए ये सब कारनामे और बर्बरताएँ आज अंजाम दी जा रही हैं, वह सनातन वर्णाश्रम पर आधारित, जाति प्रथा और उसके आधार पर ऊंच-नीच यहाँ तक कि छुआछूत तक में यकीन करने, महिलाओं को शूद्रातिशूद्र मानने को धर्मसम्मत बताने वाली पुरातन व्याधि है, जिसका सही नाम ब्राह्मण धर्म है।
वही ब्राह्मण धर्म, जिसके खिलाफ पिछले ढाई-तीन हजार वर्षों में भारत में दार्शनिक और धार्मिक विद्रोह होते रहे ; जिससे लड़ते-लड़ते जैन, बौद्ध, लोकायत धारा, सिख, शैव, शाक्त और भांति-भांति के वैष्णव जैसे अनेक धर्म और उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम में लिंगायतों से लेकर गोरखनाथ जैसे अनेकानेक पंथ विकसित हुए। यही वह सांघातिक बीमारी है, जिसने इस देश में मनुस्मृति का अन्धेरा व्याप कर उसके आधार पर हाथ और दिमाग को एक दूसरे से काटकर भारत के विज्ञान, साहित्य, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास को अवरुद्ध करके रख दिया, सडांध पैदा दी।
इसे पहले भी कहा जा चुका है, किन्तु दोहराना और फिर से याद दिलाना जरूरी है कि यह वही जकड़न है, जिससे निजात पाने के लिए कबीर से लेकर रैदास, गुरु घासीदास से होते हुए राजा राममोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने अपने तरीकों से जद्दोजहद की। जोतिबा फुले से पेरियार होते हुए अम्बेडकर तक ने निर्णायक चोटें की। ई एम एस नम्बूदिरिपाद और ए के गोपालन से होते हुए वाम आन्दोलन ने इसे सामाजिक सुधार के लिए किये संघर्षों से आगे बढाया और सामाजिक बदलाव की लड़ाई से जोड़ा। इन्हीं संघर्षों का असर था, जिसने भारत के संविधान के रूप में मूर्त आकार ग्रहण किया। जिसने भारत को यातना गृह की काल कोठरी से बाहर निकाल उसे एक सभ्य समाज बनने की दिशा में अग्रसर होने की पृष्ठभूमि तैयार की। यह बाद में 70 के दशक में देश की राजनीति में सामाजिक प्रतिनिधित्व में गुणात्मक परिवर्तन के रूप में दिखा।
यह जहां एक ओर कुख्यात हो गए हिंदुत्व की नई पैकेजिंग है, वहीं दूसरी ओर इन ढाई-तीन हजार वर्षों के वैचारिक संघर्षों की उपलब्धियों का नकार भी है। संविधान और उसमे दी गयी समता, समानता, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता का धिक्कार भी है। यह बर्बर असलियत को छिपाने का कपट है। बकौल सावरकर '"वर्ण व्यवस्था हमारी राष्ट्रीयता की लगभग मुख्य पहचान बन गयी है।" यह भी कि "जिस देश में चातुर्वर्ण नहीं है, वह म्लेच्छ देश है। आर्यावर्त नहीं है।" और आगे बढ़कर सावरकर इसे और स्पष्ट करते हैं कि "ब्राह्मणों का शासन, हिन्दू राष्ट्र का आदर्श होगा।" वे यह भी कहते हैं कि "सन 1818 में यहां देश के आखिरी और सबसे गौरवशाली हिन्दू साम्राज्य (पेशवाशाही) की कब्र बनी।" ध्यान रहे, यह वही पेशवाशाही है, जिसे हिन्दू पदपादशाही के रूप में फिर से कायम कर आरएसएस एक राष्ट्र बनाना चाहता है और इसी को वह हिन्दू राष्ट्र बताता है। भारत के इतिहास में कलंक के रूप में जानी जाने वाली यह पेशवाशाही क्या थी, इसे जोतिबा फुले की 'गुलामगीरी' या भीमा कोरेगांव की संक्षेपिका पढ़ कर जाना जा सकता है।
यही बात संघ के एकमात्र गुरु जी गोलवलकर ने कही थी कि "ईरान, मिस्र, यूरोप तथा चीन के सभी राष्ट्रों को मुसलमानों ने जीत कर अपने में मिला लिया, क्योंकि उनके यहां वर्ण व्यवस्था नहीं थी। सिंध, बलूचिस्तान, कश्मीर तथा उत्तर-पश्चिम के सीमान्त प्रदेश और पूर्वी बंगाल में लोग मुसलमान हो गए, क्योंकि इन क्षेत्रों में बौद्ध धर्म ने वर्ण व्यवस्था को कमजोर बना दिया था।" इनका सनातन धर्म की बहाली का दावा वर्णाश्रम की बहाली के सिवा कुछ नहीं है। जिस सनातन की ये दुहाई दे रहे हैं, वह सनातन क्या है और उसमे कितना सनातन है, यह बात भी कोई दबी-छिपी नहीं है। सनातन एक आधुनिक पहचान है, जो विविधताओं से भरी हिन्दू परम्परा के प्रभुत्वशाली ब्राह्मण धर्म में कुरीतियों के विरुद्ध हुए धार्मिक सुधार आंदोलनों के मुकाबले घनघोर पुरातनपंथी रूढ़ीवाद की पहचान के रूप में सामने आयी। बंगाल के नवजागरण सहित ब्रह्मोसमाज आन्दोलन, दक्षिण के जाति और वर्णाश्रम विरोधी मैदानी और वैचारिक संघर्षों, महाराष्ट्र के सामाजिक सुधारकों की मुहिमों और खासकर उत्तर भारत में मूर्तिपूजा, अंधविश्वास और एक हद तक जाति विरोधी आन्दोलन आर्य समाज के बरक्स असमानता, ऊंच-नीच और भेदभाव का धुर पक्षधर पुराणपंथ सनातन के नाम पर गिरोहबंद हुआ। 18वीं और 19वीं सदी में सनातनियों का सबसे बड़ा युद्ध जिस आर्य समाज के साथ हुआ था, उस आर्य समाज का तो नारा ही वेदों की ओर वापस लौटने का था। इसलिए सनातन धर्म का वैदिक धर्म के साथ कोई रिश्ता होने का सवाल ही नहीं उठता।
जिस सनातन के नाम पर संविधान पर जूता उछाला गया है, उसी सनातन के नाम पर 1948 में महात्मा गांधी की हत्या की गयी थी। उसी के नाम पर चलने वाले संगठनों से जुड़े वे हत्यारे थे, जिन्होंने दाभोलकर, पानसारे, कुलबुर्गी और गौरी लंकेश को मार डाला था। उनकी ताजा भड़भड़ाहट की वजह यह है कि हिंदुत्व और हिन्दू की जगह सनातन का जाप कर उसी पुराने और त्याज्य पर नया मुलम्मा चढ़ाने की इस कोशिश को लोग समझने लगे हैं। भट्टी सुलगने के पहले ही समता, सामाजिक सुधार, लोकतंत्र और संविधान की हिमायती ताकतें उसे बुझाने के लिए खुद जाग चुकी हैं, औरों को भी जगा रही हैं। मगर यह काम जूता उछालने जितना आसान काम नहीं है। इस मुहिम को और तेज करने की जरूरत है और ऐसा इनके झूठ का खण्डन करके, भारत के सच को नीचे तक ले जा कर ही किया जा सकता है।

(लेखक 'लोकजतन' के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं)

आजकल की विवाह -शादियाँ में दिखावा...?

विजय गर्ग

आजकल शादियों में दिखावा बहुत आम हो गया है। इस दिखावे के चलते शादीयों में कई प्रकार के पकवान बनवाए जाते हैं। स्टॉल्स अलग, मेन कोर्स अलग, उसमें भी हर चीज़ के कई विकल्प तीन प्रकार की सब्जियां और पांच तरह की मिठाइयाँ होना तो जरुरी हो गया है। सब मिलकर इतना खाना हो जाता है जितना एक आम व्यक्ति एक बार में शायद ही खा पाए। नतीजा ये होता है कि खाने की बर्बादी होती है।

विवाह शादियों का सीजन शुरू हो चुका है। आने वाले कुछ महीनों तक शहनाइयों की गूंज और शादियों की चमक-दमक बनी रहेगी। आप में से भी ऐसे कई लोग होंगे, जिनके घर शादी के न्योते आ चुके होंगे या जिनके घर में ही शादी होगी। ईश्वर में यही कामना है कि आपके घर का आयोजन हंसी-खुशी संपन्न हो। लेकिन अपने इस आयोजन को पारिवारिक मेल-जोल का जरिया बनाने का प्रयास करेंगे तो यह ज्यादा सफल बन सकेगा....।

क्योंकि आजकल हमारे यहाँ बड़ी-बड़ी और महँगी शादियाँ करना एक चलन बन गया है, इसे व्यक्ति की प्रतिष्ठा से जोड़ा जाने लगा है। जो जितनी महँगी शादी का आयोजन कर रहा है, उसे समाज में उतना ही संपन्न माना जाएगा। बात सिर्फ महँगी शादी की नहीं है। शादी जितने दिन तक चलेगी उसे उतनी ज्यादा मान्यता दी जाएगी, जिसमें छोटी-छोटी रस्मों के लिए भी बड़े-बड़े आयोजन होना जरुरी है। फिर हर आयोजन के अनुसार अलग-अलग पहsनावा जैसे मेहंदी के लिए हरे कपड़े, हल्दी की रस्म में शामिल होना है तो पीले रंग के कपड़े, उस पर कुछ पाश्चात्य संस्कृति का भी दिखावा करने के लिए कॉकटेल पार्टी, बॉलीवुड के किसी समारोह की तरह दिखने वाला संगीत का समारोह, इतना होना तो आवश्यक है। इन आयोजनों का खर्च जितना मेजबान पर भारी पड़ता है, उससे ज्यादा महंगे ये मेहमान के लिए भी साबित होते हैं। आपको जिस आयोजन में शामिल होना है, उसके हिसाब से कपड़े होना चाहिए, और अगर नजदीकी रिश्तेदार के यहाँ शादी है, तो फिर पूरा परिवार ही जाएगा। मतलब जितने लोग उतने ही नए कपड़े होना जरुरी है। अब जितने अलग प्रकार के कपड़े उतना ही बनाव-श्रृंगार का सामान भी

चाहिए। फिर आप शादी में खाली हाथ तो नहीं जाएँगे। मतलब शगुन या तोहफे का भी खर्च जोड़िए। जब शादी इतनी भव्य की जा रही है तो भेंट भी वैसी ही होनी चाहिए।

इसके अलावा मशहूर हस्तियों को देखकर आजकल डेस्टिनेशन वेडिंग का एक नया ट्रेंड चला है, लोग अपने शहर से दूर जाकर शादियाँ करने लगे हैं, जिसमें गिनती के मेहमानों को बुलाया जाता है। मतलब आप किसी के बहुत ही करीबी होंगे तो ही आपका नाम मेहमानों की लिस्ट में दर्ज किया जाएगा। अब जब आप इतने करीब के रिश्तेदार हैं, तो जाना आवश्यक है। लेकिन मान लीजिए कि डेस्टिनेशन वेडिंग का डेस्टिनेशन आपके शहर से बहुत दूर है, तो सभी रस्मों में शामिल होने के लिए बनाव श्रृंगार का खर्चा तो बढ़ा ही और अब आने-जाने का खर्च अलग से....। यह चलन मेहमान और मेजबान के लिए महंगा तो है ही लेकिन इसका एक पक्ष ये भी है कि इससे रिश्तों में दूरियां आ रही है। जिन्हें नहीं बुलाया गया उनके मन ये विचार आना तो स्वाभाविक है कि हम करीब नहीं इसलिए हमें नहीं बुलाया गया ये आपकी एक नकारात्मक छवि बनाता है और रिश्तों में दरार का कारण बनता है।

आजकल शादियों में दिखावा बहुत आम हो गया है। इस दिखावे के चलते शादीयों में कई प्रकार के पकवान बनवाए जाते हैं। स्टॉल्स अलग, मेन कोर्स अलग, उसमें भी हर चीज़ के कई विकल्प तीन प्रकार की सब्जियां और पांच तरह की मिठाइयाँ होना तो जरुरी हो गया है। सब मिलकर इतना खाना हो जाता है जितना एक आम व्यक्ति एक बार में शायद ही खा पाए। नतीजा ये होता है कि खाने की बर्बादी होती है। लोग शौक-शौक में ढेर सारा खाना ले लेते हैं फिर न खा पाने की स्थिति में ये सारा खाना व्यर्थ जाता है। खाना बचता भी बहुत है, जिसे कई बार फेक दिया जाता है। इससे नुकसान तो होता ही है साथ ही अन्न का अपमान होता है।

शादियों के बदलते नए-नए ट्रेंड ने शादियों को खर्चीला बना दिया है ,जिसे वहन करना एक आम आदमी के लिए संभव नहीं, तो फिर गरीबों की तो बात ही क्या की जाए ....। एक गरीब व्यक्ति जो ठीक से दो वक्त का खाना नहीं जुटा पाता, उसके लिए तो यह सब सपना ही है, तो गरीब अब शादी भी ना करे। इस देश में करीब 37 प्रतिशत लोग आज भी गरीबी और अभाव में जी रहे हैं। उनके लिए इस तरह के आयोजन करना संभव नहीं और ना किए जाए तो बात इज्जत पर आ जाएगी। इसलिए अपने मान-सम्मान को बनाए रखने के लिए ये लोग कर्ज का सहारा लेते हैं और एक नई मुसीबत के भंवर में फंस जाते हैं। आपके आस-पास ही आपको ऐसे कई उदाहरण देखने को मिल जाएँगे।

सोचिये अगर कोई व्यक्ति गरीब है या उसकी आय ही इतनी नहीं कि इन खर्चों के लिए खर्च कर सके तो क्या वो अब शादियों में ही ना जाए....? जरा विचार कीजिये आपका यह आयोजन उसके लिए कितनी बड़ी चिंता खड़ीं कर देगा जिसकी इतनी आमदनी इतनी नहीं कि फिजूल के खर्चों में पैसा बहाया जाए । शादी ब्याह के आयोजन नए रिश्तों का स्वागत करने के लिए होते हैं ना की किसी की गरीबी का उपहास उड़ाने या रिश्तों में दूरियां बनाने के लिए। शादी ब्याह के आयोजन करें लेकिन उन लोगों का भी खयाल रखें जो, अभाव का जीवन जी रहे हैं। कोई भी बड़ा आयोजन करने से पहले विचार कीजिये कि अपने घर के आयोजन में दिखावा करके आप समाज के सामने कोई गलत उदाहरण तो नहीं रख रहे हैं। आपका ये आयोजन किसी के घर का बजट तो नहीं बिगाड़ देगा। शादी ब्याह के आयोजन कीजिये पर इस तरह कि ये आपके रिश्तों की मिठास को बढ़ाए ना की किसी के जेब पर एक और बोझ बन जाए.....

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

युवा सशक्तिकरण की आधारशिला के रूप में शिक्षा

विजय गर्ग

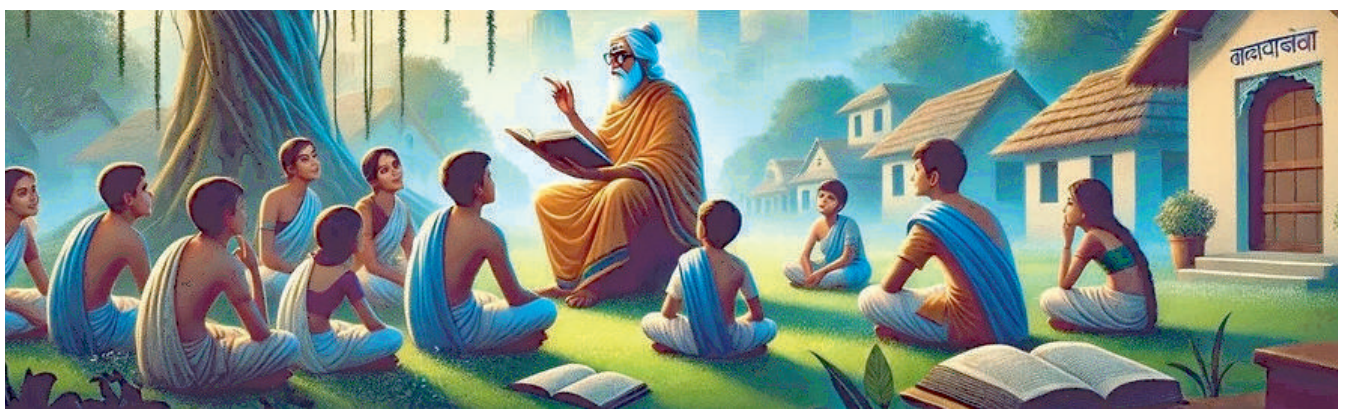

शिक्षा हमेशा से ही प्रगति की आधारशिला रही है। यह नए द्वार खोलती है, बाधाओं को तोड़ती है और व्यक्तियों को अपनी परिस्थितियों से परे सपने देखने की शक्ति प्रदान करती है। किसी देश की आर्थिक वृद्धि लोगों की साक्षरता दर के सीधे अनुपात में होती है क्योंकि शिक्षा व्यक्तिगत विकास और व्यक्ति की समग्र प्रगति के लिए अनिवार्य है।

राज्य सभी नागरिकों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी है क्योंकि शिक्षा प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। यदि कोई देश अपने लोगों को समान शिक्षा के अवसर प्रदान करने में विफल रहता है, तो हमारे जैसे विभिन्न निजी संस्थान, वंचितों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में अपनी भूमिका निभाने के लिए आगे आते हैं। युवाओं को सशक्त बनाने में शिक्षा की भूमिका पर गहराई से विचार करने से पहले, आइए पहले गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अवधारणा को समझें।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा- एक विकास लक्ष्य

यूनेस्को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को एक ऐसे शैक्षिक दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित करता है जो निरंतर बदलती दुनिया में सफलता के लिए उपयुक्त कौशल, लैंगिक समानता, ज्ञान का हस्तांतरण और मूल्य प्रदान करता है। यह केवल बुनियादी ज्ञान के हस्तांतरण और तथ्यों को रटने से आगे बढ़कर, युवाओं को 21वीं सदी के सबसे चुनौतीपूर्ण युग में जीवित रहने के लिए प्रासंगिक कौशल और मूल्यों से लैस करता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, जो संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा उल्लिखित सत्रह सतत विकास लक्ष्यों में से चौथा है, में समानता और समावेशिता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, तथा सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें आजीवन शिक्षा प्राप्त करने का अवसर होना चाहिए।

युवा सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका

युवा सशक्तिकरण का अर्थ है युवा पीढ़ी को आवश्यक कौशल, ज्ञान और आत्म-विकास के अवसर प्रदान करना, जिससे वे सही निर्णय ले सकें और बेहतर जीवन जी सकें। युवा किसी भी देश की संपत्ति होते हैं। उनकी शिक्षा का अर्थ है एक बेहतर अर्थव्यवस्था और एक समृद्ध समाज। 21वीं सदी के सबसे ज़रूरी कौशलों से युवाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण और लाभकारी साधन है। शिक्षा निम्नलिखित तरीकों से युवाओं को सशक्त बनाती है:

कौशल विकास

तेज़ी से हो रही इस तकनीकी प्रगति के युग में, कौशल ही सफलता का एकमात्र स्रोत है। यदि कोई राष्ट्र हर संभव तरीके से दुनिया पर अपना दबदबा बनाना चाहता है, तो उसके युवाओं को कुशल होना चाहिए। शिक्षा और कौशल विकास आपस में जुड़े हुए हैं, और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तियों को आवश्यक बुनियादी कौशल प्रदान करना है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से व्यक्ति आलोचनात्मक चिंतन कौशल, व्यावहारिक अभ्यास, समस्या-समाधान कौशल और व्यावसायिक कौशल सीखते हैं।

आज के दौर में सॉफ्ट स्किल्स भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। शिक्षा और शैक्षणिक संस्थान भी बोलने के कौशल को निखारने, आत्मविश्वास बढ़ाने और व्यक्तियों के पेशेवर विकास में अपनी भूमिका निभाते हैं।

रोजगार के अवसर

शिक्षा युवाओं के लिए उपलब्ध करियर विकल्पों का दायरा बढ़ाकर, व्यक्तियों के लिए बेहतर रोज़गार के अवसर पैदा करती है। इससे युवाओं और उनके परिवारों के जीवन स्तर में भी सुधार होता है। एक सर्वांगीण शिक्षा युवाओं को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के अलावा, एक उद्देश्य और दिशा भी प्रदान करती है। एक सशक्त और शिक्षित व्यक्ति लक्ष्य निर्धारित करता है और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयास करता है, जिससे लोगों के लिए रोज़गार के नए अवसर भी खुलते हैं।

नेतृत्व विकास

किसी देश को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए सक्षम नेताओं की आवश्यकता होती है। शिक्षा युवाओं में नेतृत्व के गुणों को बढ़ावा देती है और उन्हें अपने देश का नेतृत्व करने की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार करती है। शिक्षित व्यक्तियों में नेतृत्व के गुण होते हैं और वे अपने समुदाय के अन्य लोगों को समृद्धि की ओर ले जाने में मदद करते हैं।

एक मजबूत समुदाय का निर्माण

शिक्षा का प्रभाव व्यक्तिगत शिक्षार्थियों से कहीं आगे तक जाता है। जब युवा सशक्त, सुदृढ़ और पूर्ण रूप से विकसित होते हैं, तो वे दूसरों को प्रभावित करने वाले परिवर्तनकारी कारक बन जाते हैं। अपने परिवार, साथियों और पड़ोसियों पर अपने प्रभाव के माध्यम से, वे समाज में परिवर्तन का एक चक्र शुरू करते हैं।

सुशिक्षित और कुशल मानव पूंजी की उपस्थिति किसी भी विकसित देश की आधारशिला होती है। एक विकसित देश में, उच्च सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का अर्थ उसके निवासियों के जीवन स्तर में सुधार होता है। बदले में, लोग एक मज़बूत समुदाय का निर्माण करते हैं।

भारत में वर्तमान शिक्षा की स्थिति

पिछले तीन दशकों में, भारत ने सभी छात्रों के लिए शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करने और स्कूल न जाने वाले छात्रों की संख्या को कम करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम (2009) और राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) नीति (2013) जैसे अधिनियमों ने इस उपलब्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हालाँकि, भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कई समस्याएँ बनी हुई हैं। भारत में शिक्षा पर यूनिसेफ के अनुसार , रलगभग 50 प्रतिशत किशोर माध्यमिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाते हैं, जबकि लगभग 2 करोड़ बच्चे प्रीस्कूल नहीं जाते हैं।"

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

सरलता की जटिलता

विजय गर्ग

दार्शनिक और धार्मिक परंपराओं के इतिहास में एक स्थायी विरोधाभास बार-बार मुखर हुआ है। एक ओर वह मूल, सरल और सर्वसुलभ साधना, जो सहज नियमों, संयम और स्वाध्याय पर आधारित है । तो दूसरी ओर वे मार्ग, जो अपने को 'विशेष' और 'गुह्य' कहकर प्रस्तुत करते हैं और जिनका आकर्षण उनकी जटिलता, नाटकीयता तथा वर्जना - भंग में निहित होता है। इस संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के एक विचार पर गौर किया जा सकता है, जिसमें वे कहते हैं- 'कैसा ही शुद्ध और सात्विक धर्म हो,' गुह्य' और 'रहस्य' के प्रवेश से वह विकृत और पाखंडपूर्ण हो जाता है ' । इसी सिरे से क्रिया-प्रतिक्रिया के सिद्धांत को केंद्र में रख कर एक बड़े फलक पर भी विचार की संभावना बनती है ।

इसे इस तरह से समझा जा सकता है कि एक व्यक्ति शिखर को लक्ष्य करके पहाड़ की ओर जाती पगडंडी पकड़े चला जा रहा था, मगर उसे मार्ग नहीं पता था। थोड़ी देर चलकर उसे एक और व्यक्ति मिला, उसे भी रास्ता नहीं पता था। दोनों साथ चलने लगे। वे दोनों एक-दूसरे को

नहीं जानते थे, पर उनका लक्ष्य एक था। फिर उन दो लोगों को एक और व्यक्ति मिला, जिससे रास्ता पूछने पर उसने उसी ऊसर वाले रास्ते पर सीधा चलते जाने को कहा। वे दोनों फिर चलने लगे । एक आदमी रेशम के कपड़े पहने चला आ रहा था। उन्हें देखकर उसके भीतर कुछ जिज्ञासा हुई और तत्काल वह जिज्ञासा मुंह पर आ गई। उसने उनसे मंजिल पूछी । जानने पर उसने उन्हें उल्टी दिशा की ओर जाती पगडंडी दिखाई, पगडंडी से लगती बस्ती - बाजार का फायदा गिनाया, फिर आती गाड़ी में बैठ कर चला गया। वे दो लोग उसी पगडंडी की ओर निकल पड़े। हाट की तस्वीर से एक को समोसों की और दूजे को जलेबी की याद आ गई। साथ में दोनों को चाय की तलब

हुई । चाय की दुकान पर गजलें बजाते रेडियो से चाय का पूरा हो गया। और सफर यहीं पूरा हो गया ।

पैसा वसूल संदेश स्पष्ट है कि शरीर और मन का संतुलन, आहार- विहार की मर्यादा, कर्म का अनुशासन आदि । यही योग की आधारभूमि है। यह सरल प्रतीत होता है, पर यही कठिन है, क्योंकि इसमें कोई बाहरी चमत्कार नहीं, कोई रहस्यमयी अनुष्ठान नहीं, कोई मंचित विस्मय नहीं । मगर जनमानस का मन विचित्र है । वह अक्सर उस ओर आकृष्ट होता है, जो असामान्य हो, जो मंच पर खेल-सा प्रतीत हो, जहां प्रतीक, गूढ़ भाषा और इंद्रिय-उत्तेजक प्रयोग किसी 'उच्चतर अनुभूति' का आभास दे । ऐसे मार्ग, जो आरंभ में आत्म के विस्तार का वचन देते हैं,

अक्सर अंत में आत्म की विस्मृति की ओर ले जाते हैं । इतिहास के अनेक उदाहरण इस सत्य के प्रमाण हैं, जहां आरंभिक करुणा और तप की धारा बाद में रस, राग और रहस्य के चक्रव्यूह में उलझकर अपना मूल स्वर खो बैठी।

वास्तविक साधना में कोई प्रवेश शुल्क नहीं, न उसे हर बार केवल कोई दूरस्थ स्थान या कोई विशिष्ट स्वीकृति चाहिए। वह तो हमारे घर के एकांत में, हमारे भीतर के मौन में, श्वास की लय और आचरण की मर्यादा में निहित है। मगर शायद इसी कारण वह भीड़ की आंखों में फीकी पड़ जाती है। भीड़ के लिए आध्यात्मिकता अक्सर एक तमाशा होती है, जिसे वे देखना चाहते हैं, छूना चाहते हैं और जिसके माध्यम से वे यह अनुभव कर सकें कि वे किसी असाधारण शक्ति के साक्षी बन रहे हैं। यह तमाशा चाहे चमत्कारिक उपचार हो या किसी परंपरा - विरुद्ध आचरण का सार्वजनिक प्रदर्शन, उसमें नाटकीयता का तत्त्व ही उसका मुख्य आकर्षण बन जाता है।

यही कारण है कि इतिहास में अत्यधिक भव्य और वर्जना- भंग करने वाले आंदोलनों की लोकप्रियता साधारण, लेकिन गहन मार्गों की अपेक्षा कहीं अधिक रही है । यह प्रवृत्ति केवल धर्म में ही नहीं, बल्कि साहित्य, राजनीति और कला में भी दिखाई देती है। जहां गंभीर और संयत विचार धीमी गति से फैलते हैं, वहीं उग्र और असामान्य विचार, भीतर की अपेक्षा बाहर अधिक शोर करते हैं और इसी कारण तेजी से भीड़ को आकर्षित करते हैं। मनुष्य का मन अद्भुत विरोधाभासों से भरा है। वह शांति चाहता है, पर शांति की ओर जाने वाले मार्ग पर चलने के लिए अक्सर उसका धैर्य और संयम नहीं टिकता ।

दुनिया भर के महान ग्रंथों ने बार- बार यह संदेश दिया है कि धर्म का सार त्याग, आत्मसंयम और सत्य में निहित है । फिर भी, 'गुप्त रहस्य' और 'विशेष योग' का प्रलोभन लोगों को इस विश्वास की ओर खींचता है कि साधारण मार्ग पर्याप्त नहीं, उन्हें कुछ असाधारण चाहिए। यही वह बिंदु है, जहां साधना साधक के लिए साध्य न रहकर दृश्य-प्रदर्शन में बदल जाती है। इस विषय पर एक और गहन प्रश्न उठता है कि क्या यह प्रवृत्ति मात्र अज्ञान का परिणाम है, या इसमें सामाजिक-मानसिक संरचनाओं की भी भूमिका है ! संभव है, समाज में 'असाधारण' से प्रभावित होने की यह प्रवृत्ति मानव इतिहास के पुराने दौर से जुड़ी हो, जब समूह - नेतृत्व के लिए किसी विशेष या 'दैवी' शक्ति का प्रदर्शन अनिवार्य माना जाता था। उस काल के 'चमत्कार' आज के मंचीय आयोजनों में परिवर्तित हो गए हैं, पर मूल मनोवृत्ति वैसी की वैसी है।

अगर हम इस मानसिक प्रवृत्ति को पहचान लें और समझ लें तो शायद हम अपने समय के अनेक अनावश्यक भ्रमों और पाखंडों से बच सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

त्योहार मनाएं, लेकिन शरीर को सेहतमंद रखने के लिए ये फेस्टिव मंत्र भी अपनाएं

*विजय गर्ग

इस दौरान न तो खानपान पर लोगों का कंट्रोल रह पाता है और न ही वो यह ध्यान रख पाते हैं कि उनके शरीर के लिए कौन सी चीज ठीक है और कौन सी नहीं। इस दौरान तले-भुने पकवान, मिठाइयां और अल्कोहल का जमकर इस्तेमाल होता है। जब खाने को आसपास इतनी सारी वेरायटी की स्वादिष्ट चीजें हों तो सेहत और हाजमे का ख्याल रखना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। कुछ लोग तो पेट को डस्टबिन समझकर दिन भर इसमें कुछ न कुछ डालते रहते हैं। ऐसे में एसिडिटी, पेट फूलना, सिरदर्द और कभी-कभी हार्ट अटैक तक की नौबत आ सकती है। इस हार्ट अटैक को फेस्टिव हार्ट सिंड्रोम भी कहा जाता है, जो ज्यादा खानपान और हरारत की वजह से होता है।

फेस्टिव सीजन में ओवरईटिंग की दिक्कत

रांची में इंटरनल मेडिसिन के डॉक्टर रविकांत चतुर्वेदी कहते हैं कि अक्टूबर, नवंबर और दिसंबर के महीने त्योहारी महीने हैं। इस दौरान सबसे ज्यादा समस्या ओवरईटिंग की होती है, जिससे पेट फूलना, एसिडिटी, फूड पॉइजनिंग और उससे जुड़ी समस्याएं होती हैं। इसके अलावा ज्यादा मात्रा में अल्कोहल लेने से भी एसिडिटी और गैस्ट्राइटिस की समस्या हो जाती है। ज्यादा अल्कोहल लेने से खून में शुगर लेवल, ब्लड प्रेशर या कोलेस्ट्रॉल लेवल तेजी से बढ़ जाता है। खासकर उन लोगों में यह और भी ज्यादा देखा जाता है, जो पहले से डायबिटीज और हाइपरटेंशन के मरीज हैं।

त्योहारों में मैदे और शुगर का बहुत ज्यादा इस्तेमाल

त्योहारों में मैदे और चीनी का इस्तेमाल काफी होता है, जो हमारे शरीर के लिए काफी नुकसानदेह है। मिठाइयों पर चांदी का वर्क लगा होता है, जो दरअसल एल्युमिनियम का होता है। यह सेहत के लिए अच्छा नहीं है। इसके अलावा, मिठाइयों को सुंदर बनाने के लिए उसमें आर्टिफिशियल कलर और केमिकल प्रिजर्वेटिव्स मिलाते हैं, जो किडनी और लिवर को डैमेज कर सकता है। मिठाइयों की जगह आजकल दोस्तों या रिश्तेदारों को ड्राईफ्रूट्स या नट्स देने का चलन काफी है, जो अच्छा विकल्प है।

जहरीले तेल में बनते हैं फूड आइटम्स, हार्ट अटैक का खतरा

त्योहारों में दुकानों में बनने वाली मिठाइयां या नमकीन बार-बार जले हुए तेल में तली जाती हैं। तेल बार-बार जलने से जहरीले केमिकल में बदल जाता है। कुकिंग ऑइल तीन से ज्यादा बार इस्तेमाल होने पर वह कार्सिनोजेनिक हो जाता है। कार्सिनोजेन ऐसा एजेंट होता है, जो कैंसर का कारण बनता है। कैंसर होने के अलावा हार्ट की नसों में ब्लॉकेज, किडनी, लिवर की बीमारियां हो सकती हैं। जला हुआ तेल शरीर में लो डेंसिटी लाइपोप्रोटीन यानी बैड कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है। यह हार्ट अटैक, हार्ट स्ट्रोक को बढ़ाता है। जले हुए तेल में खाने से गले में जलन और एसिडिटी की शिकायत हो सकती है। मोटापे और डायबिटीज का खतरा रहता है।

ज्यादा मीठा खाने वाली महिलाओं को डिप्रेशन की समस्या

नेशनल इंस्टीट्यूट्स ऑफ हेल्थ की एक स्टडी में 69 हजार महिलाओं पर शुगर के असर को देखा गया। रिसर्चर ने पाया कि जो महिलाएं ज्यादा शुगर का सेवन करती थीं, उनमें डिप्रेशन का खतरा ज्यादा रहता था। जबकि जो महिलाएं कम शुगर लेती थीं, वो डिप्रेशन की चपेट में नहीं आती थीं।

त्योहार में आपकी सेहत बनाए रखेंगे ये तरीके

ओवरईटिंग: ऐसे लगाएं लगाम

दिन भर हर थोड़ी देर में खूब पानी पिएं। शरीर में नमी बनाए रखें।

कहीं खाना खाने गए हैं तो पहले बैठ जाएं और एक ही जगह खाना खाएं।

खाने का वक्त नियत करें। हर थोड़ी देर पर मुंह में कुछ-कुछ डालते न रहें।

त्योहार पर उपहार के बतौर आए फूड पैकेट एक साथ खोलकर न बैठें। थोड़ा सा ही खाएं।

अपनी थाली में कोई भी तीन फूड आइटम्स ही लें।

आखिर में ताजा बना हुआ कोई एक मीठा या डेजर्ट लें।

अल्कोहल: दूरी बनाएं या फ्रूट जूस पिएं

किसी भी तरह का अल्कोहल नुकसान पहुंचा सकता है। अच्छा है कि इससे दूरी बरतें।

अगर आप ड्रिंक लेना चाहते हैं तो खाना खाने के बाद ही लें।

दो ड्रिंक्स के बीच एक गिलास पानी जरूर पिएं।

अल्कोहल के बजाय फ्रूट जूस या नारियल पानी लें।

सेहत डांवाडोल हो गई तो अगले दिन ये करें काम

नॉर्मल रूटीन अपनाएं। न तेजी से और न कम खाएं और न ही ज्यादा एक्सरसाइज करें।

दिन की शुरुआत एक गिलास पानी से करें। सिरदर्द हो तो केला खाएं।

एसिडिटी या पेट फूला हो तो गुलकंद भी खा सकते हैं।

बाजार की मिठाइयों से दूरी ही बरतें, भोजन में लें फाइबर

डॉक्टरों के मुताबिक, त्योहारों के मौसम में हमें पूड़ी-कचौड़ी, पकौड़ी, स्नैक्स, समोसे वगैरह ही खाने को मिलते हैं। एक बार खाने के बाद इनसे दूरी बरतें। खाने में दही का इस्तेमाल जरूर करें। कहीं भी जाएं, भोजन में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम से कम लें।

इसके अलावा नीचे लिखी बातों का खास ख्याल रखें-

1. फाइबर और प्रोटीन वाली चीजें ज्यादा खाएं। सलाद का भरपूर सेवन करें।

2. ज्यादातर मिठाइयां दूध, मलाई और चीनी से बनाई जाती हैं। इसके बजाय, गुड़ से बनी मिठाई खा सकते हैं।

3. बाजार की मिठाइयों से बचें।

4. त्योहार के समय भी रेगुलर एक्सरसाइज न छोड़ें।

5. दिन भर खूब पानी पीते रहें। कम से कम 8 गिलास पानी जरूर पिएं।

6. घर का बना ताजा जूस, नींबू पानी, नमकीन लस्सी, छाछ, खीरा या फलों का जूस या नारियल पानी पिएं।

7. 8 घंटे की पर्याप्त नींद लेना चाहिए।

इससे त्योहारों में खोई हुई सेहत फिर से वापस पाई जा सकती है।

त्योहार के समय शरीर की बिगड़ी हालत को संवारने और उसे डिटॉक्स करने के लिए घर पर ही कुछ उपाय अपना सकते हैं।

बॉडी को ऐसे करें डिटॉक्स

1-सुबह उठते ही गुनगुने पानी में नींबू पिएं या रात में पानी में पुदीना भिगोकर रख दें। यह पानी पूरा दिन पिएं।

2-दिन भर घर का बना ताजा जूस, नींबू पानी, नमकीन लस्सी, छाछ, खीरा या फलों का जूस लें।

3-खाने में कोई ठोस आहार न लें। लिक्विड ही इस्तेमाल करें। खिचड़ी या दलिया ले सकते हैं, लेकिन दालें नहीं खानी हैं।

4-सब्जियों और फलों का सलाद खाएं। कच्ची सब्जी या फल न अच्छे लगते हों तो जूस, सूप या स्मूदी बनाकर पिएं।

5-दूध, पनीर जैसे डेयरी प्रोडक्ट न लें। अदरक और हल्दी का पानी लें। नियमित अंतराल पर फल खाएं।

6-डिटॉक्स वॉटर पिएं। इसे बनाने के लिए रात में पानी में पुदीना, खीरा और नींबू काटकर रख दें। इस पानी को दूसरे दिन थोड़ा-थोड़ा पिएं।

आपदा रोकथाम: सिर्फ बचाव नहीं, भविष्य का निर्माण

प्राकृतिक आपदाएँ—भूकंप, बाढ़, सूखा, सुनामी, तूफान और चक्रवात—प्रकृति की उन अनियंत्रित शक्तियों का प्रतीक हैं, जो मानव जीवन, सभ्यता और पर्यावरण को गहराई से प्रभावित करती हैं। ये आपदाएँ न केवल भौतिक विनाश का कारण बनती हैं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय ढाँचे को भी तहस-नहस कर देती हैं। विश्व प्राकृतिक आपदा रोकथाम दिवस, जो प्रत्येक वर्ष 13 अक्टूबर को मनाया जाता है, हमें इन आपदाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने, जोखिम न्यूनीकरण के लिए ठोस कदम उठाने और एक सुरक्षित, लचीले भविष्य की दिशा में सामूहिक प्रयास करने का अवसर देता है। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि भले ही प्राकृतिक आपदाओं को पूरी तरह रोका न जा सके, लेकिन समयबद्ध तैयारी, तकनीकी नवाचार और सामुदायिक जागरूकता के बल पर उनके विनाशकारी प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

इस दिवस की शुरुआत 1989 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा ₹अंतरराष्ट्रीय प्राकृतिक आपदा न्यूनीकरण दशक₹ के हिस्से के रूप में की गई थी। 2009 में इसे स्थायी रूप से 13 अक्टूबर को मनाने का निर्णय लिया गया, ताकि वैश्विक स्तर पर आपदा जोखिम प्रबंधन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा सके। यह दिवस केवल सरकारी या अंतरराष्ट्रीय संगठनों तक सीमित नहीं है; यह प्रत्येक व्यक्ति, समुदाय और संगठन को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करता है। इसका मूल मंत्र है—जागरूकता, शिक्षा और सामुदायिक सहयोग के माध्यम से आपदाओं के प्रभाव को न्यूनतम करना और समाज को अधिक सशक्त व लचीला बनाना।

प्राकृतिक आपदाओं के प्रभाव को कम करने में पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ निर्णायक भूमिका निभाती हैं। शोध बताते हैं कि यदि किसी आपदा की चेतावनी 24 घंटे पहले मिल जाए, तो जीवन और संपत्ति की हानि को 30–40% तक कम किया जा सकता है। आधुनिक मौसम विज्ञान और उपग्रह प्रौद्योगिकी ने चक्रवातों और बाढ़ की सटीक भविष्यवाणी को संभव बनाया है। भारत इसका जीवंत उदाहरण है। 1999 के ओडिशा चक्रवात में लगभग 10,000 लोगों की जान गई थी, लेकिन 2013 के चक्रवात फैलिन और 2019 के चक्रवात फानी के दौरान उन्नत चेतावनी प्रणालियों और प्रभावी निकासी योजनाओं ने हानि को न्यूनतम किया। यह दर्शाता है कि तकनीकी प्रगति और त्वरित कार्रवाई कितनी प्रभावशाली हो सकती है।

फिर भी, केवल तकनीक ही पर्याप्त नहीं है। आपदा जोखिम न्यूनीकरण में सामुदायिक भागीदारी और शिक्षा का विशेष स्थान है। जापान इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ स्कूलों में बच्चों को नियमित रूप से भूकंप और सुनामी ड्रिल के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है, और प्रत्येक नागरिक को आपदा प्रबंधन की बुनियादी जानकारी होती है। भारत में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) ने स्कूलों और कॉलेजों में आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण को बढ़ावा देना शुरू किया है, लेकिन इसे और अधिक व्यापक और गहन करने की आवश्यकता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ संसाधनों और जागरूकता की कमी है, स्थानीय समुदायों को स्वयंसेवी दलों के रूप में प्रशिक्षित करना और आपदा प्रबंधन की आधारभूत जानकारी प्रदान करना अनिवार्य है। यह सामूहिक प्रयास ही हमें एक सुरक्षित और सशक्त भविष्य की ओर ले जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन ने प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता को अभूतपूर्व स्तर पर बढ़ा दिया है। विश्व मौसम संगठन (डब्ल्यूएमओ) की एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछले पाँच दशकों में मौसम संबंधी आपदाएँ पाँच गुना बढ़ी हैं, जिसका मूल कारण ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरणीय असंतुलन है। भारत में हिमालयी क्षेत्रों में ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना, जैसे 2021 की चमोली आपदा में देखा गया, और तटीय क्षेत्रों में चक्रवातों की बढ़ती घटनाएँ इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। इसलिए, आपदा जोखिम न्यूनीकरण को सतत विकास और जलवायु अनुकूलन रणनीतियों के साथ एकीकृत करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण, बड़े पैमाने पर वनरोपण, और कार्बन उत्सर्जन में कमी जैसे कदम न केवल आपदाओं की तीव्रता को कम कर सकते हैं, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक स्थायी और सुरक्षित पर्यावरण भी सुनिश्चित करते हैं।

आधुनिक तकनीक ने आपदा प्रबंधन को क्रांतिकारी रूप दिया है। उपग्रह इमेजिंग, ड्रोन, और भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) ने आपदा प्रभावित क्षेत्रों का त्वरित आकलन और राहत कार्यों को अभूतपूर्व रूप से प्रभावी बनाया है। उदाहरण के लिए, 2018 की केरल बाढ़ में ड्रोन ने दुर्गम क्षेत्रों में राहत सामग्री पहुँचाने और क्षति के आकलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग मौसम पैटर्न की सटीक भविष्यवाणी, जोखिम विश्लेषण, और संसाधन वितरण को अनुकूलित करने में गेम-चेंजर साबित हो रहे हैं। ये तकनीकें न केवल समय पर चेतावनी देती हैं, बल्कि राहत कार्यों को त्वरित और व्यवस्थित बनाकर जीवन रक्षा की संभावनाओं को बढ़ाती हैं।

आपदा प्रबंधन में सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका अपरिहार्य है। भारत में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) और राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एसडीएमए) नीति निर्माण और समन्वय में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। वैश्विक स्तर पर, संयुक्त राष्ट्र का सेंडाई फ्रेमवर्क (2015–2030) आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए एक समग्र रोडमैप प्रदान करता है, जिसमें जोखिम समझ, शासन को मजबूत करना, सामुदायिक लचीलापन बढ़ाना, और पुनर्वास के लिए निवेश जैसे आयाम शामिल हैं। लेकिन इन नीतियों की सफलता तभी संभव है, जब स्थानीय समुदायों को सक्रिय रूप से शामिल किया जाए और उनकी क्षमताओं को सशक्त बनाया जाए।

विश्व प्राकृतिक आपदा रोकथाम दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि आपदा प्रबंधन केवल तात्कालिक राहत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक दीर्घकालिक और समग्र प्रक्रिया है। इसमें पूर्व तैयारी, जोखिम मूल्यांकन, और पुनर्वास के साथ-साथ सामाजिक और मानसिक पुनर्जनन भी शामिल है। आपदाएँ अक्सर गरीब और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सबसे अधिक प्रभावित करती हैं, इसलिए सामाजिक समावेशन, समानता, और आजीविका के अवसरों पर आधारित नीतियाँ बनाना अनिवार्य है। आपदा के बाद प्रभावित लोगों को न केवल आर्थिक सहायता, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य सहायता और दीर्घकालिक पुनर्वास के अवसर प्रदान करके ही हम एक सशक्त और लचीला समाज बना सकते हैं। यह दिवस हमें एकजुट होकर प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने और एक सुरक्षित भविष्य की नींव रखने की प्रेरणा देता है।

विश्व प्राकृतिक आपदा रोकथाम दिवस हमें पर्यावरण के प्रति हमारी जवाबदेही को रेखांकित करता है। अवैध खनन, जंगलों की अंधाधुंध कटाई और अनियोजित शहरीकरण जैसी गतिविधियाँ प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता को न केवल बढ़ाती हैं, बल्कि मानव जीवन और प्रकृति के बीच संतुलन को भी भंग करती हैं। उदाहरण के लिए, उत्तराखंड में बार-बार होने वाली बाढ़ और भूस्खलन की घटनाएँ अनियोजित निर्माण और पर्यावरणीय क्षरण का स्पष्ट परिणाम हैं। इसलिए, पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास को आपदा प्रबंधन रणनीतियों का मूल आधार बनाना अनिवार्य है। हरित ऊर्जा को बढ़ावा देना, वन संरक्षण को प्राथमिकता देना और सुनियोजित शहरी विकास को अपनाना न केवल आपदाओं के प्रभाव को कम करेगा, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक टिकाऊ भविष्य भी सुनिश्चित करेगा।

विश्व प्राकृतिक आपदा रोकथाम दिवस महज एक वार्षिक आयोजन नहीं, बल्कि निरंतर जागरूकता और ठोस कार्रवाई का आह्वान है। यह हमें यह चेतना देता है कि भले ही प्राकृतिक आपदाएँ अपरिहार्य हों, लेकिन उनके विनाशकारी प्रभाव को कम करना और समाज को अधिक लचीला बनाना हमारे सामूहिक प्रयासों पर निर्भर है। इसके लिए तकनीकी नवाचार, सामुदायिक सहभागिता, प्रभावी सरकारी नीतियाँ और पर्यावरण संरक्षण का एकीकृत समन्वय आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण है—चाहे वह आपदा के लिए पूर्व तैयारी हो, पर्यावरण संरक्षण में योगदान हो, या जागरूकता के प्रसार में सक्रिय भागीदारी हो। यह दिवस हमें एकजुट होकर एक ऐसे समाज की नींव रखने की प्रेरणा देता है, जो प्रकृति की अनियंत्रित शक्तियों के सामने न केवल डटकर मुकाबला कर सके, बल्कि एक सुरक्षित, सशक्त और समृद्ध भविष्य का निर्माण भी कर सके।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध

चक्रव्यूह ज्यों उलझता जा रहा सुसाइड प्रकरण

सुशील कुमार 'नवीन'

मैनेजमेंट का एक सीधा और सपाट फार्मूला है कि यदि छोटे नुकसान को भुगतने से बड़ा नुकसान टलता हो तो वह जोखिम उठा लेना चाहिए। समय की महता को ध्यान में रखकर लिया गया इस प्रकार का रणनीतिक निर्णय कई बार भविष्य के बड़े नुकसान से बचा जाता है। आप भी सोच रहे होंगे कि व्यंग्य की कक्षा के विद्यार्थी के श्रीमुख से आज नफा-नुकसान की चर्चा कैसे?

अब एक नजर हरियाणा में चल रहे एक मामले पर डालते हैं। हरियाणा के एक वरिष्ठ आईपीएस वाई पूरन कुमार ने मंगलवार को कनपटी पर गोली मारकर खुदकुशी कर ली। चंडीगढ़ के सेक्टर-11 स्थित कोठी के साउंडप्रूफ कमरे में इस घटना को अंजाम दिया। पुलिस को मौके से 8 पेज का सुसाइड नोट और 1 पेज की वसीयत मिली है। सुसाइड नोट में कुछ वरिष्ठ आईपीएस, आईएएस अधिकारियों व रिटायर्ड अधिकारियों के नाम हैं। इन पर मानसिक रूप से प्रताड़ित करने के आरोप लगाए गए हैं। पूरन कुमार का 29 सितंबर को रोहतक स्थित सुनारिया पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में आईजी पद पर तबादला हुआ था। इससे पहले वे रोहतक रेंज के आईजी थे। पूरन कुमार ने 2 अक्टूबर को 2 दिन की छुट्टी ली थी। बुधवार को उन्हें ड्यूटी पर जाना था। इससे पहले उन्होंने आत्महत्या कर ली।

सामान्य व्यक्ति द्वारा की गई ये आत्महत्या होती तो मामला कुछ घंटों या एक-दो दिन में निपट जाता, पर इस आत्महत्या ने तो केंद्र तक को हिलाकर रखा हुआ है। यहां तक प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी भी दो धड़ों में बंट नई परेशानी खड़ी किए हुए है। बड़े-बड़े अधिकारी मामले में अग्रणी हैं। मामले की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मृत एडीजीपी का परिवार डीजीपी शत्रुजीत कपूर और एसपी नरेंद्र बिजारणियां की गिरफ्तारी न होने तक पोस्टमार्टम न करवाने पर अड़ा है। सरकार के बड़े अफसरान से लेकर मंत्री समूह लगातार वार्ता पर वार्ता किए जा रहा है। परिणाम अभी भी जीरो है। इसी बीच जातिगत संगठनों और विपक्ष ने अलग से मोर्चा खोल दिया है। अब इस चक्रव्यूह से निपटा कैसे जाए, इसी के लिए नायब सरकार के अधिकारी दिन-रात लगे हुए हैं। चंडीगढ़ पुलिस ने 8 पेज के सुसाइड नोट के आधार पर एफआईआर तो दर्ज कर ली है। पर इससे अभी एडीजीपी का परिवार संतुष्ट नहीं है। मृतक की पत्नी और वरिष्ठ आईएएस अमनीत पी.कुमार के अनुसार एफआईआर अधूरी है।

अब होना क्या चाहिए था। इस पर भी चर्चा होनी जरूरी है। मामला बड़ा तो शुरू से ही था। मृतक वरिष्ठ आईपीएस, आरोपी भी वरिष्ठ आईपीएस और आईएएस। कहना आसान है कि सरकार यदि इस मामले में शुरुआत में ही गंभीरता दिखाती तो मामला इतना आगे नहीं बढ़ पाता। सरकार द्वारा एक साथ इतने बड़े प्रशासनिक अमले पर कार्रवाई के आदेश में देरी मामले को और बढ़ा गई। अब मामला धीरे-धीरे जातीय और राजनीतिक रंग ले जाता जा रहा है। ऐसे में परिवार की प्रमुख मांग आरोपी अधिकारियों की गिरफ्तारी होनी जरूरी बन रही है। इससे पीड़ित परिवार को एक बार संबल प्राप्त होगा। जांच होती रहेगी। संवेदनशील मामलों पर प्रशासन और सरकार सबसे पहले यही काम तो करते हैं। अब नाम बड़े अधिकारियों के हैं तो बात थोड़ी गंभीर है। पर जितना ज्यादा समय बढ़ रहा है। परेशानी उतनी ही और ज्यादा बढ़ रही है। चाणक्य नीति में साफ कहा गया है कि -

नात्यन्तं सरलैर्भाव्यं गत्वा पश्य वनस्थलीम्।
छिद्यन्ते सरलास्तत्र कुब्जास्तिष्ठन्ति पादपाः॥

अर्थ है कि मनुष्य को अपने व्यवहार में बहुत ही भोलापन या सीधापन नहीं दिखाना चाहिए। ध्यान रहे वन में जो सीधे पेड़ पहले काटे जाते हैं, और जो पेड़ टेढ़े हैं वो खड़े रहते हैं। सरकार को चाहिए कि इस मामले में पुलिस प्रशासन को फ्री हैंड करें। जो तुरंत हो सकता है वो करें। शेष एसआईटी पर छोड़ दें। सारा मामला अपने आप सामने आ जायेगा।

रामधारी सिंह दिनकर की ये पंक्तियां मामले को और भी संबल देने का कार्य करेंगी-

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध।

पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में उड़िया मेडिकल छात्रा के साथ सामूहिक बलात्कार, इसकी जितनी भी निंदा की जाए, कम होगी: बिरंची नारायण त्रिपाठी

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर : पड़ोसी राज्य पश्चिम बंगाल में कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। विधायकों और सांसदों पर दोपहर में हमले हो रहे हैं। कल दुर्गापुर में एक उड़िया युवती और एक मेडिकल कॉलेज छात्रा के साथ सामूहिक बलात्कार बेहद अस्वीकार्य और शर्मनाक है, इसकी जितनी भी निंदा की जाए, कम होगी। प्रदेश उपाध्यक्ष श्री बिरंची नारायण त्रिपाठी ने मांग की है कि घटना में शामिल दोषियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाए और उन्हें कड़ी सजा दी जाए।

प्रदेश कार्यालय में आयोजित एक प्रेस वार्ता में श्री त्रिपाठी ने कहा कि कल मेडिकल परिसर में पीड़ित छात्रा के साथ हुई अमानवीय और बर्बर घटना ने राज्य में महिलाओं की सुरक्षा पर एक बड़ा सवालिया निशान खड़ा कर दिया है। पश्चिम बंगाल सरकार ने अभी तक बलात्कारी की पहचान या गिरफ्तारी नहीं की है। यहाँ तक कि स्थानीय पुलिस भी सहयोग नहीं कर रही है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री एक महिला हैं, लेकिन उनकी संवेदनशीलता दिखाई नहीं देती। दो दिन पहले, पश्चिम बंगाल के माननीय राज्यपाल ने राज्य की बिगड़ती कानून-व्यवस्था के लिए ममता बनर्जी सरकार को सार्वजनिक रूप से फटकार लगाई थी। हालाँकि, श्री त्रिपाठी ने कहा कि स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। ओडिशा सरकार और माननीय मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी ने दुर्गापुर मेडिकल छात्रा बलात्कार की घटना की कड़ी निंदा की है और इसे बेहद गंभीरता से लिया है। उन्होंने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री से अपराधी की तत्काल गिरफ्तारी और पीड़िता के उचित इलाज व सुरक्षा की माँग की है। साथ ही, मुख्यमंत्री ने ओडिशा सरकार के अधिकारियों को पश्चिम बंगाल जाकर घटना पर विस्तृत चर्चा करने और पीड़िता व उसके परिवार को हर संभव सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया है। श्री त्रिपाठी ने चेतावनी दी है कि अगर आरोपी को तुरंत गिरफ्तार नहीं किया गया और कड़ी सजा नहीं दी गई, तो पश्चिम बंगाल भाजपा सड़कों पर उतरकर विरोध प्रदर्शन करेगी।

इस अवसर पर प्रदेश प्रवक्ता श्री दिलीप मल्लिक और प्रदेश मीडिया समन्वयक श्री सुजीत कुमार दास उपस्थित थे।

नुआपाड़ा में एक बात, इस बार घासिराम

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर:- प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष भक्त चरण दास ने नुआपाड़ा उपचुनाव के लिए उम्मीदवारों के नामांकन को लेकर कांग्रेस भवन में मीडिया पर जमकर निशाना साधा। श्री दास ने कहा, बीजद उम्मीदवार नहीं उतार सकती। वहीं, भाजपा के पास अपना उम्मीदवार नहीं है, वह दूसरे दलों की ओर देख रही है। भाजपा और बीजद की यह स्थिति क्यों है? कांग्रेस बार-बार कहती रही है कि ये दोनों दल भाई-भाई हैं। उपराष्ट्रपति चुनाव में मतदान से अनुपस्थित रहकर बीजद ने अप्रत्यक्ष रूप से भाजपा का समर्थन किया है। और जब कांग्रेस राज्य में भ्रष्टाचार, महिला उत्पीड़न, बलात्कार, अपराध आदि के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लेकर आई, तो बीजद ने कोई मदद नहीं की। बल्कि विधानसभा को खाली कराकर राज्य सरकार की मदद कर रही है। राज्य की जनता ने भी यह देखा है। नुआपाड़ा में बीजद और भाजपा दोनों के उम्मीदवार, पूर्व सांसद, विधायक और मेहनती कार्यकर्ता हैं। लेकिन वे उन पर अपना विश्वास नहीं जता पाए। कांग्रेस उम्मीदवार गाजीराम माझी से डरकर उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार को अपनी ओर करने की कोशिश की। लेकिन वे सफल नहीं हुए क्योंकि वह एक विचारशील और ईमानदार व्यक्ति हैं। उनके दिल में कांग्रेस की विचारधारा है। वह एक उग्र क्रांतिकारी व्यक्ति हैं। उन्होंने पहले पांच बार चुनाव लड़ा है, उनके पास कोई पैसा या ताकत नहीं है, फिर भी वह हारे नहीं हैं और अपना संघर्ष जारी रखा है। इसलिए, वे उन्हें खरीद नहीं सकते थे या उन्हें डरा-धमकाकर अपने पक्ष में नहीं ला सकते थे। प्रचार यह है कि भाजपा पार्टी बीजद उम्मीदवार को लालच देने में सक्षम थी और उसने उसका पक्ष लिया है। बीजद प्रेस कॉन्फ्रेंस से पता चला है कि वह अब बीजद में नहीं है। सूत्रों का कहना है कि वह कल दिल्ली भाजपा कार्यालय में थे और आज उनके समर्थक भाजपा कार्यालय में घूमते देखे गए। प्रचार यह है कि बीजद उम्मीदवार को भाजपा में स्थानांतरित कर दिया गया है और एक बड़े समूह के अनुसार, उन्हें आतंक पैदा करके करोड़ों रुपये के बदले भाजपा में लाया गया है। बीजेडी बहुत ही घटिया है, पिछले 25 सालों से सत्ता में थी, लेकिन विपक्ष में आते ही बीजेपी के दलाल की तरह व्यवहार कर रही है। जो राज्य की राजनीति के लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। अब बीजेडी अलग-अलग लोगों के ज़रिए हमारे उम्मीदवार उतारने की कोशिश कर रही है। राज्य की जनता ऐसी घटिया राजनीति देखने की आदी हो चुकी है।

उन्होंने यह भी कहा कि गाजीराम माझी शेर हैं। हम घास नहीं खाएँगे, चाहे भूखे मर जाएँ। उनके पास न पैसा है, न संसाधन, लेकिन उनमें आत्मविश्वास है। पाँच बार हार चुके माझी के प्रति लोगों की सहानुभूति है, आदिवासी समुदाय के साथ-साथ वे उनके साथ हैं। सबके मन में एक ही बात है, वे पाँच बार हार चुके हैं, आज हम गाजीराम को देखेंगे। आज पूरे राज्य में कांग्रेस का माहौल बन गया है। जो भी कांग्रेस की विचारधारा और गांधी के सिद्धांतों से प्रेरित है, जो भी स्वाभिमानी है, जो भी लड़ाकू है, उसका कांग्रेस में स्वागत है। हम उन्हें नैतिक साहस देंगे, न्याय के लिए संघर्ष करेंगे और उन्हें स्वाभिमान और सत्य के मार्ग पर सिर ऊंचा करके ले चलेंगे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने दृढ़ता से कहा कि हम खरीद-फरोख्त की इस राजनीति से ऊपर रहकर उन्हें एक अलग तरह की राजनीति करने का मौका दे सकते हैं और उन्होंने प्रदेश की जनता से राजनीति और लोकतंत्र को बचाने का आह्वान किया।

पश्चिमी सिंहभूम में डायरिया से पांच आदिवासियों की मौत, बीस बीमार

लौह अयस्क अंचल मे प्रदुषित पेयजल व स्वक्षता का अभाव ही मुख्य कारण

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

किरिबुरू। झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के नोवामुंडी प्रखंड के कई गांवों में डायरिया ने गंभीर रूप ले लिया है। पिछले एक सप्ताह में इस बीमारी से पांच लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि बीस से अधिक ग्रामीण बीमार बताए जा रहे हैं। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग ने तत्काल चिकित्सा दलों को प्रभावित क्षेत्रों में भेजा है।

जानकारी के अनुसार, कादोजामदा, मोहदी, पादापहाड़ और मुंडासाई गांवों में डायरिया के मामले तेजी से बढ़े हैं। आदिवासी शुरुआत में लोग घरेलू उपचार पर निर्भर रहे, जिसके कारण संक्रमण फैलता गया और हालात गंभीर हो गए। स्थानीय प्रतिनिधि द्वारा सूचना दिए जाने पर स्वास्थ्य विभाग हरकत में आया।

जगन्नाथपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक सोनाराम सिंकू ने स्वयं प्रभावित गांवों का दौरा किया। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि इलाके में तत्काल स्वास्थ्य शिविर लगाए जाएं और किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

जिले के सिविल सर्जन डॉ. सुशांतो कुमार माझी ने बताया कि टीमों को गांवों में भेजा गया है। अब तक 10 से अधिक मरीजों को विभिन्न अस्पतालों में भर्ती कराया गया है, जिनमें कई की स्थिति गंभीर है। टाटा स्टील के नोवामुंडी अस्पताल में डायरिया पीड़ितों के लिए विशेष वार्ड तैयार किया गया है, जहां चार मरीजों को आईसीयू में रखा गया है।

स्थानीय निवासियों ने बताया कि क्षेत्र में लंबे समय से दूषित पेयजल की समस्या बनी हुई थी। बारिश के बाद जलस्रोतों में गंदगी और कीचड़ भर जाने से संक्रमण फैलने की आशंका बढ़ी है। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने पानी के नमूने लेकर जांच शुरू कर दी है।

विभाग द्वारा ग्रामीणों से उबला हुआ पानी पीने, हाथ धोने की आदत अपनाने और आसपास की स्वच्छता बनाए रखने की अपील की गई है। प्रशासन ने कहा है कि जल्द ही जल स्रोतों की सफाई और क्लोरीनेशन का कार्य भी कराया जाएगा, ताकि बीमारी को फैलने से रोका जा सके।

राउरकेला की अनदेखी पर फूटा जनाक्रोश: शहर के खोए गौरव को पुनः स्थापित करने की जोरदार मांग

शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन और रेलवे सुविधाओं में हो तत्काल सुधार - राजकुमार यादव

राउरकेला। कभी औद्योगिक क्रांति और शैक्षणिक उत्कृष्टता का चमकता सितारा रहा राउरकेला शहर आज सरकारी उपेक्षा और विकास की कमी से जूझ रहा है। इस शहर के निवासियों का धैर्य अब जवाब दे चुका है। इसी क्रम में ओबीसी अधिकार मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉक्टर राजकुमार यादव ने सरकार से अपील की कि राउरकेला के साथ सौतेला पन दिखाना बंद करें आज विभिन्न मामलों में राउरकेला विकास की गति में पीछड़ रहा है जो राउरकेला के जनता कभी भी बर्दाश्त नहीं करेगी 1 राउरकेला को उसके पूर्व गौरवपूर्ण दर्जे पर लौटाते हुए विकास की धारा में, और शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन तथा रेलवे जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में तत्काल सुधार किए जाएं। राउरकेला की गिरती स्थिति के खिलाफ एक सशक्त चेतावनी है। शहर की दयनीय हालत पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राउरकेला, जो ओडिशा का आर्थिक इंजन माना जाता था, अब पिछड़ता चला जा रहा है। राउरकेला स्टील प्लांट (आरएसपी) जैसे प्रमुख उद्योगों के बावजूद, शहर की बुनियादी सुविधाएं चरमरा रही हैं, जिससे निवासियों का जीवन प्रभावित हो रहा है। दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि राउरकेला इस्पात संयंत्र व उसके प्रबंधन को राउरकेला शहर से लेने में विश्वास है लेकिन जब देने की बात आती है तो अपने सीमित दायरे में सिमट जाता है1 "राउरकेला रेलवे नेटवर्क" चक्रधरपुर डिवीजन में सर्वाधिक राजस्व का योगदान देता है, फिर भी इसे स्वतंत्र रेल डिवीजन का दर्जा क्यों नहीं मिल रहा? यह स्पष्ट व सीधे तौर पर उपेक्षा का रवैया है। रेलवे स्टेशन पर सुविधाओं की कमी से यात्रियों को रोजाना परेशानी का सामना करना पड़ता है, और नई ट्रेनों की मांग वर्षों से लंबित है। यदि सरकार ने तत्काल कदम नहीं उठाए, तो हमे आंदोलन का रास्ता अपनाना होगा।₹

स्वास्थ्य क्षेत्र की बात करें तो, कभी राज्य का सबसे विश्वसनीय अस्पताल माना जाने वाला इंदिरा गांधी अस्पताल (आईजीएच) आज बदहाली की चपेट में है। अपर्याप्त चिकित्सा उपकरण, सुप्रशिक्षित एवं अनुभवी डॉक्टरों की कमी और बुनियादी सुविधाओं के अभाव से मरीजों को मजबूरन "आईजीएच को आधुनिक अस्पताल में तब्दील करने की मांग हम वर्षों से कर रहे हैं, लेकिन सरकार की उदासीनता से शहरवासियों की जान खतरे में है,इसे सुरक्षित करना सरकार का ही दायित्व है । स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार न केवल आवश्यक है, बल्कि यह हमारा मौलिक अधिकार है।"

शिक्षा के मोर्चे पर भी स्थिति चिंताजनक है। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) और बी पी यु टी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों को छोड़कर, अन्य स्कूलों और कॉलेजों की गुणवत्ता में भारी गिरावट आई है यहां एक विश्वविद्यालय व केंद्रीय विद्यालय की परम

आवश्यकता है । अपर्याप्त शिक्षक, पुरानी प्रयोगशालाएं और बुनियादी सुविधाओं की कमी से छात्रों का भविष्य दांव पर लगा है 1 "राउरकेला को शिक्षा हब बनाने के वादे हवा-हवाई साबित हो रहे हैं। हमारी पीढ़ी का भविष्य अंधकार में डूब रहा है क्योंकि सरकारी स्कूलों में पर्याप्त एवं अनुभवी शिक्षक नहीं हैं और महाविद्यालयों में प्रयोगशालाएं अपडेट नहीं हैं। हम मांग करते हैं कि सभी शिक्षण संस्थानों को अपग्रेड किया जाए और नए कोर्सेस शुरू किए जाएं, वरना हम सड़कों पर उतरकर अपनी आवाज बुलंद करेंगे।"

परिवहन की बात करें तो, राउरकेला हवाई अड्डे की सेवाएं पूरी तरह बंद होने से शहर की कनेक्टिविटी बुरी तरह प्रभावित हुई है। इससे न केवल पर्यटन बल्कि आर्थिक गतिविधियां भी ठप्प हो गई हैं।₹हवाई सेवा बंद होने से हमारे व्यापार पर सीधा असर पड़ा है। ग्राहक और आपूर्तिकर्ता अब राउरकेला आने से सीधे तौर पर कतराने लगे हैं, जिससे अर्थव्यवस्था लगभग चरमरा सी रही है। सरकार को हवाई सेवा बहाल करने के साथ-साथ सड़क और बस नेटवर्क को मजबूत करना चाहिए1

"यह शहर कितने प्रबुद्धों के जवानी का गवाह है, जहां उन्होंने कई सपने बुने व संजोये थे। लेकिन आज की उपेक्षा देखकर दिल टूट जाता है। रेलवे, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन,व्यवसाय – हर क्षेत्र में गिरावट है। सरकार को जागना की आवश्यकता है और राउरकेला को उसके हकदार विकास का अवसर देना चाहिए, वरना आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी।"

आगे डॉक्टर राजकुमार यादव ने कहा कि - "यह किसी मंच या संस्था की आवाज नहीं बल्कि राउरकेला के निवासियों की एकजुट आवाज है। यदि इन बातों पर अमल नहीं किया गया, तो आंदोलन को राज्य स्तर पर ले जाया जाएगा, जिसमें धरना, घेराव और अनिश्चितकालीन हड़ताल शामिल हो सकती है। मांगे भले ही दस्तावेज के द्वारा हो लेकिन इसमें शहर के विभिन्न वर्गों – मजदूरों, छात्रों, व्यापारियों,दलितों, महिलाओं, बुद्धिजीवियों, वरिष्ठ नागरिकों व अन्य – के सहभागिता ने इसे और मजबूत बनाया।"

मेयर जतिंदर सिंह भाटिया और विधायक डॉ. अजय गुप्ता ने श्री दरबार साहिब जाने वाली चार रैडियल सड़कों का किया उद्घाटन

अमृतसर, 12 अक्टूबर (साहिल बेरी)

मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने आज विश्वभर में आस्था के प्रतीक सचखंड श्री दरबार साहिब को जाने वाली चार रैडियल सड़कों पर विकास कार्यों का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विधायक डॉ. अजय गुप्ता ने बताया कि लगभग ₹41 करोड़ की लागत से महा सिंह रोड, शेरवाला गेट, घीओ मंडी और रामसर रोड — जो श्री दरबार साहिब तक जाती हैं — को "विरासती स्ट्रीट" का रूप दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि भारत और विदेशों से रोज़ाना एक लाख से अधिक श्रद्धालु इन चार सड़कों से होकर श्री दरबार साहिब में मत्था टेकने आते हैं। चारों रैडियल सड़कों को विरासती रूप देने के बाद यह सड़कों श्रद्धालुओं और सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र बन जाएंगी। सड़कों की चौड़ाई बढ़ाई जाएगी और सभी ओवरहेड बिजली व अन्य तारों को भूमिगत किया जाएगा। साथ ही, सड़कों को सुंदर प्रकाश व्यवस्था से सजाया जाएगा। सड़कों के दोनों ओर की इमारतों पर पंजाब की संस्कृति को दर्शाती कलाकृतियाँ और पेंटिंग्स बनाई जाएंगी।

मेयर भाटिया ने बताया कि श्री दरबार साहिब को जाने वाली ये चार रैडियल सड़कें गुरु तेग

बहादुर साहिब जी के 350वें शहीदी पर्व को समर्पित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि यह परियोजना पिछले दो वर्षों की कड़ी मेहनत का परिणाम है। उन्होंने आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल, पंजाब इंचार्ज मनीष सिसोदिया और मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान का विशेष धन्यवाद किया।

मेयर भाटिया ने कहा कि अरविंद केजरीवाल, मुख्यमंत्री भगवंत मान और प्रशासनिक टीम इस परियोजना के संबंध में लगातार उनके संपर्क में हैं, और अब यह परियोजना क्रियान्वयन के चरण में है। उन्होंने बताया कि यह कार्य डेढ़ वर्ष के भीतर पूरा कर लिया जाएगा।

मेयर ने आगे कहा कि केंद्रीय विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्य तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। सरकार लोगों को मूलभूत सुविधाएं देने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि सड़कों और गलियों के निर्माण कार्यों को भी तेजी से शुरू किया गया है। अधिकांश मुख्य सड़कें पहले ही तैयार की जा चुकी हैं और शेष सड़कों पर काम चल रहा है। विधायक डॉ. गुप्ता ने कहा कि गेट ख़ज़ाना से झब्बल रेलवे फाटक और वहां से इब्बन कला तक सड़क निर्माण का कार्य शीघ्र आरंभ किया जाएगा।

इस अवसर पर मेयर भाटिया ने कहा कि गुरु राम दास जी द्वारा स्थापित शहर अमृतसर की सेवा करने का अवसर उनके लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि श्री दरबार साहिब को जाने वाली चारों सड़कों के उद्घाटन के साथ क्षेत्र के विकास का एक नया अध्याय शुरू हुआ है।

मेयर भाटिया ने कहा कि विधायक डॉ. अजय गुप्ता पूरी लगन से श्री दरबार साहिब के आसपास के क्षेत्रों को सुंदर और सुविधाजनक बनाने में लगे हुए हैं। उन्होंने कहा कि ₹बदलावव₹ के नारे के साथ बनी आम आदमी पार्टी की सरकार पंजाब में शानदार कार्य कर रही है। उन्होंने बताया कि भगतावाला डंप पर पड़े लाखों मीट्रिक टन कचरे को बायो-रीमेडिएशन के ज़रिए साफ़ करने का कार्य आरंभ कर दिया गया है। शहर की सफाई व्यवस्था के लिए एक नई कंपनी को अनुबंधित किया गया है, जो आने वाले 20-25 दिनों में 300 से अधिक वाहनों के साथ सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाएगी।

इस अवसर पर पार्षद जरनैल सिंह ढोड, डिप्टी मेयर अनीता रानी के पुत्र तरुणवीर सिंह कैंडी, पार्षद विक्की दत्ता, आम आदमी पार्टी के ब्लॉक इंचार्ज, मीडिया कोऑर्डिनेटर, संगठन इंचार्ज और सैंकड़ों स्वयंसेवक मौजूद रहे।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी झारखंड ने घाटशिला मे निर्वाचन हेतु की बैठक

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर , मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने कहा है कि घाटशिला में प्रत्येक बूथ मॉडल बूथ के रूप में कार्य करेंगें। मतदाताओं को मतदान केंद्रों पर भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी किए गए गाइडलाइंस को फॉलो करते हुए मतदान हेतु सभी एश्योर्ड मिनिमम फैसिलिटी उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। के. रवि कुमार घाटशिला अनुमंडल सभागार में 45–घाटशिला (अ.ज.जा.) विधानसभा उप चुनाव हेतु वरीय पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर रहे थे । मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि निर्वाचन कार्य में जीरो एरर के साथ कार्य करना है। मतदान हेतु प्रत्येक बिंदुओं पर भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विस्तृत नियमावली बनाए गए है एवं हर कार्य हेतु मॉड्यूल एवं एसओपी बने हुए है, सभी पदाधिकारी अपने कार्यों के संपादन हेतु इन दिशा निर्देशों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित करें।

के रवि कुमार ने कहा कि निर्वाचन कार्य को त्रुटि रहित बनाने हेतु एवं मतदान प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए तैयार दिशा–निर्देशों के अनुरूप ही पदाधिकारियों को ट्रेनिंग देना सुनिश्चित करें। सोशल मीडिया पर आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के मामलों पर विशेष ध्यान रखें। इस हेतु प्रतिनिधियों के सोशल मीडिया के प्रतिनिधियों के साथ

बैठक कर लें एवं उन्हें आदर्श आचार संहिता के क्या करें क्या न करें का बिंदुवार जानकारी उपलब्ध करा दें। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा है कि उप चुनाव में 40% से अधिक दिव्यांग मतदाता अथवा वैसे इच्छुक मतदाता जिनकी उम्र 85 वर्ष से अधिक है उनके द्वारा ई क्लाईट पर जाकर सक्षम ऐप के माध्यम से अथवा बीएलओ के माध्यम से उनकी इच्छा जानकर घर से मतदान की व्यवस्था करें। वैसे दिव्यांग एवं वरिष्ठ मतदाता जो मतदान हेतु मतदान केंद्र जाना चाहते है उनके आवागमन के लिए वाहन, व्हीलचेयर, रैंप, वोलेंटियर एवं सहायक की व्यवस्था अवश्य कर लें।

के. रवि कुमार ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग ने मतदाताओं की सुविधा हेतु ईवीएम पर लगने वाले मत पत्र में बदलाव किए है इसके तहत अब ईवीएम पर उम्मीदवारों के रंगीन फोटो के साथ–साथ उनके नाम और क्रम संख्या बड़े अक्षरों में अंकित होंगे । इस हेतु भारत निर्वाचन आयोग के गाइडलाइन के अनुरूप ही कार्य करें। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि स्वीप कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मतदाताओं को शिक्षित एवं प्रेरित करते हुए मतदान प्रतिशत को बढ़ाना है। घाटशिला विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत पूर्व के चुनाव में कम मतदान प्रतिशत वाले मतदान केंद्रों को चिन्हित करते हुए विशेष स्वीप कार्यक्रम चलाए एवं मतदाताओं को जागरुक करने का कार्य करें।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने उप निर्वाचन हेतु सभी कोषांगों के गठन, इलेक्शन पर्सनल की ट्रेनिंग, एश्योर्ड मिनिमम फैसिलिटी, वेबकास्टिंग, लॉ एंड ऑर्डर, स्वीप एक्टिविटी, स्ट्रांग रूम, आईटी एप्लिकेशन, ई क्लेन्ट , समेत विभिन्न विषयों पर बिंदुवार समीक्षा की। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने लॉ एंड ऑर्डर की समीक्षा करते हुए कहा कि सभी चेकपोस्टों की निगरानी सख्ती से करें। घाटशिला विधानसभा के सीमावर्ती क्षेत्रों पर विशेष ध्यान रखते हुए अवैध मादक पदार्थों का आवागमन, संदिग्ध पैसे की लेनदेन, क्रिमिनल एक्टिविटी पर कड़ाई से कार्रवाई करें।

इस अवसर आईजी ऑपरेशन झारखंड माइकल राज, पूर्वी सिंहभूम जिले के जिला निर्वाचन पदाधिकारी–सह–उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी, डीआईजी धनंजय कुमार, डीआईजी पुलिस मुख्यालय अश्विन कुमार, डीआईजी कोल्हान अनुरंजन किस्पोट्टा, एसएसपी पूर्वी सिंहभूम पीयूष पांडेय, ग्रामीण एसपी ऋषभ गर्ग, संयुक्त मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी सुबोध कुमार, श्री देव दास दत्ता, सहित घाटशिला विधानसभा क्षेत्र के ईआरओ,एईआरओ, उप निर्वाचन आपदाधिकारी पूर्वी सिंहभूम सहित निर्वाचन कार्यालय एवं जिला प्रशासन के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बॉर्डरमैन मैराथन- 2026: सीमांत एकता और सम्मान का उत्सव

अमृतसर 12 अक्टूबर (साहिल बेरी)

सीमा सुरक्षा बल (BSF) द्वारा आयोजित होने वाली "बॉर्डरमैन मैराथन" का पाँचवाँ संस्करण 22 फरवरी 2026 को ऐतिहासिक नगर अमृतसर में आयोजित किया जाएगा। "Hand in Hand With Border Population" थीम के साथ यह आयोजन राष्ट्रीय एकता, स्वास्थ्य और सीमावर्ती नागरिकों के साथ सुरक्षा बलों के अटूट संबंध का प्रतीक है।

2. अटारी दर्शक दीर्घा से इस आयोजन की औपचारिक घोषणा करते हुए सीमा सुरक्षा बल, पंजाब के महानिरीक्षक डॉ० अतुल फुलझेले, भा०पु०से० ने कहा कि यह महोत्सव न केवल खेल भावना का, बल्कि भारत की सीमाओं की सुरक्षा करने वाले बलों और उसके नागरिकों के बीच परस्पर सहयोग का जीवंत उदाहरण है। इस वर्ष इस आयोजन में 6,000 से अधिक प्रतिभागियों के शामिल होने की संभावना है, जिनमें लगभग 2,000 युवा सीमावर्ती क्षेत्र से हिस्सा लेंगे।

3. उन्होंने बताया कि "बॉर्डरमैन मैराथन" केवल एक दौड़ नहीं, बल्कि भारत के समर्पित सुरक्षा बलों और नागरिकों के बीच एकजुटता का प्रतीक है। ऑपरेशन सिन्दूर के दौरान पंजाब के बहादुर सीमावर्ती नागरिकों द्वारा सैन्य बलों को

कंधे से कंधा मिलाकर दिया गया सहयोग और हालिया बाढ़ के समय बचाव कार्यों में निभाई गई सक्रिय भूमिका इस एकता की मिसाल हैं।

4. दौड़ की श्रेणियाँ एवं मार्ग:

अ) फुल मैराथन (42.5 किमी) – पुरुष एवं महिला दोनों के लिए

मार्ग: गोल्डन गेट से आरंभ होकर जेसीपी अटारी पर समाप्त।

ब) हाफ मैराथन (21 किमी) – पुरुष एवं महिला दोनों के लिए

मार्ग: इंडिया गेट से आरंभ होकर जेसीपी अटारी पर समाप्त।

स) 10 किमी रन – पुरुष एवं महिला दोनों के लिए

मार्ग: भारतीय सीमा के अंतिम टोल प्लाज़ा से आरंभ होकर जेसीपी अटारी पर संपन्न।

5. विशेष गौरव का क्षण:

इस संस्करण का पहला रजिस्ट्रेशन विश्वविख्यात क्रिकेटर श्री अभिषेक शर्मा द्वारा किया गया है। व्यस्त अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों के बावजूद उनकी यह भागीदारी देश के युवाओं और सीमांत नागरिकों के लिए एक नई प्रेरणा है।

6. सीमा सुरक्षा बल ने देशवासियों से इस ऐतिहासिक दौड़ में भाग लेने का आह्वान किया है, ताकि राष्ट्रीय एकता, फिटनेस और सीमांत सहयोग का संदेश पंजाब की अंतरराष्ट्रीय सीमा से देश के प्रत्येक कोने तक पहुँच सके।

झारखंड पथ निर्माण सचिव को सशरीर हाई कोर्ट में उपस्थित होने का निर्देश

चर्चित है यह विभाग जहां चहेते ही मालामाल बाकी सब कंगाल !!

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची। झारखंड पथ निर्माण विभाग इस सचिव के कार्यकाल को अनियमितता भरा कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । जहां कुछ चहेते, चुनिंदे अभियंता ही कुछ ठेकेदारों के साथ मलाई मार है शेष यातो कोर्ट से गुहार लगा रहे हैं तो कुछ अपनी फूटी किस्मत पर रोना रोना रहे हैं । आज कोर्ट ने एक आदेश पर क्रियान्वयन न होने से अवमानना नोटिस देकर सशरीर तलब किया है । कहीं कहीं कुछ खास इंजिनियरों को तीन सौ करोड़ तक काम देखने को मिला हुआ है , भला यह संभव है ? जिनकी चांदी कट रही है , वाकी तनख्वाह अधिकांश समय खाली बैठकर तनख्वाह ले रहे हैं । यह मामला भी उच्चस्तरीय जांच एवं कारवाई मांग रहा है ।

इसी क्रम में आज झारखंड हाई कोर्ट के जस्टिस दीपक रोशन की अदालत में अवमानना से जुड़े एक मामले में आदेश का अनुपालन नहीं किए जाने पर पथ निर्माण विभाग के सचिव को 31 अक्टूबर को कोर्ट में सशरीर उपस्थित होने का निर्देश दिया है।

अदालत ने जूनियर इंजीनियर (जेई) से असिस्टेंट इंजीनियर पद पर प्रोन्नति से संबंधित मामले में कोर्ट के आदेश का पालन नहीं करने पर उक्त

निर्देश दिया है। इस संबंध में विक्रम मंडल एवं अन्य की ओर से अवमानना याचिका दाखिल की गई है।

प्रार्थियों की ओर से मूल याचिका पर सुनवाई करते हुए हाई कोर्ट की एकलपीठ ने विभाग को आदेश दिया था कि उन्हें उसी तिथि से असिस्टेंट इंजीनियर पद पर प्रोन्नत किया जाए, जिस तिथि से वरीयता सूची में उनसे कनिष्ठ कर्मियों को पदोन्नति दी गई थी।

उन्हें सभी वित्तीय लाभ देने का निर्देश भी दिया गया था। अदालत ने विभाग के 18 सितंबर 2023 को पारित उस आदेश को भी निरस्त कर दिया था, जिसमें संपत्ति विवरणी और सेवा अभिलेख नहीं मिलने का हवाला देते हुए प्रार्थियों की प्रोन्नति अस्वीकृत की गई थी।

सरकार ने एकलपीठ के इस आदेश के खिलाफ हाई कोर्ट की खंडपीठ में अपील दाखिल की थी। अपील में सरकार की ओर से सुनवाई के लिए समय मांगे जाने पर खंडपीठ ने अगली सुनवाई की तिथि पांच जनवरी 2026 निर्धारित की थी।

इस बीच एकलपीठ में अवमानना याचिका की सुनवाई के दौरान जस्टिस दीपक रोशन ने स्पष्ट किया था कि सरकार या तो एकलपीठ के आदेश पर स्थगन आदेश प्राप्त करे या आदेश का पालन करे।

इस स्थिति में आदेश के अनुपालन न होने पर जस्टिस दीपक रोशन की अदालत ने पथ निर्माण सचिव को 31 अक्टूबर को कोर्ट में हाजिर होने का निर्देश दिया है।

प्रार्थियों का कहना है कि पथ निर्माण विभाग के 13 नवंबर 2019 को जारी वरीयता सूची में वह अपने जूनियर से ऊपर थे, फिर भी उन्हें प्रोन्नति नहीं दी गई। झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) की विभागीय पदोन्नति समिति की 14 मार्च 2023 की बैठक में उनके जूनियर को पदोन्नति की अनुशंसा की गई।

इसके आधार पर कई जूनियर इंजीनियरों को असिस्टेंट इंजीनियर बनाया गया। विभाग ने प्रार्थियों के विरुद्ध संपत्ति विवरणी, सर्विस बुक और वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट (सीआर) अपडेट न होने का हवाला देते हुए पांच अप्रैल 2023 को उनके प्रमोशन आवेदन को खारिज कर दिया।

श्री बालाजी मन्दिर
पो. - सालासर 331506
जिला - चूरू (राजस्थान)
फ: 01568- 252049 252749
क्रमांक- दिनांक 10/10/2025

श्री बालाजी मन्दिर,सालासर में दीपावली पूजन दिनांक 20 अक्टूबर 2025 वार सोमवार को होगा और अन्नकुट प्रसाद 22 अक्टूबर 2025 वार बुधवार को लगेगा।

आज्ञा से
श्री बालाजी मन्दिर कमेटी,
सालासर चूरू(राज.)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023